संपादक-मंडल

वासुदेवशरण अग्रवाल
ार्य कृष्णानंद (संपादक)

सूचना

ा वार्षिक विवरण पत्रिका के इस अंक के साथ सभासदों ... ों म पहुँचना चाहिए था ; किंतु खेद है, कागज न मिलने से वह अभी प्रकाशित नहीं हो सका। कागज की प्राप्ति के लिये निरंतर उद्योग किया जा रहा है। वार्षिक विवरण छपते ही सभासदों की सेवा में पहुँचेगा। आशा है, इस विवशता के लिये सभासद हमें कृपया क्षमा करेंगे।

प्रधान मंत्री

नवीन पुस्तकें

संस्कृत साहित्य का इतिहास

प्रथम भाग—इस ग्रंथ में काव्यशास्त्र के सुप्रसिद्ध रीति-ग्रंथों एवं उनके प्रणेताओं के परिचय तथा काल-निर्णय के संबंध में ऐतिहासिक निरूपण किया गया है। पृष्ठसंख्या ३२४। सजिल्द प्रति का मूल्य सवा रुपया मात्र।

द्वितीय भाग—इसमें काव्यग्रंथों के विषय, काव्य के प्रयोजन और हेतु एवं काव्य के लक्षण आदि पर विभिन्न आचार्यों के मतों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और काव्य के पंच सिद्धांत रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि का स्पष्टीकरण तथा इनके पाँचों संप्रदायों का आलोचनात्मक विवेचन कर उनका रहस्योद्घाटन किया गया है। पृष्ठसंख्या २१४, सजिल्द पुस्तक का दाम केवल सवा रुपया।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

वर्ष ४७-अंक १ [नवीन संस्करण] वैशाख १९९९

मानस-पाठभेद

[लेखक—मानस-मराल श्री शंभुनारायण चौबे, बी० ए०, एल-एल्० बी०]

रामचरितमानस का मूल पाठ, जिस रूप में गोस्वामी जी के कर-कमलों से संपन्न हुआ था, निर्धारित करना बड़े महत्त्व का कार्य है। कितने ही प्रकाशित संस्करणों तथा हस्तलिखित ग्रंथों से इस कार्य में सहायता ली जा सकती है। परंतु सभी हस्तलिखित ग्रंथों का पर्यवेक्षण करना एक असंभव सी बात है और जिस किसी हस्तलिखित ग्रंथ के पीछे पड़ना श्रेयस्कर भी नहीं।

रामचरितमानस की प्रतिलिपि तो गोस्वामी जी के जीवनकाल ही में प्रारंभ हो गई थी और जैसे जैसे इस 'चारु चिंतामनि' का जौहर खुलता गया, लोग इसे अपनाते गए। धन्य थी वह शुभ घड़ी जब कि गोस्वामी जी ने अपनी चिर पुण्य लेखनी को हाथ में लेकर जन्म-जन्मांतर के पुण्य-प्रताप की कमाई जगत्-कल्याण के निमित्त शब्दब्रह्म को समर्पित की थी।

रामचरितमानस के शुद्ध स्वरूप की झाँकी जैसी पंडित रामगुलाम द्विवेदी[1] ने की, जैसी उनके चेला चोपईराम ने की, बंदन पाठक ने की,

---

१—पं० रामगुलाम द्विवेदी, मुहल्ला गनेशगंज, शहर मिर्जापुर के रहनेवाले, रीवाँ नरेश महाराज रघुराजसिंह के समकालीन, मानस के अनन्य प्रेमी तथा हनुमान्‌जी के सच्चे भक्त हो गए हैं। ये दिन भर फेरीदारी करते थे और रात्रि में नित्य नियमपूर्वक लोहदी नदी पार करके भी हनुमानजी के दर्शनों को जाया करते थे। कहते हैं कि एक दिन भरे भादों की घनी अँधेरी रात में जब कि लोहदी की पहाड़ी नदी खूब बाढ़ पर थी—अब तो पुल भी बन गया है—ज्योंही पंडित जी ने पार करने के लिये कछनी काछी कि स्वयं हनुमान्‌जी ने दर्शन देकर पंडितजी से कहा कि 'अब इतना कष्ट न किया करना, कोई प्रतिमा रखकर उसी में मुझे देखा करना'। तभी से पंडितजी एक छोटे से अनगढ़ पाषाण की प्रतिमा के सामने बैठकर पढ़ते, रोते, हँसते थे। रामायण की वे बड़ी सुंदर कथा कहते थे, पर कथा कहने का अभिमान उन्हें छू तक न गया था। वे कहते थे कि गोस्वामी जी ने, न मालूम क्या समझ कर, किस भाव से प्रेरित होकर, इन चौपाइयों को लिखा था और इनका अर्थ करने में मेरे मुँह से क्या निकल गया उसका ध्यान न करके गोस्वामी जी के हृदय तक पहुँचना चाहिए।

यह एक दुःख और लज्जा की बात है कि स्मृति-स्वरूप छोड़ी गई हनुमान् जी की प्रतिमा तथा पंडित जी का खड़ाऊँ दर दर मारे फिरने के बाद उनके मकान के एक कोने में रख दी गई है। पंडित जी के बाद जिन जिन लोगों ने उनके मकान को नीलाम लिया या खरीदा उनका कारबार नष्ट हो गया अथवा उनपर कोई अन्य आपत्ति आई और आज दिन रामचरितमानस के नाते जो स्थान पूजा-गृह होना चाहिए था वह 'भुतहा' कहा जाता है।

इनका निधन संवत् १८८८ वि० (१८३१ ई०) में हुआ।

इंडियन ऐन्टिक्वेरी, भा० २२—पृ० १२३ तथा १२८ के फुटनोट।

लाला छक्कनलाल[1] ने की और पिछले काँटे पं० रामकुमार मिश्र ने की वैसी और किसके भाग्य में लिखी है। उन दिनों छापे की सुविधा न थी, प्रेस-प्रकाशक इतने सुलभ न थे, कागज-स्याही कम थी, अन्यथा ये महात्मा-गण गोस्वामी जी का पाठ बाँधकर रख गए होते और आज दिन इतनी धाँधली न दीख पड़ती।

गोस्वामी जी की वाणी का तथ्य जितना उन्हीं के ग्रंथों द्वारा समझा जा सकता है उतना और किसी प्रकार से नहीं। किसी भी शब्द, वाक्य, या भाव का गोस्वामी जी ने ऐकांतिक प्रयोग नहीं किया है। किसी न किसी दूसरे स्थान से उनकी पुष्टि, उनका समर्थन और स्पष्टीकरण अवश्य होता है। यदि ध्यानपूर्वक मिलान किया जाय तो गोस्वामी तुलसीदासजी ने सभी प्रकरणों का उपक्रम और उपसंहार इतनी सुंदरता से किया है, एक प्रकार के वस्तु-वर्णन में भिन्न भिन्न स्थलों पर शब्दों की कुछ ऐसी समानता रख दी है कि जिन पर दृष्टि न रखने से लोग भटक जाते हैं। कहीं कहीं तो एक ग्रंथ का भाव दूसरे ग्रंथ की सहायता से अधिक स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिये नीचे रामचरितमानस के कुछ स्थल दिए जाते हैं जहाँ

१—लाला छक्कनलाल, पंडित रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य थे। इन्होंने पंडित जी की पोथी पर से एक प्रति लिखी थी। ये काशिराज महाराज ईश्वरी-नारायण सिंह के नवरत्नों में थे और रामनगर में वृद्धावस्था बिताते थे। पंडित रामकुमार मिश्र गुरु मानकर इनकी बड़ी सेवा करते थे। बुढ़ौती और अफीम के कारण पिनकते हुए गुरु के सामने हुक्का चिलम भरकर पंडित जी जोहते रहते थे। वृद्ध गुरु भी शिष्य पर विशेष कृपा रखते थे और कहते थे "क्या करूँ रामकुमार, तुम देर में मिले, सब तो बतलाने की सामर्थ्य नहीं है, हाँ रामचरितमानस की कुछ झलक दिखलाए जाता हूँ।" गुरु के आशीर्वाद से पंडित रामकुमार जी मिश्र अपने समय के कथावाचकों के सिरमौर हुए। उस एक झलक ने पंडित जी के हृदय को ऐसा प्रकाशमान बना दिया जिससे आज तक कथावाचकों का समुदाय प्रभावित है। आजकल रामायण की कथा में जहाँ कहीं वास्तविक चमत्कार का निदर्शन हो उसे पंडित रामकुमार जी की देन समझनी चाहिए।

मिलान न करने के कारण लोगों को धोखा हुआ है और पाठ में गड़-बड़ी की गई है।

(१) सकइ उठाइ सरासुर मेरू। सोउ तेहि सभा पराउ करि फेरू।

१।२९१।७

सर + असुर = बाणासुर—इस अर्थ को न समझ कर बहुत लोगों ने 'सुरासुर' पाठ कर दिया है। यदि निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान दिया गया होता तो 'सरासुर' ऐसा सुंदर आलंकारिक शब्द न बदला जाता।

रावन बान महा भट भारे। देखि सरासन गवहिं सिधारे।

जिनके कछु बिचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं।

१।२४९।२

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।

१।२५५।३

(२) ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई।

२।१५१।५

'ओर निबाहेहु' का अर्थ होता है अंत तक निबाहना। इसका पाठ लोगों ने "और निबाहेहु" या 'अवर निबाहेहु' बदल दिया है। निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान न देने से यह भूल हुई है।

सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नात यह ओर निबाहू।

२।२३।६

प्रनतपाल पालहिं सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू।

२।११३।४

पद-पद्म गरीब निवाज के।

देखिहौं जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाज के।

गई बहोरि ओर निरबाहक साजक बिगरे साज के॥

गीतावली (सुंदर कांड) पद सं० २६

मों पै तो न कछू ह्वै आई।

ओर निबाहि भली बिधि भायप चल्यो लषन सो भाई॥

गीतावली (लंका कांड) पद सं० ३

सुमिरत श्री रघुबीर की बाहैं।

होत सुगम भव उदधि अगम अति, कोउ लाँघत, कोउ उतरत थाहैं ॥

... ...

सरनागत आरत प्रनतनि को दै दै अभय पद ओर निबाहैं।

करि आईं, करिहैं करती हैं तुलसिदास दासनि पर छाहैं ॥

गी० (उत्तर कांड) पद सं० १३

दुखित देखि संतन कह्यो सोचै जनि मन माहूँ।

तोसे पसु पाँवर पातकी परिहरे न सरन गए रघुबर ओर निबाहू।

विनयपत्रिका पद सँ० २७५

(३) एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु।

६।२३२।१

सभी बाजारू प्रतियों में 'एहि बिधि' पाठ मिलता है जिसका कोई युक्तिसंगत अर्थ ही नहीं बैठता जो पूर्वापर के अनुरूप हो।

'धरहु कपिहिं धरि मारहु सुनि अंगद मुसकाइ' के ठीक आगे की चौपाई में रावण कहता है कि इसे तो अभी ही वध डालो फिर चारों तरफ जाकर जहाँ जहाँ बंदर भालु पाओ खाते जाओ। अतः 'बधि' पाठ ही शुद्ध तथा प्राचीन है।

(४) 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर।'

७।७५

सैसव चरित = बाललीला—इस अर्थ को न समझकर प्रतियों में 'अतिसय सब' या 'अतिसय सुखद' पाठ बिगाड़ा गया है। जब पाठ ही भ्रष्ट है तो अर्थ कहाँ से ठीक होगा।

यहाँ पर भुसुंडि-गरुड़-संवाद में लोग अपनी अपनी बीती सुना रहे हैं। गरुड़ ने कहा कि भाई जब श्री रामचंद्र जी नागपाश में बँध गए तब उन्हें मुक्त करने के लिये नारद जी ने मुझे भेजा था। मैंने जाकर जो देखा उसके कारण मुझे मोह हो गया। नाग-पाश में बँधने तक तो कोई बात न थी। पर उस बंधन में पड़कर महाराज रामचंद्र जी को विकल देखकर मुझे मोह हुआ जिसकी वृद्धि इस बात से और हुई कि मैंने उन्हें मुक्त किया—

मोहिं भएउ अति मोह प्रभु बंधन रन महँ निरखि ।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन ॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । भएउ हृदय मम संसय भारी ॥७।६८

काग भुसुंडी जी बाललीला के उपासक हैं ।

जब जब राम मनुज तन धरहीं । भगत हेतु लीला बहु करहीं ।
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ । बाल चरित बिलोकि हरषाऊँ ।
जन्म महोत्सव देखौं जाई । बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई ।
इष्ट देव मम बालक रामा । सोभा बपुष कोटि सत कामा ।
निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करौं उरगारी ।
लघु बायस बपु धरि हरि संगा । देखौं बालचरित बहु रंगा ।

... ...

रूपरासि नृप-अजिर-बिहारी । नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ।
मोहि सन करहिं बिबिध बिधि क्रीड़ा । बरनत चरित होति अति ब्रीड़ा ।
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं । चलौं भागि तब पूप देखावहिं ।

आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
जाउँ समीप गहन पद फिर फिरि चितै पराहिं ॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भएउ मोहिं मोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७॥

इसी 'सिसु-लीला' का संकेत करके कहा गया है कि 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर' । अर्थात् हे गरुड़ जी, जिस प्रकार आपको अति नर अनुसारी चरित्र देखकर मोह हुआ उसी प्रकार मुझे अति सैसव चरित्र देखकर मोह हुआ । इन प्रकरणों में 'अति' और 'चरित' शब्द मारके के हैं ।

(५) सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह समीर ॥७।८१

'समीर' पाठ लोगों ने बदल कर 'सरीर' कर दिया है । प्रेरणा करने का गुण समीर का है, यथा—

पुनि बहु बिधि गलानि जिय मानी । अब जग जाइ भजौं चक्रपानी
ऐसेहि करि बिचार चुप साधी । प्रबल पवन प्रेरेउ अपराधी ।

प्रेरेउ जो परम प्रचंड मारुत कष्ट नाना तें सह्यो।
सो ज्ञान ध्यान बिराग अनुभव जातना पातक दह्यो।

विनयपत्रिका पद १३६ (५)

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि वास्तविक अर्थ तथा भाव बोध के लिये शुद्ध पाठ कितना आवश्यक है। रामचरितमानस के पाठ-सुधार का बुनियादी काम पं० रामगुलाम द्विवेदी ने प्रारंभ किया था। इनके पास मानस के इतर ग्रंथ भी शुद्ध रूप में वर्तमान थे। गोस्वामी जी के ग्रंथों के संबंध में इनका एक प्रसिद्ध कवित्त है।

रामललानहछू[१] बिराग[२] संदीपनी हूँ बरवै[३] बनाय बिरमाई मति साँई की।
पारबती[४] जानकी[५] के मंगल ललित गाय रम्य राम[६] अज्ञा रची कामधेनु नाईं की॥
दोहा[७] औ कबित्त[८] गीत[९] बंध कृष्ण[१०] कथा कही रामायन[११] बिनय[१२] माँह बात सब ठाईं की।
जग में सोहानी जगदीसहू के मनमानी संत सुखदानी बानी तुलसी गोसाईं की॥

द्विवेदी जी के दो मुख्य शिष्य हुए—चोपईराम कसेरा और लाला छक्कनलाल कायस्थ। लालाजी ने रामचरितमानस की एक प्रति लिखी थी और बहुत से लोगों ने उसी पोथी की नकल की थी।

आगे चलकर काशी के बाबा रघुनाथदास जी ने मानस के पाठ को शुद्ध रखने का काम किया था। इनकी प्रति का पाठ लेकर काशी से छः प्रतियाँ भिन्न भिन्न स्थानों से विक्रमी सं० १९१४, १९२२, १९२६, १९३३, १९३४, १९४० में प्रकाशित हुई थीं। इस अंतिम छपी पोथी ने जो आकार ग्रहण किया उसी के परिष्कृत रूप में श्री भागवतदास क्षत्री ने सं० १९४२ में अपना संस्करण छपवाया था। गोस्वामीजी के ग्रंथों के उद्धार में भागवतदासजी का प्रयास सर्वोपरि है। इन्होंने सं० १९४३ में अन्य ग्यारह ग्रंथ भी सरस्वती प्रेस, काशी से छपवाए थे। इन पोथियों का पाठ बहुत शुद्ध है। इनका उपयोग ग्रियर्सन साहब ने इंडियन एंटीक्वेरी में अपनी लेखमाला लिखते समय तथा बाँकीपुर से रामचरितमानस निकालते समय किया था।

रामचरितमानस का पाठ-संशोधन केवल कुछ शब्दों के बदल देने से अथवा उलट-फेर कर देने से ही नहीं होता; क्योंकि रामचरितमानस जितना ही साधारण और सुलभ ग्रंथ है उतना ही असाधारण और अथाह भी है। इसकी अर्धाली के प्रत्येक अंश अपितु प्रत्येक शब्द को ग्रहण करने के पूर्व रुकना चाहिए और खूब आद्यंत विचार करना चाहिए। किसी भक्त की वाणी को 'बिना जाने बिगाड़ना' उचित नहीं। कहीं कहीं के पाठ, भारतवर्ष के इतिहास के वर्तमान रूप की नाईं इतने भ्रमपूर्ण हैं और उनका कुसंस्कार ऐसा दृढ़ है कि शुद्ध स्वरूप के ग्रहण करने में विज्ञ लोग भी आनाकानी करते हैं। ऐसी दशा में प्रामाणिक प्रतियों के पाठ निर्देश करने की दृष्टि से यह लेख लिखा जा रहा है।

प्रस्तुत लेख में मुख्य पाठभेद का निर्देश भागवतदास, वि० सं० १७२१,[1] सं० १७६२, छक्कनलाल, रघुनाथदास, बंदन पाठक, काशिराज, कोदोराम की प्रतियों से किया गया है। बाल कांड में श्रावणकुंज की प्रति (सं० १६६१) तथा अयोध्या कांड में राजापुर की प्रति का पाठ दिया गया है। रामचरित-मानस के पाठ-शोध के लिये इन दस प्रतियों का पाठ आवश्यक और पर्याप्त है। लेख में पहले पाठभेद-वाली पंक्ति अपने संकेतस्थल के सहित—अर्थात् किस कांड के, कौन से दोहे के आगे की कौन सी पंक्ति—दी गई है, जिसमें पाठभेद के शब्द मोटे टाइप में हैं और उनके सामने प्रमाण-भूत मानी गई उपर्युक्त प्रतियों के पाठभेद दिए गए हैं। संकेत-सुविधा के विचार से प्रतियों के लिये संख्या निर्धारित कर दी गई है। पाठपंक्ति अक्षरशः भागवतदास के प्रथम संस्करण (सं० १९४२) से ली गई है।

१—१७२१ की प्रति का अयोध्याकांड कहीं अन्यत्र चला गया है इसलिये अयोध्याकांड के पाठभेद में इस प्रति का पाठभेद नहीं दिया गया है। पर अन्य कांडों में भागवतदास की प्रति से सं० १७२१ की प्रति इतनी मिलती जुलती है कि भागवतदास का पाठ १७२१ की प्रति का पाठ ही समझा जा सकता है।

पाठभेद के मुख्य कारण जो समझ में आते हैं वे इस प्रकार हैं—

(१) लेखक की असावधानता तथा लेख प्रमाद। यथा—१।१७; १।३१।१२; २।१०५।८; ७।१३; ७।२१।५; ७।२५।१; ७।७०।७।

(२) सावधान लेखक भी कहीं कहीं अशुद्ध लिखने के बाद अपने लेख में काट-कूट न करने के निमित्त—यह जानते हुए कि गलत लिख गया है—उसका सुधार नहीं करता; और यदि लेखक का अक्षर सुंदर हुआ—जैसा प्राचीन काल में प्राय: होता ही था—तो यह प्रलोभन और भी जोर पकड़ता था। कहीं पर इस भूल का सुधार, अर्थ में कोई विपर्यय न होने की भावना से भी नहीं होता था।

(३) गोस्वामी जी के शब्दों का अर्थ न समझ कर पाठ-परिवर्तन। यथा—२।१२५।५; ७।८०।६; ७।८६।७।

(४) गोस्वामी जी की वाणी का भाव न समझ कर अपनी बुद्धि से पाठ-परिवर्तन। यथा—१।२९५।३; १।३४४।३; ३।२१।५; ७।७५।

(५) गोस्वामी जी के प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का तद्भव तथा प्रांतीय रूप देकर पाठ परिवर्तन। यथा—१।१० (मान्य); ३।१०।१० (कुमारी); ३।१०।११ (कुमार); ३।३२।५ (सत्य); ५।५४ (विकटास्य); ४।२०।३, ६।७।६, ७।४५।४ (वस्य); ७।५२।६ (निजात्मक); ७।४७।६ (उपरोहित्य); ७।६९ (गोप्यमपि)।

इसी प्रकार तद्भव तथा प्रांतीय शब्दों के स्थान पर पंडित लोगों ने संस्कृत रूप कर दिए हैं।

(६) प्राचीन लिपि की अनभिज्ञता। यथा—१।१७; १।३१।१२; ३।४ का२४।

(७) चौपाइयों में जान लाने के लिये तथा अर्थ में चमत्कार दिखलाने लिये कथकड़ों की अपनी युक्ति। यथा—१।११८।२; १।२७४।६; १।२८०।५; ७।९७।१।

(८) शब्दालंकार गढ़ना एवं प्रयुक्त अलंकारों को न समझना। यथा—१।२६।७; १।१७८।८; १।२७३।२; ३।६का८; ३।२१।११; ६।७३।५; ६।७३।७; ७।५१।५; ७।९८।

(९) चौपाइयों की यति-गति ठीक करने की बुद्धि। यथा—१।७७।८; ३।१।८; ३।८; ३।११८; ७।२८; ७।११६।१।

(१०) अर्थ को स्पष्ट करने की इच्छा।

(११) शब्दों के उलट-फेर मात्र। यथा—१।१९।८; १।३८।६; १।४८।७; १।५१।८; १।६२।६; १।६७।५; १।७३।३; १।७७।८; १।२१२।२; १।२३७।७; १।२६०।६; १।२६४।७; ३।२१।१०; ६।७।८; ६।४१; ६।९३; ६।९९।३; ७।१।५; ७।२२; ७।२८।५; ७।७२।४; ७।७६।९; ७।८१; ७।११२।३; ७।११७।१०।

प्रतियों का संकेत

१=सं० १७२१ वि० की प्रति

२=सं०१७६२ वि० की प्रति

३=छक्कनलाल की प्रति

४=रघुनाथदास की प्रति

५=बंदन पाठक की प्रति

६=सं० १७०४ वि० की काशिराज वाली प्रति

७=कोदवराम की प्रति

८= { बाल कांड में—श्रावण कुंज की प्रति
अयोध्या कांड में—राजापुर की प्रति }

भा=भागवतदास की प्रति

जो पाठ ( ) के भीतर हैं वे किन्हीं फुटकर प्रतियों के हैं जो प्रामाणिक नहीं हैं।

जो अंक ○ के भीतर हैं वे उस अंकवाली प्रति के विलक्षण पाठ का निर्देश करते हैं जो अन्य प्रामाणिक प्रतियों में नहीं हैं।

बाल कांड

१।० जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन। ...	१,२,३,४,५,६,७–जो, सिधि; ८–जेहि; (सिध)
१।० बंदौं गुर पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–हरि; (हर)
१।१।१ गुरु पद मृदु मंजुल रज अंजन।...	१,२–पद मृदु मंजुल रज; ३,४,५,६,७,८–पद रज मृदु मंजुल
१।१।५ साधु चरित सुभ चरित कपासू। ...	१,२,३,४,५,८–चरित; ६,७–सरिस
१।१।८ सरसै ब्रह्म बिचार प्रचारा। ...	१,२,५–सरसै; ३,४,६,७,८–सरसइ; (सरस्वति)
१।१।११ तीरथ साज समाज सुकर्मा। ...	१,२,३,६–साज; ४,५,७,८–राज
१।२।६ पारस परस कुधातु सुहाई। ...	१,२,४,५,६,८–परस; ३,७–परसि
१।२।१२ साक बनिक मनि गन गुन जैसे।	१,२,३,४,५,६,७–गन गुन; ८–गुन गन
१।३।१ जे बिनु काज दाहिनेहु बाँए। ...	१,२,३,४,५,७–दाहिनेहु; ६–दाहिनहु; ८–दाहिने
१।३।८ सहस बदन बरनै पर दोसा। ...	१,२,३,४,५–बरनै; ६,७–बरनइ; ८–बरनहि
१।४ आनि पानि जुग जोरि जन, बिनती करइ सप्रीति। ...	१,२,३,४,५,६,७–जानि; ८–जानु
१।४।२ होहिं निरामिष कबहिं कि कागा।	१,२,३–कबहिं; ४,५,६,८–कबहूँ
१।४।३ बंदौं संत असज्जन चरना। ...	१,२,३,४,५,८–असज्जन; ६,७–असंतन
१।४।५ उपजहिं एक संग जग माहीं।...	१,२,३,४,५,६,७,८–जग;(जल)

१।५।८ काशी मग सुरसरि कबिनासा, मरु मालव महिदेव गवासा। ...	१,३,४,५,६—कथिनासा; २—कर्मनासा; ७,८—क्रमनासा; १,२,३,४,५,७—मालव; ६,८—मारव
१।६ संत हंस गुन ग्रहहिँ पय, परिहरि बारि बिकार। ...	१,२,३,६—ग्रहहिं; ४,५, ,८ गहहिं
१।६।३ सो सुधारि हरिजन जिमि लेही"। ...	१,२,३,४,५,६,७,८—जन;तन तन
१।७ ससि पोषक सोषक समुझि, ...	१,२,३,५,६,७—पोषक सोषक; ४,५,८—सोषक पोषक
१।७।१२ जे पर भनिति सुनत हरषाही"। ...	१,२,३,४,५,६,७—भनि ; ८—भनित
१।७।१३ जग बहु नर सरिसर सम भाई। ...	१,२,४,५—सरि सर; ३,६,७,८—सरसरि; (सुरसरि)
१।७।१४ सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। ...	१,३,४,५,६—सकृत; ७—सुकृत; २—सकृति
१।८ पैहहिँ सुख सुनि सुजन जन, ...	१,२,३,४,५—जन; ६,७,८—सब
१।८।१ हंसहि बक गादुर चातकही। ...	१,२,३,४,६,८—गादुर; ५,७—दादुर
१।८।८ कबि न होउँ नहिँ चतुर प्रबीनू। ...	१,२,३,४,५,७—चतुर; ६,८—बचन
१।८।११ सत्य कहौं लिखि कागद् कोरे। ...	४,५,७—कागद; १,२,३,६,८—कागर
१।१० गिरा ग्राम्य सिय राम जस, ...	१,२,३,६,७,८—ग्राम्य; ४,५—ग्राम
१।१०।७ सिर धुनि गिरा लगति पछिताना।...	१,२,३,४,५,७—लगति; ६,८—लगत
१।१०।८ स्वाती सारद् कहहिँ सुजाना। ...	१,२,३,४,५,६,७—स्वाती सारद; ८—स्वाति सारदा
१।११।४ धिग धरमध्वज धंधक धोरी। ...	१,२,३,४,५,७—में भा० का पाठ है; ८-धीग; ६—धीग धरमध्वज धंधरच
१।११।६ थोरेहि महँ जानिहहिँ सयाने। ...	१,२,३—थोरेहि; ४,५,६,७,८—थोरे महुँ

१।११।७ समुझि बिबिधि **बिनती अब** मोरी।	१,२,३–बिनती अब; ४,५,६,७, ८–बिधि बिनती
१।११।८ एतेहु पर करिहहिँ **जे असंका**। ...	१,२,३–जे असंका; ४,५,७–जे संका; ६, ८–ते असंका
१।११।८ मोहि ते अधिक **ते** जड़ मति रंका। ...	१,२,३,४,५,७,८–ते; ६–जे
१।१२।६ **जेहिँ** करुना करि कीन्ह न कोहू। ...	१,३,४,५,६,८–जेहिँ; २–जेहि; ७–तेहि
१।१२।१० तेहि मग चलत **सुलभ** मोहि भाई।..	१,२,३–सुलभ; ४,५,६,७,८–सुगम
१।१३।६ प्रनवौं सबनि कपट **छल** त्यागे।	१,२,३,४,५–छल; ६,७,८–सब
१।१४ करहु कृपा हरि जस कहौं, पुनि पुनि **कहौं निहोरि**। ...	१,२,३–कहौं निहोरि; ४,५–कहहुँ निहोर; ६,७,८–करउ निहोर।
१।१४।७ **होउ महेस** मोहि पर अनुकूला। ..	१,२–होउ महेस; ४,५,८–सोउ महेस; ६,७–सो उमेस; ३–सो महेस
१।१४।७ **करहु** कथा मुद मंगल मूला। ...	१, २,–करहु; ३,४,५,७–करउँ; ६, ८–करिहि
१।१६।७ **जो** अवतरेउ भूमि भय टारन। ...	१,२,३,४,५,६,७–जो; ८–सो
१।१७ प्रनवौं पवन कुमार, खल बन पावक **ज्ञान घर**। ...	१,२,३–ग्यानघर; ४,५,६,७,८–ज्ञानघन
१।१८ गिरा अरथ जल बीचि सम, **देखिअत** भिन्न न भिन्न। ...	१,२,३,४,५,७–देखिअत; ६,८–कहिअत
१।१८।१ बंदौं **नाम राम** रघुबर को। ...	१,२,३,४,५,६,७,८ नाम राम; (राम नाम)
१।१८।५ जान आदि कबि नाम **प्रभाऊ**। ...	१,२–प्रभाऊ; ३,४,५,६,७,८–प्रतापू
१।१८।५ भयेउ सुद्ध **कहि** उलटा **नाँऊ**। ...	१,२–कहि उलटा नाँऊ; ३,४,५,६,७,८–करि उलटा आपू

१।१८।६ जपि जेई पिय संग भवानी ।	... १,२,३,४,५,६,७,८–जपि जेई; (जपी जाइ)
१।१९।३ कहत सुनत समुझत सुधि नीके ।	... १,२,३,४,५,७–समुझत; ६,८–सुमिरत
१।१९।४ ब्रह्म जीव इव सहज सँघाती ।	... १,२,३,४,५–इव ; ६,७,८–सम
१।१९।८ जन मन कंज मंजु मधुकर से ।	. १,२,३,५–कंज मंजु; ४,६,७,८–मंजु कंज
१।२० तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजित दोउ ।	... १,२,३–बिराजित; ४,५,६,७,८–बिराजत
१।२१ तुलसी भीतर बाहरौ जौ,	१,२,३,४–बाहरौ; ५–बाहेरौ ; ६,८–बाहरहु;७–बाहिरउ;(बाहिरौ)
१।२१।३ जानी चहहिं गूढ़ गति जेऊ ।	... १,२,३,४,६–जानी; ५,७,८–जान
१।२१।३ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ।	.. १,२,३,४,७–जानहिं; ५–जानहि; ६, ८–जानहु
१।२१।४ साधक नाम जपहिं लौ लाए ।	.. १,२,३–लौ ; ४,५,६,८–लय ; ७–लाउ
१।२२ नाम पेम पीयूष ह्रद तिन्हहु किए,	१,२,३,६–पेम; ४,५,७,८–प्रेम
१।२२।२ हमरे मत बड़ नाम दुहूँ ते ।	... १,२,३–हमरे; ४,५,६,७,८–मोरे
१।२२।३ प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की ।	१,२,६,८–प्रौढ़ि; ३,४,५,७–प्रौढ़
१।२४।५ राम सकल कुल रावन मारा	... १,२,३,–सकल कुल; ४,५,६,७, ८–सकुल रन
१।२५।२ सुक सनकादि साधु मुनि जोगी ।	... १,२, ३, ४, ५,७–साधु; ६,८–सिद्ध
१।२५।३ जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ।...	१,२,३,४,५,६,७–हरि; ८–हर
१।२५।५ थापेउ अचल अनूपम ठाऊँ ।	... १,२–थापेउ; ३,४, ५, ६,७,८–पायेउ
१।२५।७ अपत अजामिल गज गनिकाऊ ।	.. १,२,३,४,५,८–अपत; ६–अपद ७–अपत

१।२६ जो सुमिरत भयो भाँग ते, तुलसी तुलसीदास। ...	१,२,३,४, ५, ६, ८—भयो ... तुलसी; ७—भए ... तुलसी
१।२६।३ द्वापर परितोषन प्रभु पूजे। ...	१,२,३,४,५—परितोषन; ६,७,८—परितोषत
१।२६।५ सुमिरत सकल समन जंजाला। ...	१,२,३—जंजाला; ४, ५, ६, ८—समन सकल जग जाला; ७—सुखद सुलभ सब काला
१।२६।७ नहिँ कलि करम न भगति बिबेकू।...	१,२,३,४, ५, ६, ७, ८—भगति; (धरम)
१।२७ जापक जन प्रहलाद जिमि......।...	१, २, ३,४,५, ६, ७, ८—जिमि; (इव)
१।२७।११ को जग मंद मलिन मन मो ते।...	१, २, ३, ४,५,७—मन; ६, ८—मति
१।२८।३ भगति भोरि मति स्वामि सराही।...	१, २, ३, ५, ७—भोरि; ४,६,८—मोरि
१।२८।४ कहत नसाइ होइ हिय नीकी। ...	१, २, ३, ६, ८—होइ हिअ; ४, ५, ७—होइ हिय; (होइहि प्रति)
१।२८।८ राज सभा रघुबीर बखाने। ...	१,३,४,५,७—राज सभा; २,६,८—राम सभा
१।२९ तुलसी कहीँ न राम से, साहिब सील निधान। ...	१,२,३,४,५—कहीं; ६,७,८—कहूँ
१।२९।६ सबदरसी जानहिँ हरिलीला। ...	१,२,३,५,६,८—सबदरसी; ४,७—समदरसी, (सभदरसी)
१।३० स्रोता······कथा राम कै गूढ़, किमि समुझौं मैं। ...	१,२,३,४,५,६,७,८—कै···समुझौं मैं; (की···समुझै यह)
१।३०।२ भाषा बंध करबि मैं सोई। ...	१,२,३,४,५,७—भाषा बंध; ६,८—भाषा बद्ध

१।११।१२ राम भगत जन जीवन धन से। ... १,२,३,४,५,७,८-धन; ६-धर

१।१३।२ पुनि सबही प्रनवौं कर जोरी। ... १, २, ३, ४, ५,७-प्रनवौं; २-प्रनवों; ६, ८-बिनवौं

१।१४।३ लोक समस्त बिदित अति पावनि।... १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८-अति; (अग)

१।१४।१० कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन। १, २, ३, ४, ५, ६,७,८-कुलि; (कलि)

१।३६।३ उपमा बिमल बिलास मनोरम। ... १, २-बिमल; ३, ४, ५, ७, ८-बीचि; ६-बीच

१।३६।१३ छमा दया द्रुम लता बिताना। ... १, २, ३, ४, ५,६-दम; ७,८-द्रुम

१।३६।१४ सम जम नियम फूल फल ग्याना।... १, २, ३, ६-सम जम नियम; ४,५-सम जम नेम; ७-संयम

१।३६।१४ हरि पद रति रस बेद बखाना। ... १,२,३,४,५,७-रति रस; ६, ८-रस बर

१।३८।६ सोइ सादर मज्जन सर करई। ... १, २, ३, ४, ५-मज्जन सर; ६,७,८-सर मज्जन

१।३८।७ जिन्ह के राम चरन भल चाऊ। ... १,२, ३, ४-चाऊ; ५, ६,७,८-भाऊ

१।३८।११ चली सुभग कबिता सरिता सो। ... १,२,३,४,५,६,८-सो; ७-सी

१।४०।४ घाट सुबंध राम बर बानी। ... १,२,३,७-सुबंध; ४, ५-सुबंधु; ६,८-सुबद्ध

१।४०।७ परब जोग जनु जुरेउ समाजा। ... १, २, ३, ४,५,७-जुरेउ; ६,८-जुरे

१।४१ कलि खल अघ अवगुन कथन। ... १, २, ३, ४, ५, ७-खल अघ; ६,८-अघ खल

१।४२।१ लघुता ललित सुबारि न खोरी। ... १,२,३, ४, ५, ६-खोरी; ७,८-थोरी

१।४२।२ अदभुत सलिल सुनत गुन कारी ।...	१,२,३,४,५,७,८–गुनकारी; ६–सुखकारी
१।४३ मति अनुहारि सुबारि गुन, गन गनि मन अन्हवाइ । ...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–गनि; ६–गनत
१।४३ अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाइ प्रसाद । ... कहौं जुगल मुनिवर्ज कर, मिलन सुभग संवाद । ...	१,२,३, ४, ५,७,८ में भा० का पाठ है; ६–भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, जागबलिक मुनि पाय । प्रथम मुख्य संवाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ।
१।४३।७ जाहिँ जे मज्जन तीरथ राजा । ...	१, २, ३. ४, ५, ७, ८–मज्जन ६–मज्जहिँ
१।४४।८ कहत सो मोहि लागति भय लाजा ।	१,२,३–लागति; ४.५,६.७,८–लागति; (लाग)
१।४५।८ भए रोष रन रावन मारा । ...	१, २–भए; ३, ४, ५, ६,७,८–भएउ
१।४६।१ जैसे मिटै मोह भ्रम भारी । ...	१, २,३, ४,५–मोह; ६, ७, ८–मोर
१।४८ गुपुत रूप अवतरेउ प्रभु, गएँ जान सबु कोइ । ...	१, २. ३, ७–गुपुत ... गये; ४, ५–गुप्त .. गए; ३, ७–गए; ६,८–गुप्त ... गएँ
१।४८।६ मृग बधि बंधु सहित प्रभु आए ।...	१, २, ३. ४, ५, ७–प्रभु; ६,८–हरि
१।४८।७ बिरह बिकल इव नर रघुराई । ...	१,२–इव नर; ३,४,५,६,७,८–नर इव ।
१।४८।८ देखा प्रगट दुसह दुख ताके । ...	१, २, ३,४,५,७–दुसह; ६,८–बिरह
१।४९।१ उपजा हिय तेहि हरष बिसेखा । ...	१, २,–तेहि; ३, ४,५, ६,७,८–अति

१।४९।६ सुर नर मुनि सब नावहिँ सीसा। ... १,२,३,४,५,७–नावहिँ; ६, ८–नावत

१।५०।६ संसय अस न धरिअ तन काऊ। ... १,२,३,५–तन; ७–मन; ४,६,८–उर

१।५१।४ करइ बिचार करौँ का भाई। ... १, २, ३, ४, ५,७–करइ; ६,८–करहिं

१।५१।५ इहाँ संभु अस मनु अनुमाना। ... १,२,३,४,५,६,८–इहाँ; ७–उहाँ

१।५१।८ अस कहि जपन लगे हरि नामा। ... १,२,३,४,५,७–जपन लगे; ६,८–लगे जपन

१।५२।३ सब दरसी सब अंतरजामी। ... १,२,३,४,५,६,८–सबदरसी; ७–समदरसी

१।५२।७ पिता समेत लीन्ह हरि नामू। ... १,२,३,५–हरि; ४,६,७,८–निज

१।५५।१ भय बस प्रभु सन कीन्ह दुराऊ। ... १,२,३,४,५–प्रभु; ६,७,८–सिव

१।५५।३ मोरे मन प्रतीति अति सोई। ... १,२,३,४,५,६,८–अति; ७–अधि

१।५६ परम प्रेम तजि जाइ नहिं,
किए प्रेम बड़ पाप। ... १,२,३,४,५–प्रेम तजि जाइ नहिं; ६,८–पुनीत न जाइ तजि; ७–प्रेम नहिं जाइ तजि

१।५६।१ सुमिरत राम हृदय अस गावा। ... १,२,३,४,५,६,७,८–आवा

१।५७ बिलग होत रस जाइ,
कपट खटाई परत हीँ। ... १,२,३–होत...ही; ४,५,६,७–होइ...ही; ८–होइ...पुनि

१।६१ तौ मैँ आउँ कृपा अयन,
सादर देखन सोइ। ... १,२,३–अयन; ४,५,६,७,८–यतन

१।६१।८ नहिँ भलि बात हमारेहि भाए। ... १,२,३,४,५,७–हमारेहि; ६,८–हमारें भाएं

१।६२।६ पाछिल दुख अस हृदय न ब्यापा। १,२,३,४,५,७–अस हृदय न; ६,८–न हृदय अस

१।६३।४ काढ़िअ तासु जीभ जो बसाई। ... १,३,४,५–काढ़िअ; २,६,७,८–काटिअ

१।६५।२ सहज बैर सब जीवन त्यागा। ...	१,२,७—जीवन्ह ; ६,८—जीवह; ३,४,५—जीवन
१।६५।६ पद पखारि तब आसन दीन्हा। ...	१,२,३—तब; ४,५,६,७,८—बर
१।६५।७ चरन सलिल तब भवन सिचावा। ..	१—तब; २,३,४,५,६,७,८—सब
१।६५।८ निज सौभाग्य बहुत बिधि बरना। ...	१,२,३,४,५,७—बिधि; ६,८—गिरि
१।६६।६ त्रिय चढ़िहहिँ पतिव्रत असि धारा।...	१,२,३,६,८—त्रिय; ४,५,७—तिय
१।६७।५ मिलन कठिन भा मन संदेहू। ...	१,२,३,४,५,७-भा मन; ६,८—मन भा
१।६७।७ झूठि न होइ देवरिषि बानी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८—झूठि; (झूठ)
१।६८।५ बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीँ।...	१,२,३,८—कर; ३,४,५,७—कहँ
१।६८।८ समरथ को नहिँ दोस गुसाईं। ...	१,२,३,४,५ को; ६,८—कहु; ७—कहँ
१।६९ जौं ऐसहि हिसिषा करहिँ नर, बिबेक अभिमान। ...	१,२—अैसहि हसिषा करहिं नर; ३,४,५,६,७,८—अस हिसिषा करहिं नर अइ
१।७० होइहि अब कल्यान सब, ...	१,२,३,४,५—अब कल्यान सब; ६,७,८—यह कल्यान अब
१।७०।२ नाथ न मैँ बूझे मुनि बैना। .	१,२,३—बूझे; ४,५,६,८—समुझे; ७—समुझउँ
१।७१ प्रिया सोच परिहरहु अब, पारबती निरमयेउ। ...	१,२,३—अब…पारबती; ४,५,६,७.८—सब…पारबतिहि
१।७१।४ अस बिचारि सब तजहु असंका। ...	१,२,३—सब; ४,५,६,७,८—तुम्ह
१।७२।८ भयउ बिकल मुख आव न बाता। ...	१,२—भएउ ; ५,६,७,८—भए ; ३,४—भये
१।७३।६ बेलपाति महि परै सुखाई। ...	१,२,३,४,५—बेलपाति; ७—बेल-पात; ६, ८—बेलपाती
१।७४।४ मिलिहि जबहिँ अब तस रिषीसा।...	१,२,३—जबहिँ अब; ४,५,६,७,८—मिलहि तुम्हहि जब

१।७५ चिदानंद सुखधाम सिव, बिगत मोह मद काम।	...	१,३,४,५,७,८–काम; २,६–मान
१।७६।३ मातु पिता प्रभु गुरु कै बानी।	...	१,२,३–प्रभु गुरु; ४,५,६,७,८–गुरु प्रभु
१।७७ गिरिहि आइ पठएहु भवन।	...	१,२,३–आइ पठएहु; ४,५,७–प्रेरि पठवहु; ६,८–प्रेरि पठएहु
१।७७।३ हम सन सत्य मरम सब कहहू।	...	१,२,३,७–सब; ४,५,८–किन; ६–की न
१।७७।५ कहत मरम मन अति सकुचाई।	...	१,२,३,४,५,७–मरम; ६,८–बचन
१।७७।७ नारद कहा सत्य हम जाना।	...	१,२,३,४,५-सत्य हम; ७–सत्य सोइ; ६,८–सत्य सोइ
१।७७।८ चाहिअ सिवहि सदा भरतारा।	...	१,२,३,७-सिवहि सदा; ४,५,६,८–सदा सिवहि
१।७९।४ सुनत बचन कह बिहँसि भवानी।		१,२,३,४,५–बचन कह बिहसि; ६,७,८–बिहसि कह बचन
१।८०।२ अब मैं जनम संभु लै हारा।	..	१,२,३,४–लै; ५–से; ६,७,८–हित
१।८०।५ जनम कोटि लगि रगरि हमारी।	...	१,२,३,४,५,७,८–रगरि; ६–रगर
१।८१।६ तेहिं सब लोक लोकपति जीते।	...	१,२,३,४,५,८–तेहिं; ६–सेइ; ७–ते
१।८१।६ भए देव सुख संपति रीते।	...	१,२,३,४,५,७,८–सुख; ६–सब
१।८१।८ तब बिरंचि पहिँ जाइ पुकारे।	...	१,२,३,४,५–पहिँ; ६,७,८–सन
१।८२।७ एहि बिधि भलेहिं देव हित होई।	...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–भलेहिं; ६–भले
१।८२।८ अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अस हेतू।	...	१,२, ३, ४, ५, ७–अस; ६,८–अति
१।८२।८ प्रगटेउ बिषम बान झष केतू।	...	१, २, ३, ४, ५,७,८–बान झष; ६–बारिचर

१।८३।२ परहित लागि तजै जे देही।	... १,२,३,४,५,६-जे; ७,८- जो
१।८३।३ सुमन धनुष कर सोत सहाई।	... १, २,३,४,५-सेत; ६, ७,८-सहित
१।८४।८ सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी।	... १, २, ३, ४, ५, ७, ८-सिद्ध; ६-सदा
१।८५ अबला बिलोकहिँ पुरुषमय जग, पुरुष सब अबलामय।	१,२,३,४,५,७,८-सब; ६-मय
१।८५।६ कुसुमित नव तरु सखा बिराजा।	१, ३, ४, ५-सखा; ६,८-राज; २,७-जाति
१।८५।७ परम सुभग सब दिसा बिभागा।	... १,२,३,४,५,७,८-सब, ६-दस
१।८६।१ देखि रसाक बिटप बर साखा।	. १, २, ३, ४, ५, ७, ८-रसाल ६-बिसाल
१।८६।३ छाड़े बिषम बिसिष उर लागे।	... १, २, ३, ४, ५, ७-बिसिष, ६,८-बान
१।८७।४ देवन्ह समाचार सब पाए।	... १, २, ३, ४, ५, ७,८,-सब; ६-यह
१।८८।५ सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी।	...१,२,३,४,५,७,८-बिनय ; ६-बचन
१।८८।७ तुरतहिँ बिधि गिरि भवन पठाए।	... १, २,३, ४, ५, ७,८-बिधि; ६-हिमि
१।८९ कहा हमार न सुनेहु तब, नारद के उपदेस।	१,२,३,४,५.७-के; ६-कर; ८-... सुनहु...के
१।९०।६ जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती।	१,२,३,४,५,७, ८-तिन्ह दीन्ही; ६-दीन्ही सो
१।९०।७ लगन बाचि बिधि सबहि सुनाई।	... १, ३, ४, ५-बिधि; २-अस; ७,८-अज; ६-तेहि
१।९०।७ हरषे मुनि सब सुर समुदाई।	... १,२,३,४,५,८-मुनि सब ; ७-मुनिबर; ६-मुनि सब

१।६१	होहिं सगुन मंगल सुभद, करहिं अपछरा गान। ...	१,२,८–सुभद; ३,४,५–सुभग; ६,७–सुखद
१।६१।५	कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। ...	१,२,३,४,५,७,८–डमरु; ६–डवरु
१।६३	तन षीन कोउ अति पीन पावन, कोउ अपावन गति धरें। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–गति; (तनु)
१।६३।१	कौतुक बिबिध होहिं मग जाता। ...	१,२,३,४,५,७,८–होहिं; ६–होत
१।६३।५	सहित समाज सहित बर नारी।...	१, २, ३, ४, ५,८–सहित समाज सहित; ६–सहित समाज सोइ; ७–सकल समाज सहित
१।६३।६	गए सकल तुहिनाचल गेहा। ...	१,२,३,४,७–तुहिनाचल; ६,५, ८–तु हिमाचल; (आए सकल हिमाचल)
१।६३।८	पुर सोभा अवलोकि सुहाई। ...	१,२,३,४,५,७,८–सुहाई; ६–न आई
१।६४	जगदंबा जहँ···बरनि कि जाइ। ...	१,२,३,४,५,७,८–कि जाइ; ६–न जाइ
१।६४	रिधि सिधि संपति सकल, सुख नित नूतन। ...	१,३,५ में भा० का पाठ है; २,६,८–रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख; ४,७–रिद्धि सिद्धि संपति सकल सुख
१।६४।१	नगर निकट बरात सुनि आई। ...	१,२,३,४,५,७,८–सुनि; ६–अब
१।६४।२	करि बनाव सजि बाहन नाना। ...	१,२,३,४,५,७–सजि; ६,८–सब
१।६४।७	कहिअ काह कहि जाइ न बाता। ...	१,२,३,४,५,७,८–काह···जाइ; ६–जात
१।६४।८	बरु बौराह बरद असवारा। ...	१,२,३,४,५,६,७–बरद; ८–बसह
१।६५।४	अवलम्ह उर भय भएउ बिसेषा। ...	१,२–अवलम्ह; ६,७–अवलन्हि; ३,४,५–अबलन
१।६६।१	नारद कर मैं काह बिगारा। ...	१,२,४,५,६,७–काह; ३,८–कहा
१।६६।१	भवन मोर जिन्ह बसत उजारा। ...	१,२,३,४,५,७,८–जिन्ह; ६–जेहि

१।९६।६	सो न टरै जो रचै बिधाता।	... १,२,३,४,५,७,८–टरै; ६–मिटै
१।९६।८	तुम्ह सन मिटहिँ कि बिधि के अंका।	१, २, ३, ४, ५, ८–के; ६–कर; ७–कै
१।९९।३	जाइ न बरनि बिरंचि बनावा।	१.२.३,४,५,७,८–बिरंचि ; ६–बिचित्र
१।९९।७	जगदंबिका जानि भव भामा।	... १, २, ३, ४, ५, ७,८–भव भामा; ६–भव बामा
१।९९।८	जाइ न कोटिहु बदन बखानी।	... १,३,४,५,७,८–कोटिहु; २–कोटि बहु; ६–कोटिन
१।१००।४	जय जय जय संकर सुर करहीं।	... १,२,३,४,५,७,८–सुर; ६–जै जै संकर सुर सब करहीं।
१।१०१	नाथ उमा मम प्रान प्रिय, गृह किंकरी करेहु।	... १,२,३,४,५,७,८–प्रिय; ६–सम
१।१०१।४	बचन कहत भरे लोचन बारी।	... १, २, ३, ८–भरे; ५,६,७–भरि; ४–भर
१।१०१।७	परम प्रेम कछु जाइ न बरना।	... १,२,३,४,५,७,८–प्रेम ; ६–सो स`म मोहि जात न बरना
१।१०२	जननिहि बहुरि मिलि चलीँ,	... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–जननिहि; ६–जननी
	फिरि फिरि बिलोकति मातु तन, जब सखी लै सिव पहि गईं।	... १,२,३,४,५,७–जब; ६,८–तब
	जाचक सकल संतोषि संकर, उमा सहित भवनहि चले।...	१,२,४,७–भवनहिं; ३, ५, ६–भवन; ८–भवने
१।१०२।७	जब जनमेउ षटबदन कुमारा।	... १,२–जब; ४,५,७–तब जनमे, ३, ६, ८–तब जनमेउ
१।१०३	यह उमा संभु बिवाह जे नर, नारि कहहिँ जे गावहीं। ...	१,२,३,४,६,८–कहहिं ; ५,७–सुनहिं

१।१०३।२ नयननिह नीर रोमावलि ठाढ़ी। ...	१,२,३,८–नयननिह; ४,५,६,७–नयन
१।१०३।८ पुनि करि रघुपति भगति देखाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–देखाई; (दढ़ाई)
१।१०६।५ पति हिय हेतु अधिक मनमानी।	१,२–मनमानी; ३,५–मनमाही; ४,६,७,८–अनुमानी
बिहँसि उमा बोली मृदु बानी। ...	१, २, ७–मृदु बानी; ३,५–हर पाहीं; ४,६,८–प्रिय बानी
१।१०६।१ जदपि जोषिता अन अधिकारी। ...	१,२,३,४,५,७–अन; ६,८–नहिं
१।११०।३ प्रश्न उमा कै सहज सुहाई। ...	१–कै; २, ६, ८– के; ४, ३, ५, ७–कर
१।१११।६ तुम्ह समान नहिँ कोउ उपकारी।...	१,२,६,७,८–उपकारी; ३,४,५–अधिकारी
१।११२ राम कृपा ते हिमसुता, सपनेहु तव मन माहिँ। ...	१,३,४,५–हिम सुता; २,६,७,८–पारबति
१।११४।३ जिन्हहिं न सूझ लाभु नहिं हानी।	१,२,३,४,५,७ जिन्हहि न; ६,८–जिन्ह के
१।११८।२ रघुबर सब उर अंतर जामी। ...	१,३,४,५,७,८–सब; २,६–बस
१।११९।३ सुखी भइउँ प्रभु चरन प्रसादा। ...	१,२,४,५,७–भइउँ; ३–भइउ अब; ६,८–भएउँ
१।१२०।१ सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए। ...	१, २, ६, ७, ८–सुहाए; ३,४,५–सुहावा
१।१२२।१ तीनि जनम द्विज बचन प्रमाना। ...	१,३,४,५, ७–प्रमाना; २,६,८–प्रवाना
१।१२३।१ तासु साप हरि कीन्ह प्रवाना। ...	१,३,४,५,७–कीन्ह; २,६,८–दीन्ह
१।१२३।६ नारद बिष्नु भगत पुनि ग्यानी। ...	१, २,३,४,५,८–पुनि; ६–मुनि; ७–पुनि ग्यानी

१।१२५।३ काम कृसानु जगावनि हारी। ...	१,२—जगावनि; ३,४,५,६,७,८—बढ़ावनि
१।१२६ गहेसि आइ मुनि चरन, कहि सुठि आरत मृदु बैन।	१, २, ३, ४, ५,६,७—कहि सुठि आरत मृदु बैन; ८—चरन तब कहि सुठि आरत बयन
१।१२६।८ तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ। ..	१,७—सुनायहु; ३, ४, ५—सुनाएहु; २,६,८—सुनावहु
१।१२७।५ हरषि मिले उठि रमा निकेता। ..	१, २, ७—मिले; ६, ८—मिलेउ; ३,४,५—उठे प्रभु कृपा
१।१२८।८ सुनहु कठिन करनी ते केरी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८—तेहि
१।१२६।४ श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी। ...	१, २, ३, ६,८—जिसु; ४,५,७—जेहि
१।१२६।७ पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ। ...	१,२,३,४,५,६,८—सब; ७—सन
१।१३०।८ जप तप कछु न होइ तेहि काला। ...	१, २, ४, ५, ६,७,८—तेहि; ३—येहि
१।१३०।८ है बिधि मिलै कवन बिधि बाला। ...	१, २, ६, ८—है; ३,४,५,७—हे
१।१३३।३ करहिँ कूटि नारदहि सुनाई। ...	१,२,३,४,६,८—कूटि; ५,७—कूट
१।१३४।२ पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीँ।...	१,२,३,४,५, ६, ७, ८—उकसहिं; (उसकहिँ)
१।१३४।४ दुलहिनि लै गये लच्छि निवासा।	१,४—लै गये, ३,५—लै गै, ७,८—लै गे, ६—ले गे, २—लै गये
१।१३९।३ तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। ...	१,२,३,४,५,६,८—तब तब कथा मुनीसन्ह गाई; ७—तब तब कथा बिचित्र सुहाई। परम पुनीत मुनीसन्ह गाई
१।१३६।१ परम पुनीत प्रबंध बनाई। ...	१, २, ६, ८—परम पुनीत प्रबंध बनाई, ३, ४, ५—परम बिचित्र प्रबंध बनाई।

१।१४०।२ जेहि कारन अज अगुन अरूपा।	... १, २, ३, ४, ५, ६,७,८–जेहि; (केहि)
१।१४१।३ धुव हरि भगत भयउ सुत जासू।	... १, ३, ४,–ध्रुव; २, ६, ८–ध्रुव; ५,७–ध्रुव हरि भक्त
१।१४१।८ प्रभु आयसु बहु बिधि प्रतिपाला।	... १,३,४,५–बहु; २,६,८–सब
१।१४२।१ बरबस राज सुतहि नृप दीन्हा।	... १,७–नृप; ३,४,५—पुनि; २,६, ८–तब
१।१४२।८ संत समाज नित सुनहिं पुराना।	... १,३,५,६, ७, ८–सत; २,४ संत
१।१४३।५ निजानंद निरुपाधि अनूपा।	... १, २, ३, ५, ७, ८–निजानंद; ४, ६–चिदानंद
१।१४४।१ ठाढ़े रहे एक पद दोऊ।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–पद; (पग)
१।१४४।६ मागु मागु धुनि मै नभ बानी।	... १, २,३, ४,५–माँगु माँगु धुनि; ७–बर भइ; ६,८–बइ मै
१।१४८।१ धरि धीरजु बोले मृदु बानी।	... १, ३, ४, ५, ६,७–बोले; २,८–बोलीं
१।१४९।५ जदपि भगत हित तुम्हहि सुहाई।	... १,३,४,५,७–भगत; २–भगति; ६,८–भगति . सोहाई
१।१४६।७ कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई।	... १, २, ३, ४, ६, ८–प्रवान; ५–प्रमान
१।१५०।१ सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बच रचना।	... १, २, ६–बच; ३, ४, ५, ८,७–बर
१।१५०।६ मम जीवन मिति तुम्हहि अधीना।	... १, २, ३, ६,८,मिति; ४,५,७–तिमि
१।१५६ आपुनु आवै ताहि पहि, ताहि तहाँ लै आइ।	१, २,६–आपुनु; ७,८–आपु न; ... ३,४,५, ताहि ले
१।१६१।६ तब बोला तापस बग ध्यानी।	... १,२,३,६, ८–बग ध्यानी; ४,५, ७–बक ध्यानी।

१।१६१ मोहि तोहि पर अति प्रीति, सोइ चतुरता बिचारि तव।... १,२,३,४,५,६,८–बिचारि, ७–देखि

१।१६४।४ चलै न ब्रह्मकुल सन बरिआई। ... १,२–चलै न...सन; ३,४,५,६,७,८–चल न

१।१६७।३ मन क्रम बचन भगत तैं मोरा। ... १, २, ३, ४, ५–क्रम; ६, ८–तन

१।१६७।४ जोग जुगुति जप मंत्र प्रभाऊ। ... १, २, ३, ४, ५–जप; ६, ७, ८–तप

१।१७४।२ बिरचत हंस काग किअ जेही। ... १,२,३,४,५,७–बिरचत; ६,(८)–बिचरत

१।१७५।८ बरनि न जाहिं बिस्व परितापी। ... १,३, ४,५–जाहिं; २, ६,७,८–जाइ

१।१७८।८ एक बार कुबेर पर धावा। ... १,२,३,७,८–पर; ६–कहुँ; ४, ५–बेर···पर

१।१८१।५ गर्जत गर्भ स्रवत सुर रवनी। ... १,२,३,४,५–स्रवत; ६, ७, ८–स्रवहिं

१।१८१।८ देइ देवतन्ह गारि पचारी। ... १,२,८–पचारी; ३,४,५,६,७–प्रचारी

१।१८२ मंडलीकमनि रावन राज, ... १,२,३,४,५, ६,७,८–मंडलीकमनि; (मंडलीकपति)

१।१८२।१ सो सब जनु पहिलेहि करि रहेऊ।... १,२,४,५,७,८–पहिलेहि; ३,६–पहिले

१।१८२।७ देव बिप्र गुरु मान न काई। ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–देव; (वेद)

१।१८२।८ नहि हरि भगति जग्य तप ग्याना। १,२,८–जग्य तप ग्याना; ३,४,५,६–जग्य जप ग्याना; ७–जोग जप दाना; (जग्य जप दाना)

१।१८३।३	ते जानेहु निसिचर सम प्रानी। ...	१, ३, ४, ५, ७—सम ; २, ६, ८—सब
१।१८३।४	अतिसय देखि धर्म कै हानी। ...	१,२,४,५,७—हानी ; ३, ६, ८—ग्लानी
१।१८४	सुर मुनि गंधर्बा…लोका…सोका।	१,३,४,५,७,८—लोका, सोका ; २,६—लोक…सोक
१।१८४।२	कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई।...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—बस प्रभु; ६—मन बस
१।१८४।७	प्रेम ते प्रभु प्रगटै जिमि आगी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ८—प्रगटै ; ७—प्रगटे
१।१८६	जय जय; भगवंता; प्रियकंता; मुकुंदा; मुनिबृंदा; सच्चिदानंदा; बरूथा; जूथा।	१,३,४,५,७,८ में आ० का पाठ है; २,६—भगवंत; प्रियकंत; मुकुंद; मुनिबृंद; सच्चिदानंद, बरूथ; जूथ;
	जो भव भयभंजन मुनि मन रंजन, गंजन बिपति बरूथा। ..	१,२,३,४,५—गंजन ; ७—खंजन; ६, ८—खंडन।
१।१८६।८	तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना। ...	१, ६—फिरेउ; २, ३, ४, ५, ७, ८—फिरे
१।१८७	बानर तनु धरि धरि महि हरि पद,	१, २, ३—धरि महि; ५, ६,७—धरि धरनि; ४,८—धरनि महँ
१।१८७।५	गिरि कानन जहँ तहँ महि पूरी। .	१,३,४,५—महि; २,६,७,८—भरि
१।१८७।५	रहे निज निज अनीक रुचि रूरी।...	२, ६, ५—रुचि रूरी; ३, ४, ७, ८—रचि
१।१८८।३	निज दुख सुख सब गुरहि सुनाएउ।	१,२,३,४,७—सब गुरहि; ५, ६, ८—सब गुरुहिं
१।१९३।२	ब्रह्मानंद मगन सब लोई। ...	१,२,६,८—लोई; ४,५,७—कोई ; ३—नर लोई

१।१९४ गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटेउ प्रभु सुखकंद। ...	१,२,७–प्रभु सुखकंद; ३४५–प्रभु प्रगटे सुखकंद ; ६, ८–प्रगटेउ सुखमाकंद
१।१९५।५ बीथिन्ह फिरहिँ मगन मन भूले। ...	१,२,५,८–मगन मन; ३, ४, ६, ७–सकल रस
१।१९५।६ यह सुभ चरित जान पै सोई। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–सुभ
१।२००।४ भोजन करत देखि सुत जाई। ...	१, २ ३, ४, ५, ६, ८–देखि; ७–देखि; (दीख)
१।२०२।३ चूड़ा करन कीन्ह गुर जाई। ...	१,२,३,४,५,६,७–करन;७–करम
१।२०३ भाजि चले किलकत मुख, दधि ओदन लपटाइ। ...	१, २, ६. ८–भाजि ··· किलकत; ५,७–भागि ··· किलकात; ३,४–भागि चले किलकत
१।२०५।७ एहु मिस देखौं पद जाई। ...	१, २, ३, ६, ८–एहु मिस देखौं; ४, ५–एहि मिस मैं देखौं ; ७–यहि मिस देखौं प्रभु पद
१।२०६ करि मज्जन सरजू जल, गए भूप दरबार। ...	१, ३, ४, ५, ६–सरजू , २, ८–सरऊ; ७–सरयू
१।२०७ धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ; अति कल्यान।	१,३,६–तुम्हकौं इन्ह कहँ; ४,५, ७–तुम्ह कहँ इन्ह कहँ; २, ८–तुम्ह कौं इन्ह कहँ
१।२०७।५ सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं।	१, ३, ४, ५–प्रिय मोहिं; २,६, ८–प्रिय प्रान की; ७–मोहिं प्रिय प्रान
१।२०८।१ नील जलज तनु स्याम तमाला। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७,८–जलज; (जलद)
१।२०८।४ मोहि निति पिता तजेउ भगवाना।...	१, २, ३, ५, ६,८–निति; ४,७–हित; (लगि)

१।२०९।५ पावक सर सुबाहु पुनि जारा। ...	१, २, ३, ४, ५,७—जारा; ६, ८—मारा
१।२०९।१० धनुष जग्य सुनि रघुकुल नाथा। ...	१, ३, ४, ५, ७, ८—सुनि; २—कह; ६—करि
१।२११ तुलसिदास सठ तेहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल। ...	१,२,३,६,८—तेहि; ४,५,७—ताहि
१।२१२।२ मनिमय जनु बिधि स्वकर सँवारी।	१,३,७—जनु बिधि; २,४,५,६, ८—बिधि जनु
१।२१६ मख राखेउ सबु साखि जगु, जिते असुर संग्राम। ...	१, २, ३, ४, ५,६,८—जिते; ७—जीति
१।२२०।१ जो न मोह यहु रूपु निहारी। ...	१, २, ७—यहु; ३, ४, ५—यह; ६, ८—येह
१।२२५।५ गुरु पद पदुम पलोटत प्रीते। ...	१,३,४,५,७—पदुम; २, ६, ८—कमल
१।२२८।१ देखन बागु कुँअर दुइ आए। ...	१, २, ६, ८ दुइ; ३, ४,५,७—दोउ
१।२२८।४ एक कहइ नृप सुत तेइ आली। ...	१, २, ३, ४, ५, ६,८—तेइ; ७—सोइ
१।२३०।४ फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता। ...	१, २, ८—सुभद; ३, ४,५,६,७—सुभग
१।२३०।५ मन कुपंथ पगु धरैं न काऊ। ...	१,२,६,७,८ में भा० का पाठ है; ३, ४, ५—मूलि न देहिं कुमारग पाऊ
१।२३०।७ नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी। .	१,२,३,५,६,८—पावहिं; ४,७—लावहिं
१।२३१।१ कहँ गए नृप किसोर मन चिंता। ...	१, २, ३, ४,५,६,८—चिंता; ७—चीता

१।२३२।१ नील पीत जलजात सरीरा। ...	१,२,३,४,५–जलजात; ६,८,७–जलजाभ
१।२३२।२ मोर पंख सिर सोहत नीके। ...	१,२,३,५,६,८–मोर पंख; ४,७–काकपक्ष
१।२३२।२ गुच्छ बीच बिच कुसुमकली के। ...	१,२,६,८–गुछ; ३,४,५,७–गुच्छे; (गुच्छ)
१।२३३ देषि भानुकुल भूषनहि, बिसरा सखिन्ह अपान। ...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–सखिन्ह; ६–सबै
१।२३३।१ धरि धीरजु एक आलि सयानी। ..	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–आलि; ६–अली
१।२३३।५ भयेउ गहरु सब कहहिं सभीता। ...	१,३,४,५–भयेउ; २,६,८–भये; ७–भयउ
१।२३३।६ पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। ...	१,२,३,८–ऐहि बेरिआँ; ४,५–बिरिआ; ६, ७–यहि बरिया; (यहि बिरिया)
१।२३३।८ फिरी अपनपउ पितु बस जाने। ...	१,२,३,८–फिरी अपनपउ; ४, ५ ७–फिरी अपनपौ; ६–फिरि आपनपौ
१।२३४।२ सुख सनेह सोभा गुन खानी। ...	१,२,७,८–गुन; ३,४,५,६–कै
१।२३४।१ चारु चित्र भीतर लिखि लीन्ही। ...	१,२,८–चित्त भीती; ६–बिचित्र भीति; ३, ४,५,७–चित्र भीतर
१।२३४।७ नहिं तब आदि अंत अवसारा। ...	१,२,३,६८–अंत; ४,५,७–मध्य
१।२३५ पति देवता सुतीय महुँ, मातु प्रथम तब रेख।	१,२,३,४,५,७,८–सुतीय; ६–से तीय
१।२३५।१ बरदायनी पुरारि पियारी। ...	१, २–बरदायनी पुरारि; ३ बरदाइनी पुरारि; ६–बरदाइनि त्रिपुरारि ४, ५, ७–बरदायिनि पुरारि; ८–बरदायनी पुरारि

१।२३५।४ अस कहि चरन गहे बैदेही। ...	१,२,३,४,५,८—गहे; ६, ७—गही
१।२३५।६ सादर सिय प्रसादु सिर धरेऊ। ...	१,२,३,४,५,७,८—सिर, ६—उर
१।२३५।६ बोली गौरि हरषु हिय भरेऊ। ..	१,२,३,४, ५, ६,७—भरेउ; ८—भरेऊ
१।२३६ मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु, सहज सुंदर साँवरो, सावरो।	१, २, ३, ४, ५,(६, ७—साँवरो, सावरो; ८—साँवरे, सावरे
१।२३६।७ सिय मुख ससि देखि सुखु पावा।	१,२,३,४,५,७,८—सुखु पावा; ६—मन भावा
१।२३७।७ पंकज कोक कोक सुख दाता।	१,२,३,४,५,७,८—कोक कोक; ६—कोक कोक
१।२३८ जिमि तुम्हार आगमनु सुनि, भए नृपति बलहीन। ...	१,२,३,४,५,७,८—जिमि…आगमन; ६—तिमि
१।२३९।६ बाल जुबान जरठ नर नारी। ...	१,२,३,४,५,७,८—बाल जुवान; (बालक जुवा) यह पंक्ति काशिराज में नहीं है]
१।२४० उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि। ...	१,२,३,४,५,७,८—थल; ६—सब
१।२४०।५ देखहिँ भूप महारन धीरा। ...	१,२,३,४,५,६,७—भूप; ८—रूप
१।२४१।२ सिसु सम प्रीति न जाति बखानी। ...	१, २, ८—जाति; ३, ४, ५, ६, ७—जाइ
१।२४१।६ रामहि चितव भाव जेहि सीया। ...	१, २, ३, ५, ८—भाय; ४,६,७—भाव
१।२४१।६ सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—सुखु; ६—सुख
१।२४१।८ एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। ...	१,२,८—जेहि; ७—जाहि; ३,४,५, ६—जेहि
१।२४२।१ चितवनि चारु मार मनु हरनी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—मनु; ६—मद

१।२४३।३ एकटक लोचन चलत न तारे। …	१, २, ३, ८–चलत न तारे; ६, ७–टरत न टारे; ४–चलत न टारे; ५–टरै न टारे
१।२४४ मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल।	… १,२,३,४,५,७,८–तहँ, ६–बर
१।२४४।३ बिनु भंजेहु भव धनुष बिसाला। …	१,२,३,४,५,७,८–भव धनुष; ६–शिव धनुक
१।२४४।३ मेलिहि सीय राम उरमाला।	… १, २, ३, ४, ५,७,८–उरमाला; ६–जयमाला
१।२४४।८ यह सुनि अवर महिप मुसुकाने। …	१, २, ८–अवर महिप; ६, ७–अपर भूप; ३,४,५–अपर महिप
१।२४५।१ ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई।	… १, २, ३, ४, ५, ७, ८–ब्यर्थ; ६–वृथा
१।२४५।१ मन मोदकन्हि कि भूख बताई।	… १,२,३,५,६,८–बताई; ४, ७–बुताई
१।२४६।३ सिय बरनिय तेइ उपमा देई।	… १,२,३,४,५,७,८–सिय बरनिय तेइ; ६–सीय बरनि तेहि
१।२४६।४ जौं पटतरिअ तीय सम सीया।	… १, २, ३, ४, ५, ७,८–सम; ६–महँ
१।२४७।३ भूषन सकल सुदेस सुहाए।	… १, २, ३, ४, ५, ७, ८–सुदेस; ६–अनूप
१।२४८ लागि बिलोकन सखिन्ह तन, रघुबीरहि उर आनि। …	१,२,३,४,५,८–लागि; ६, ७–लगी
१।२४८।१ राम रूप अरु सिय छबि देखें…। निमेखें।	१,२,३,४,५,७,८–देखें…निमेखें; ६–देखी…निमेखी
१।२४९।७ तमकि ताकि तकि सिव धनु धरहीं।	१,२,३,४,५,८–ताकि; ६, ७–तमकि

१।२५० तमकि धरहिँ धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहिँ लजाई।	१,२,५,६–उठै ; ३,४,७–उठइ; ८–उठे
१।२५०।५ श्रीहत भए हारि हिय राजा। ...	१,२,४,५,७,८–हिय; ३–हियँ; ६–सब
१।२५१।१ तिल भरि भूमि न सके छुड़ाई। ...	१,२,८–सके छुड़ाई; ३, ४, ५–सकेउ छुड़ाई ; ६–उठाई ; ७–सकै छुड़ाई
१।२५१।५ सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी। ...	१, २, ७, ८–जिमि; ३, ४, ५, ६–इव
१।२५२।६ तौ प्रताप महिमा भगवाना, को बापुरो। ...	१–तौ ··· भगवाना, को; २, ३, ४, ५, ७, ८–तव...भगवाना, का ; २–को ; ६–तब...बलवाना, का
१।२५३ जौ न करौं प्रभु पद सपथ, कर न धरौं धनु भाथ।	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–भाथ; (पुनि न धरौ धनु हाथ)
१।२५३।१ लखन सकोप बचन जब बोले। ...	१,२,३,४,५,६,७–जब ; ८–जे
१।२५३।८ ठाढ़ भए उठि सहज सुभाएँ। ...	१,२,३,४,५,८–सुभाएँ; ६, ७–सुहाए
१।२५४।७ बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। ...	१,२,३,४,५,७,८–सुर; ६–सब
१।२५५।२ केउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–नृप ; ⑧ गुरु
१।२५५।५ सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।	१,२,७,८–कछु जाति न; ३,४, ५–कछु जाइ न; ६–कहि
१।२५६।३ मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती। ...	१,२,७,८–बढ़ी अति ; ६–भइ अति; ३,४,५–भई मन
१।२५६।७ आजु लगें कीन्हेउ तुअ सेवा। ...	१,२–लगें कीन्हेउ तुअ; ३,५, ७, ८–कीन्हिउँ तुव; ६–कीन्हेउ तव; ४–कीन्हिउ तव

१।२५७।३ उचित समय सिख देइ न कोई। ...	१, २, ३, ४,५,७,८–समय;६–सकय
१।२५७।६ सकल सभा कै मति भै भोरी। ...	१,२,३,४,५,६,७–कै; ८–के
१।२५७।८ लव निमेष जुग सब सम जाहीं। ...	१, २, ६, ८–सय ; ३, ४, ५, ७–सत
१।२५८ प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।	१,२,७,८–चितइ पुनि चितव ३,४,५–चितव पुनि चितव; ६–चितै पुनि चितै
१।२५८ खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल। ...	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–बिधु... डोल ; (बिध)
१।२५८।४ तन मन बचन मोर पनु साचा। ...	१, २, ३, ५, ७, ८–पनु; ४–पन; ६–मन
१।२५८।४ रघुपति पद सरोज चितु राचा। ...	१,२,३,८–चितु; ४,५,६,७–मन
१।२५८।७ प्रभु तन चितै प्रेम पनु ठाना। ...	१,३,७–पनु; २, ४, ५, ६–पन; ⑧ तन
१।२५८।८ चितव गरुड लघु ब्यालहि जैसें। ...	१,२,३,८–गरुड; ४, ५, ६, ७–गरुड
१।२५९।६ राम बाहु बल सिंधु अपारू। ...	१,२,३,४,५,७,८–सिंधु; ६–राम सिंधु घन बांह अपारू
१।२६०।१ देखी बिपुल बिकल बैदेही। ...	१, २, ६, ७, ८–बिपुल बिकल; ३,४,५–बिकल अतिहि
१।२६०।३ का बरषा सब कृषी सुखाने। ...	१, २, ३, ४, ८–सब ; ५, ६, ७–अब
१।२६०।६ पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ। ...	१,२,३,८–नभ धनु; ४,५,६,७–धनु नभ
१।२६०।८ तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। ...	१, २, ४,५,६,७,८–मध्य धनु ; (छन मध्य)

१।२६१	कोदंड भंजेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८—खंडेउ; (भंजेउ)
१।२६१	बूड़ सो सकल समाज, चढ़ा जो प्रथमहि मोह बस।	१,२,८—बूड़···चढ़ा;५,७—बूड़े... चढ़े; ६—बूड़...चढ़े; ३,४—बूड़ा...चढ़ा
१।२६१।८	मुदित कहहिँ जहँ तहँ नर नारी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—नर; ६—सब
१।२६२।१	भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई। ...	१,२,३,४,५,८—दुंदुभी सुहाई; (दुंदुभी सोहाई); ७—दुंदुभी बजाई; ६—डिंडिमी
१।२६२।३	सखिन्ह सहित हरषीं अति रानी।	१, २, ३, ४, ५—अति; ६, ७, ८—सब
१।२६२।८	सीता गमनु राम पहिं कीन्ही। ...	१,२,३—गमनु, कीन्ही; ४, ५,६, ७,८—गमनु कीन्हा
१।२६३।२	बिस्व बिजय सोभा जेहि छाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—जेहि; ६—जनु
१।२६४।१	खल भए मलिन साधु सब राजे। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८—राजे; (गाजे)
१।२६४।३	नाचहिँ गावहिं बिबुध बधूटी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८—बिबुध; (बिबिध)
१।२६४।३	बार बार कुसुमांजलि छूटी। ...	१, २, ८—कुसुमांजलि; ३,४,५,६, ७—कुसुमावलि
१।२६४।५	महि पाताल ब्योम जस ब्यापा। ...	१,३,४,५—ब्योम; २, ६, ७, ८—नाक
१।२६४।७	सोहति सीय राम कै जोरी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७—सीय राम; ८—सोहत सीयराम; ६—राम सीअ
१।२६५।३	धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८—बाँधहु; ६—मारहु

१।२६६ देखहु रामहिँ नयन भरि, तजि इरिषा मदु कोहु।	... १,२,३,८–कोह ; ४,५,६,७–मोह
१।२६६।१ बैनतेय बलि जिमि चह कागू।...भागू	१,२,३,४,५,७,८–कागू, भागू ; ६–कागा···भागा
१।२६६।३ लोभु लोलुप कल कीरति चहई।	१,२,३–लोभ लोलुप; ४,५,६,७, ८–लोभी लोलुप
१।२६६।४ हरि पद विमुख सुगति जिमि चाहा।	१,३,४,५–सुगति जिमि ; २,६–परा गति; ७, ८–परम गति
१।२६७ मनहुँ मत्त गज गन निरखि, सिंह किसोरहि चोप।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–किसोरहि; ८–किसोरहु
१।२६७।१ खरभरु देखि बिकल पुर नारीँ।	··· १,२,७,८–पुर; ३,४,५,६–नर
१।२६७।७ चारु जनेउ माल मृग छाला।	... १, २, ६, ८–माल; ३, ४, ५–कटि
१।२६८ सांत बेष करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप।	१,२,३.४,५,८–सांत ; ७–संत ; ... ६–साधु
१।२६८।२ पितु समेत कहि कहि निज नामा।...	१,२,३,४,५,७,८–कहि; ६–निज निज कहि
१।२६८।३ जेहि सुभाव चितवहिं हितु जानी।...	१, २,३,४,५,७, ८–सुभाय; ६–सुभाव
१।२६८।३ सो जानै जनु आइ खुटानी।	... १, २, ३, ५, ६,८–आइ; ४,७–आयु
१।२६८।६ बिस्वामित्र मिले पुनि आई।	... १, २, ३,४,५, ७,८–पुनि; ६–तब
१।२६८।७ दीन्हि असीस देखि भल जोटा।	... १,२,३,४,५,८–दीन्ह असीस...; ६,७–देखि असीस दीन्ह...
१।२६८।८ रामहि चितइ रहे थकि लोचन।	... १,२,३,४,५,७,८–थकि; ६ भरि; (थक)

१।२६९ बहुरि बिलोकि बिदेह सन, कहहु काह अति भीर। ... १,२, ३, ४,५, ७,८—काह; ६—कहा

१।२६९।२ सुनत बचन फिरि अनत निहारे। ... १,२,३,४,५,८—फिरि; ६,७—तब

१।२६९।३ कहु जड़ जनक धनुष केइँ तोरा। ... १,३,४, ५,७—केइँ; २,८—कैं; ६—केहि

१।२६९।७ बिधि अब सवरी बात बिगारी। ... १,२,६—अब सवँरी; ३,४,५—सवँरि सब; ७,८—अब सवरी

१।२७० सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु। ... १,२,३—जानकी भीरु; ४,५,७,८—जानकी भीरु; ६—जानि सीय अति भीरु

१।२७०।५ सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। ... १,२,३, ४,५,७,८—बिहाइ; ६—बिहाउ

१।२७१।२ देखा राम नए के भोरे। ... १,२—नए कें भोरें; ३,४,५—नये कें; ६,७,८—नवन के

१।२७१।५ केवल मुनि जड़ जानहि मोही। ... १,२,३,४,७,८—जड़ जानहि; ५—जानेहि; ६—जाने

१।२७२ मातु पितहि जनि सोच बस, करसि महीस किसोर। ... १,२,८—करसि महीस; ३,४,५—करहिं महीप; ६,७ करसि महीप

१।२७२।४ मैं कछु कहा सहित अभिमाना। ... १,२, ३, ४,५,८—कहा; ६, ७—कहेउँ; (कहउँ)

१।२७२।५ भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी। ... १,२, ३, ४, ५, ६, ७—भृगुकुल; ८—भृगुसुत

१।२७३।२ निपट निरंकुस अबुधु असंकू। ... १,२,३,४,५,७,८—अबुध असंकू... ६—निठुर निसंकू

१।२७३।६ बार अनेक भाँति बहु बरनी। ... १,२,३, ४, ५, ७, ८—बहु; ६—तुम्ह

१।२७४ बिद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिँ प्रलापु। ... १,२,३,४,५,६,७—करहिँ प्रलापु; ८—कथहिं प्रताप

१।२७४।६ कर कुठार मैं अकरुन कोही।	... १, ३, ४, ५,६,७—अकरन; २—अकाकन; ⊜ खर...अकरुन
१।२७५ गाधि सूनु कह हृदय हँसि, मुनिहि हरिअरेइ सूझ।	१,२—गाधि सूनु···हरिअरेइ; ६—... गाधि सुवन हरिअरै; ३,४,५,७—गाधि सूनु...हरिअरइ; ८—गाधि सूनु···हरियने
१।२७५ अयमय खाँड न ऊखमय,	... १,२,३,५,६,७,८—अयमय खाँड; ४—अयमय खंड, (अजगव खंडेउ ऊख जिमि)
१।२७७ जेहि बस जन अनुचित करहिं, होहिं बिस्व प्रतिकूल।	१, ३, ४, ५—होहिं; ७—परहि; ··· २, ८—चरहिं
१।२७८ सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम।	... १,२,३,४,५,७,८—बिहँसे बहुरि; ... ६—बोले बिहँसि
१।२७८ गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी बाम।	१,२,७,८—सकुचि; ३,४,५—बहुरि ... ६—गुरत
१।२७८।६ मुनि नायक सोइ करउँ उपाई।	... १,२,८—करौं; ३,४,५,७—करउँ; ६—करहु
१।२७९।२ आसु दया दुख दुसह सहावा।	... ३, ४, ५, ८—दया; १,२—दयां ६, ७—दैव
सुनि सौमित्रि बिहसि सिरु नावा।	... १,२,३,४,५,८—बिहसि; ६, ७—बहुरि
१।२७९।५ जौं पै कृपाँ जरहिं मुनि गाता।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८—जरहिं; (जरिहि)
१।२७९।८ बिहँसे लखनु कहा मन माहीं।	... १,२,३,४,५,८—मन माहीं; ६,७—मुनि पाहीं
१।२८०।५ सुनहु लखन कर हम पर रोषू।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७—सुनहु; ⊜ सुनह

१।२८०।६ देहु जानि संका सब काहू। ...	३,२,४,५,६–संका ; ७–संदर ; ८–सब संदे काहू
१।२८०।७ राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। ...	१,२,३–तजिअ ; ४,५–तजिय ; ६,७–तजहु ; ⑧ तजअ
१।२८१ बेष बिलोकें कहेसि कछु, बालकहूँ नहि दोसु। ...	१,२,३,४,५,६,७–बालकहूँ ; ८–बालक
१।२८२ बोले भृगुपति सरुष हँसि, तहूँ बंधु सम बाम। ...	१,२,३,४,५,८–हँसि ; ६,७–होइ
१।२८३।४ दीन्हे ।समर जअ जग कोटिन्ह कीन्हे	१,२,३, ४, ५, ७–दीन्हे-कीन्हे ; ६–दीन्हा-कीन्हा ; ८–दीन्हे ; समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे
१।२८४ जाना राम प्रभाउ तब, पुलक प्रफुल्लित गात। ...	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–प्रभाउ; ६–प्रताप
१।२८४ जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेमु अमात। ...	१,२,८–अमात ; ३,४,५,६,७–समात
१।२८४।५ करौं काह मुख एक प्रसंसा। ...	१, ३, ६,७, ८–काह; २,४,५–कहा
१।२८४।६ अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। ...	१,२,३,४,५,८–बहुत;६,७–बचन
१।२८४।७ भृगुपति गये बनहि तप हेतू। ...	१, २, ३,४,५,७,८–बनहि; ६–गयउ तपहि बन
१।२८४।८ अपभयँ कुटिल महीप डेराने। ...	१,२,३,४,५, ८–कुटिल; ६,७–सकल
१।२८५ हरषे पुर नर नारि सब, मिटी मोह मय सूल। ...	१, २, ३, ४, ५,८ मिटी; ६,७–मिटा
१।२८५।६ अब जो उचित सो कहिअ गोसाँई।	१, २, ३, ८–कहिअ; ४,५,७–कहिय ; ६–करहु
१।२८६।१ आनहिँ नृप दसरथहिं बोलाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–आनहिं; ६–आनौ

१।२८६।४ हाट हाट मंदिर सुरबासा । ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–सुरबाशा; ६–चहुँपासा
१।२८६।५ पुनि परिचारक बोलि पठाए । ...	१,२,३,४,५,७,८–बोलि पठाए ; ६–निकर बोलाये
१।२८७।१ सरल सपरख परहिँ नहिँ चीन्हे ।...	१,२,३,५,८–सपरख ; ६–सपर्श ; ४,७–सुपरन
१।२८८।७–तेहि लघु लाग भुवन दस चारी । ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–लाग ; ८ लगति
१।२८९ बसे नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि बर बेषु । ...	१,२,३,७,८– बेषु; ४,५–बेष ; ६–मेष
१।२८६।७ आए भरतु सहित हित भाई । ...	१,३,८–हित ; २,४,५,६–दोउ ; ७–लघु
१।२६१ राम लखन जाके तनय, बिस्व बिभूषन दोउ । ...	१,२,३,४,५,६–जाके ; ७, ८–जिन्ह के
१।२६१।३ तिन्ह कहँ कहिय नाथ किमि चीन्हे ।	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–किमि ; ६–बिनु
१।२९१।७ सकइ उठाइ सरासुर मेरू । ...	१,३,५–सरासुर ; २,४,६,७,८–सुरासुर
१।२६३।१ मुनि बोले गुर अति सुख पाई । ...	१,२,३,५–गुर ; ४,७,८–गुरु ; ६–मुनि बोले
१।२९५।३ सुमन बारिदस भरा उछाहू । ...	१,२,६,८–भरा; ७–भरेउ; ३,४, ५–भएउ
१।२६५।६ तदपि प्रीति कै रीति सुहाई । ...	१,२,३,४,५६,७,८–रीति
१।२६६।२ बिधु बदनीँ मृग सावक लोचनि ।	१,३,४,५,७,८–सावक ; २, ६–बालक
१।२९७।४ रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे ।	१,२,३,५,६,८–रुचि ; ४,७–रचि

१।२९७।५ अब हय जरत धरत पग धरनी। ...	१,२,४,५,७,८–अब ; ६–हय ; (हुम)
१।२९७।७ भरत सरिस बय राज कुमारा। ...	१,२,३,६,७,८–बय ; ५–बए ; ४–सब
१।२९८।५ स्यामकरन अगनित हय होते। ...	१,२,३,४,५,६,८–सावकरन; ५,७–स्यामकरन
१।३००।१ रथ रव बाजि हिसँहिं चहुँ ओरा।	१,२–हिसँहिं; ६–हिंसहिं; ३,४,५,७,८–हिंस
१।३००।३ महा भीर भूपति कें द्वारें। ...	१,२,३,४,५,६,७–भीर ; ८–भीड़
१।३००।४ चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी। ...	१,२,३,४,५,७,८–देखहिं ; ६–निरखहिं
१।३०१।७ घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं। ...	१,२,३,४,५,७,८–जाहीं; ६–जाई
सरव करहिं पाइक फहराहीं। ...	१,२,६–सरो; ३,४,५,७,८–सरव १,२,३,८–पाइक ; ४,५,६,७–पायक ; (पाउक)
१।३०२।५ सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा। ...	१,२,३,४,५,६७,८–पिआवा
१।३०४।१ कनक कलस कल कोपर थारा। ...	१,२,३,४,५–कल कोपर ; ६–कोपर भरि ; ८,७–भरि कोपर
१।३०४।२ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने। ...	१,२,३,४,५,६,७–भाँति भाँति नहिं ; ८–नाना भाँति नहिं
१।३०४।८ मुदित बराती हने निसाना। ...	१,२,३,४,५–बराती ; ६,७,८–बरातिन्ह
१।३०७ उठे हरषि सुख सिंधु महुँ,	१,२,३,४,५–उठे ; ६,७,८–उठेउ
१।३०७।६ मनभावती असीसें पाई। ...	१,२,३,४,५,७,८–मन भावती ; ६–मनभावते
१।३११।३ निज निज गेह गए महिपाला। ...	१,२,३,४,५–गेह; ६,७,८–भवन

१।३११।८ कहहिँ जोतिषी अपर विधाता।	... १,२,३,४,५–अपर, ६,८–आदि ७–विप्र
१।३१४।५ जनु तनु धरे करहि सुर सेवा।	... १,२,३,४,५–सुर; ६,७,८–सुख
१।३१४।७ मरकत कनक बरन तनु गोरी।	... १,३,४,५–तन; २,६,७,८–बर
१।३१५।२ मंगल मय सब भाँति सुहाए।	... १,२,३,४,५,७–मय; ८–सब
१।३१६ जगमगत जीन जराव जोति, सुमोति मनि मानिक लगे।	... १,२,३,४,५,८–जराव; ६,७–जड़ाव
१।३१६ प्रभु मनसहि लयलीन मन, चलत बाजि छबि पाव।	१,२,३,४,६–चाल; ५,७,८–... बाजि
१।३१८ जो सुख भा सिय मातु मन, देखि राम बर बेषु। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–मन; (पन)
१।३१८।२ बेद बिहित अरु कुल आचारू। ब्यवहारू	... १,२,३,४,५,६–आचारू····ब्यवहारू, ७–ब्यवहारू···आचारू; ८–ब्यवहारू ब्यवहारू
१।३१८।३ पंच सबद धुनि मंगल गाना।	... –१,२,३,४,७,८–धुनि;५,६–सुनि
१।३२१।६ बिनु पहिचानि प्रान ते प्यारी।	... १,२,३,५,७–प्रान; ६,८–प्रानहु; ३,४–पहिचान प्रान
१।३२२ नव सप्त साजेँ सुंदरी सब, मत्त कुंजर गामिनी।	... १,३,४,५,७,८–सप्त; २,६–सप्त
१।३२३ भरे कनक कोपर कलस सो, तब लिए परिचारक रहेँ।...	१,२,३,४,५,७,८–तब लिए; ६–तब लिएहि
१।३२४ करि मधुप मन मन जोगि जन, जे सेइ अभिमत गति लहैं। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–सेइ; (पाइ)
१।३२४ बर कुँअरि करतल जोरि, साखोचारु दोउ कुलगुर करैँ।	१,२,३,४,६,८–साखोचारु; ५–साखोचार; ७–शाखोचार
१।३२४।२ जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं।	... १, २, ३, ४,५,७,८–जगमगाति; (जगमगात) यह अर्धाली काशीराज में नहीं है

१।३२५ सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहिं, सकल बिधि सनमानि कै। ... १,२,३,४,५,७—जनक ; ६,८—तनय

१।३२६ ए दारिका परिचारिका करि, पालिबी करुना मई। ... १,२,४,५,७—मई; ३,६,८—नई

१।३२६ अपराधु छमिबो बोलि पठए, बहुत हौं ढीठ्यो दई। ... १,२,३,४,५-दई ; ६,७,८—कई

१।३२७ निज पानि मनि महुँ देखि प्रति मूरति सरूप निधान की। १,२,३,४,५,७—देखि प्रति मूरति; ८—देखि यति मूरति ; ६—देखि पति मूरति

१।३२७।१ पठए जनक बोलाइ बराती। ... १,२,३,४,५,६,७,८—जनक

१।३२७।७ बोलि सुपकारक सब लीन्हे। ... १,३, ४—सूपकारक ; २,५,६, ७,८—सूपकारी

१।३२८।५ छरस रुचिर बिंजन बहु जाती। भाँती १, २, ३, ४, ५, ६, ८—जाती··· भाँती; ७—भाँती···जाती

१।३३१।१ नृप सब राति सराहत बीती। ... ६,८—भाँति सराह बिभूती; १,२, ७—राति सराह बिभूती ; ३,४,५—राति सराहत बीती

१।३३२।१ बूझत बिकल परसपर बाता। ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८—बूझत; (पूछत)

१।३३२।५ पठए जनक अनेक सुआरा। ... १,३,४,५,७—सुआरा ; २,६,८—पठई···सुवारा

१।३३५ रूप सिंधु सब बंधु लखि, हरषि उठेउ रनिवास। ... १,२,३,४,५,७—उठेउ ; ६,८—उठी

१।३३५।५ बिदा होन हम इहाँ पठाए। ... १,२,७—हम इहाँ ; ३,४,५,६,—हित हमहिँ

१।३३६ तुलसी सुसील सनेहु लखि, निज किंकरी करि मानिबी। ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८—तुलसी सुसील; (तुलसीसु सील)

१।३३६।३ राम बिदा मागा कर जोरी। ... १,२,३,४,५,६,७—मागा; ८—मागत

१।३३९।५ फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए। ... १, २, ३, ४, ५,६,७,८—महीस; (महीप)

१।३४१ सबुइ सुलभ जगजीव कहँ,
भएँ ईसु अनुकूल। ... १,२—सबुइ सुलभ; ३,४,५—सबइ सुलभ; ६,८—सबइ लाभ; ७—सबहिं सुलभ

१।३४१।२ करहिं कलप कोटिक भरि लेखा। ... १,२,३,४,५,७,८—करहिँ; ६—करिहि

१।३४१।८ बिनती बहुत भरत सन कीन्ही। ... १,३,४,५—बहुत···कीन्ही; ७—
दीन्ही बहुत कीन्हा; २—बहु·· कीन्ही, ६,८—बहुरि कीन्ही

१।३४२।५ सब सिधि तव दरसन अनुगामी।... १,२,३,६,८—सिधि; ५—सिद्धि; ४,७—बिधि

१।३४३।२ झाँझि बीरि डिंडिमी सुहाई। ... १—बीरि; ८—बिरव; ३,४,५—बीन; २,६,७—भेरि

१।३४४।३ तनु धरि धरि दसरथ गृह छाए। ... १,२—छाए; ३,४,५,६,७,८—आए

१।३४५।१ मोद प्रमोद बिबस सब माता। ... १,२,३,६,८—मोद; ४,५,७—प्रेम

१।३४५।५ मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा। ... १,२,७—मंजुल मंजरि; ६,८—मंजुर मंजरि; ३,४,५—मंजुल मंगल

१।३४५।६ मदन सकुन जनु नीड़ बनाए। ... १,३,४,५,७—सकुन; २,६,८—सकुच

१।३४६।८ मूक बदन जनु सारद छाई। ... १,२,३,६,८—जनु; ४,५—जिमि, ७—जस

१।३५१।४ देत असीस सकल मन तोषे। ... १,२,३,५,८—सकल; ६,७—चले; ४—सकल परितोषे

१।३५२।४ चैल चारु भूषन पहिराईं । ... १,२,६,८—चैल; ३,४,५,७—चीर

१।३५५।१ जटित कनक मनि पलँग डसाए । ... १,२,३—जटित; ४,५,७—खचित; ६,८—जरित

१।३५७।४ सुंदर बधू सासु लै सोई । ... १,२,३,४,५,६—सुंदर बधू; ७—सुंदरि बधुन्ह; ८—सुंदरि बधुन

१।३५७।६ बंदि मागधन्हि गुन गन गाए । ... १,२,६,८—बंदि मागधन्हि; ३,४,५,७—बंदी मागध

१।३५८।८ रामलखन उर अतिहि उछाहू । ... १,२,३,४,५,६—अतिहि; ७,८—अधिक

१।३५९।१ सुदिन साधि कल कंकन छोरे । ... १,२,३,४,५—साधि; ६,७,८—सोधि

१।३५९।३ राम सप्रेम बिनय बस रहहीं । ... १,२,३,४,५,७,८—सप्रेम; ६—सनेह

अयोध्या कांड

२।श्लो०।१ वामांके च विभाति भूधरसुता । ... १,३,४,५,६,७—वामांके ; ८—यस्यांके

२।०।७ फलित बिलोकि मनोरथ बेली । .. २,३,४,५,६,८—फलित ; ७—फुलित

२।१०।२ आवहु बेगि नयनु फल पावहिँ । ... २,३,४,५,६,७,८—आवहु ; ५—आवहिँ

२।१०।६ बिघन मनावहिँ देव कुचाली । ... ३,४,५,७,८—मनावहिँ ; २,६—बनावहिँ

२।११।५ चली बिचारि बिबुध मति पोची । ... ३,४,५,७,८—बिबुध ; २,६,८—बिबिध

२।१६।७ बिनु जर जारि करइ सोइ छारा । ... ३,६,७,८—जर ; २,४,५—जल

२।१६।७ दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । ... २,४,५,६—देखउँ ; ७—देखौं ; ३, ८—देखहुँ

२।२०।२ मरन नीक तेहि जीवन चाही । ... २,३,४,५,६,७—जीवन चाही; ५, ८—जीव न चाही ; (जिवन न चाही)

२।२१।१ कुबरीँ करी कबुली कैकेई । ... २,३,४,५,६,७,८—करि कबुली (करी कुबली)

२।२१।८ बचन मोर फुर मानहु जीते । ... ३—फुर ; २,४,५,६,७,८—प्रिय

२।२४ गवनु निठुरता निकट किय, जनु धरि देह सनेह । ... ३,४,५,७—किय; २,६,⑧—किये

२।२६।५ ऐसिउ पीर बिहँसि तेहिँ गोई । ... २,३,६,८—तेहिं ; ४,५—तेइ; ३—ऐसिहु ; २—ऐसिउ ; ७—सब

२।२६।६ कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई । ... ३,४,५,६,८—मनि ; २,७—मति

२।२७।३ दुइ के चारि माँगि मकु लेहू । ... ३,६,७,८—मकु ; ४, ५—किन ; २—बरु

२।२७।६	बेद पुरान बिदित मनु गाए।	... १,७,८–मनु ; ३,४,५,६–मुनि
२।२७।७	सुकृत सनेह अवधि रघुराई।	... २,३,४,५,६,७–अवधि ; ⑧ अवध
२।२७।८	बात दिढ़ाइ कुमति हँसि बोली।	... ३,४,५,७–दिढ़ाइ ; २, ६, ८–दढ़ाइ
२।२७।८	कुमति कुबिहग कुलह जनु खोली।	२,३,४,५,६–कुबिहग ; ७,८–कुबिहंग
२।२८।१	सुनहु प्रान प्रिय भावत जी का।	... २,३,४,५,७–सुनहु ; ६, ⑧ सुनहुँ
२।३०।५	भीर प्रतीत प्रीति करि हाती।	... २,६,७,८–भीर ; ३,४,५–भीव
२।३१।५	अजहुँ हृदय जरत तेहि आँचा।	... २,३,४,५,६,७,८–तेहि ; (ते)
२।३२।६	मोहि न बहुत परपंच सुहाही।	... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–प्रपंच
२।३३।५	लखी नरेस बात सब साची।	... २,३,४,५,६,७–सब ; ८–फुरि ; (फुर)
२।३५।१	चहत न भरत भूपतहि भोरे।	... २,३,६,८–भूपतहिं ; ४,५,७–भूप पद
२।३५।८	मारसि गाइ नहारू लागी।	... २,३,६,८–नहारू ; ७–नाहरू ; ४,५–नहारुहि
२।३६।६	पढ़हिँ भाट गुन गावहिँ गायक।...	२, ३, ४,५, ६, ७, ८–पढ़हिँ ; (पढहि)
२।३७	आगेउ अजहुँ न अवधपति, कारनु कवनु बिसेषि।	२,३,६,८–आगेउ ; ४,५,७–जागे
२।४१।४	तेउ न पाय अस समउ चुकाही।...	२, ४, ५, ७–पाइ अस ; ६, ⑧ पाइअ समय ; ३–पाय न समउ
२।४१।८	आते मोहि न कहत कछु राऊ।	... ३–आते ; २,६,८–आतें ; ४,५, ७–ताते

२।१४२	चलइ जोंक जल बक्र गति, जद्यपि सलिलु समान ।	... २,३,४,६,७,८–जल; ५–जिमि
२।१४६।७	सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ।	... ८–अगहु ; ३,४,५,७–अगम ; २,६–अगमु
२।१४७।८	राम भरत कहुँ परम पिआरे ।	... २,६–परम ; ३,४,५,७,८–प्रान
२।१४८	चंदु चवइ बरु अनल कन, सुधा होइ बिष तूल ।	... २,३,५,६,८–चवइ ; ४,७–चुवइ
२।१४६।१	सोक कलंक कोठि जनि होहू ।	... ६,८–कोठि ; ३,४,५,७–कोटि ; २–कोपि
२।१५०।८	मिटा सोचु जनि राखै राऊ ।	... २,३,६,८–मिटा ; ४,५,७–हरै;
२।१५१	नव गयंदु रघुबीर मनु, राजु अलान समान ।	२,३,४,६,८–रघुबीर मनु; ५,७– ... रघुबंस मनि
२।१५२।८	जनि सनेह बस डरपसि भोरेँ ।	... ३,५–भोरें; २ ४,६,७,८–भोरे
२।१५६।६	परम अभागिनि आपुहि जानी ।	... २,३,४,५,८–जानी ; ७–मानी (यह अर्धाली काशिराज में नहीं है)
२।१५९।५	सुरसर सुभग बनज बन चारी ।	... २, ३, ४, ५. ६, ७, ८–सुरसर ; (सुरसरि)
२।१६०।८	कहौं सुभाव सपथ सत मोही ।	... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–सुभाय ; (सुभाव)
२।१६१।१	मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी ।	... २,६,८–प्रवान; ३,४,५,७–प्रमान
२।१६४।३	प्रिय बिनु तिअहि तरनिहु ते ताते ।	... २,३,४,५ ६,–तिअहि ; ७–तिय
२।१६६	राखिअ अवध जो अवधि लगि, रहत जानिअहि प्रान ।	२,३,४,५,६,७,८–जानिअहि; (न ... जानिअ)
२।१६८।४	सेवा समय दइअ बनु दीन्हा ।	... ३,४,५–दइअ ; २,६,८–दैअ ; ७–दैव
२।१६८।४	मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ।	... २,६,८–सफल; ३,४,५,७ सुफल
२।१७२।५	पूँछे मातु मलिन मनु देखी ।	... २,३,४,६,८–पूंछे ; ५–पूछेउ ; ७–पूछा

२।७४।२	राम बिमुख सुत ते हित जानी ।	... ३,४,५,८–जानी ; २,४,७–हानी
२।७४।४	सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू ।	... ३,७,८–बड़ फल ; २,४,५,६–फल सुत
२।७५	उपदेस यहु जेहि तात तुम्हरे, राम सिय सुख पावहीं	... ४,७–जात ; २,३,५,६,८–तात
२।७५	तुलसी प्रभुहि सिख देइ, आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।	२, ३, ४, ६, ७, ८–प्रभुहि; ५–सुतहि
२।७७।२	लखी राम रुख रहत न जाने ।	... २,३,४,६,७,८–लखी ; ५ लखा
२।७८।८	चले जनक जननी सिर नाई ।	... २,३,६,७,८–जननी ; ४,५–जननिहिं
२।७७।४	मीत पुनीत प्रेम परितोषे ।	... २,३,६,८–परितोषे : ४,५,७–परिपोषे
२।८३।२	नगर सफलु बन गहबर भारी ।	... २,५,६,७,८–सफलु; ३,४–सकल
२।८८।८	दोना भरि भरि राखेसि पानी ।	... ३,८–पानी; २,४,५,६, ७–आनी
२।८९।४	कटि भाथी सर चाप चढ़ाई ।	... २,६,८–माथी ; ३,४,५,७–माथा
२।८९।७	सुरपति सदनु न पटतर पावा ।	... २,३,४,५,६,७–पावा ; ८–आवा
२।९०।७	सोवति महि बिधि बाम न केही ।	... २,३,६,४,५,७–सोवति;८–सोवत
२।९३।२	जागे जग मंगल सुख दातारा ।	.. ६,७,८–सुखदारा; २, ३,४,५–दातारा
२।९४।२	तात धरमु मगु तुम्ह सबु सोधा ।	... २,३,४,५,६,७–मगु ; ८–मतु
२।९७।१	नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ।	३, ८–मिलित ; २,४,५,६,७–मिलत
२।९७।२	सुख निधान अस पितुगृह मोरे ।	... ३,४,५,८–पितुगृह ; २,६,७–माइक
२।९७।६	मोहि केउ सपनेहु सुखद न लागा ।	.. ७–केउ ; ३,४,५–सब ; २,६,८–कोउ ;
२।९८	मोरि सोचु जनि करिअ कछु, मैं बन सुखी सुभायँ ।	... ४,५,८–मोरि ; २,३,६,७–मोर

२।९९।१ प्रजा मातु पितु जीहहिं कैसे। ..	४,५,६–जीहहिँ; २,७–जीवहिं; ३,८–जिइहहिं
२।१००।२ होत बिलंबु उतारहि पारू। ...	२,३,४,५,६,७–उतारहिं; ८–उतारिहि
२।१०१।४ जेहिं जग किए तिहुँ पगहु ते थोरा।	२,३,४,५,६,७–किय; ८–किये
२।१०३।८ करि परितोषु बिदा सब कीन्हे। ...	२,३,४,५,६–सब; ७,८–तब
२।१०५।८ मुनि मन मोद न कछु कहि जाई।...	२,३,४,५,६,७–मोद; ⓒ मोह
२।१०६।३ अति लालसा सबहिं मन माहीं। ...	२,३,४,५,७–सबहि; ६,८–बसहिं
२।११०।८ सोच सनेह बिकल नर नारी। ...	२,३,४,५,६,७–सोच; ८–होहिं
२।१११।५ जोतिष झूँठ हमारें भाएँ। ...	२, ३, ४, ५, ६–हमारें; ७,८–हमारेहिं
२।११५।८ इन्ह ते लहि दुति मरकत सोने। ...	२,३,४,५,८–एन्ह ते लहि; ६–एन्ह ते लही; ७–इन्ह ते लहि
२।११७।७ बिधि निधि दीन्हि लेत जनु छीने।...	२,३,६–दीन्हि; ४,५,७,८–दीन्ह
२।१२०।२ गहबरि हृदय कहहिं मृदु बानी।...	२,४,५,६–कहहिँ; ८–कहइ बर; ३,७–कहहि बर
२।१२१।३ दीन्ह हमहि जो इहँ लोचन लाहू। ...	३,५–जेहिँ २,४,६,७–जेहि; ८–जेइ
२।१२३।१ बसहिं लषनु सिय रामु बटाऊ। ...	२,३,४,५,६,७–बसहिँ; ८–बसहुँ
२।१२६।५ चितानंद मय देह तुम्हारी। ...	३–चितानंद; २,४,५,६,७,८–चिदानंद
२।१२८ मुकुताहल गुन गन चुनइ, राम बसहु मन तासु।	२,३,४,५,६,–मन; ७,८–हिय
२।१२९।१ काम कोह मद मान न मोहा। ...	२,३,६–कोह; ⓒ मोह; ४,५,७–कोध

२।११०।६ सब तजि तुम्हहि रहइ लउ लाई। ... २,३,६–लउ ; ४ लौ ; ५–लै ; ७–लय ; ⑧ उर

२।११२।६ चले सहित सुरथपति प्रधाना। ... २,६,७,८–सुरथपति ; ३,४,५–सुरपति परधाना

२।१३५।५ हम सब भाँति करब सेवकाई। ... २,४,५,६,७,८–करब ; ३–करवि

२।१३५।७ जहँ तह तुम्हहि अहेर खेलाउब। ... २,३,४,६–जहँतहँ;५,७,८–तहँ तहँ

२।१३६।७ मनहु बिबुध बन परिहरि आए। ... २,३,४,५,६,७–बिबुध; ८–बिबिध बन

२।१३८।६ कहि न सकहिं सुख भा जसि कानन। २,४,७–सुख भा ; ३,५,६,८–सुखमा ; (सुषमा)

२।१३९।६ असनु अमिअ सम कंद मूल फर। २,३,४,५६,७,८–फर ; ५–फल

२।१४१।८ जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं। ... २,३,४,५,६,७,८–जनु ; जिमि

२।१४२।६ अड़ुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे।... २,३,६,८–अड़ुकि; ४,५–अटकि; ७–उड़ुकि

२।१४३।४ रही न अंतहु अधमु सरीरू। ... ३–रही न ; २,४,५,६,७,८–रहिहि न

२।१४७।२ कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा।... ३,४,५,७–जेहि तेहि ; २,६,८–तेहि तेहि

२।१४७।३ कौसल्या गृह गईं लवाई। ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–लवाई ; (लेवाई)

२।१४८।७ राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू। ... २,३,४,५,६,७–राज ; ८–राउ

२।१५० प्रथम बासु तमसा भयउ,
दूसर सुरसरि तीर। २,३,४,५,६–दूसर ; ७,८–दूसरि

२।१५१।१ तात सुनाएउ बिनती मोरी। ... ३–सुनाएउ ; २,४,५,७,८–सुनायेहु ; ६–सुनायेउ

२।१५१।५ ओर निबाहेहु भायप भाई। ... २,३,४,५,६,८–ओर ; ७–और ; (अउर)

२।१५२।३ जिअत फिरेउँ सोइ राम संदेसू। ..	२,३,६,७–फिरेउँ; ८–फिरउँ; ४,५–फिरेउ
२।१५४ तलफत मीन मलीन जनु, सीँचेउ सीतल बारि। ...	२, ४, ५-सीँचेउ; ३, ६, ७–सींचेउ; ८–सींचत
२।१५४।६ सो तनु राखि करबि मैँ काहा। ...	२,३,४,५,६,७,८–करबि, (करब)
२।१५५।२ राम बिरह भरि मरनु सँवारा। ...	३,४,५–मरि; २,६,७,८–करि
२।१५७।४ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा। ...	२, ३, ४, ५, ७, ८–करारा; ६–कराला
२।१६०।२ तात राउ नहिँ सोचइ जोगू। ...	२,३,६,८–सोचइ; ४, ५, ७–सोचन
२।१६१।७ मे अति अहित रामु तेउ तोही। ...	२,३, ५, ६, ८–तेउ, (तेइ) ७–ते; ४–प्रिय तेहीँ
२।१६५।१ मुख प्रसन्न मनु राग न रोषू। ...	३,७–राग न रोषू; २,६,८–रंग न रोषू; ४,५–हरष न रोषू
२।१६७ जे परिहरि हरिहर चरन, भजहिँ भूत घनघोर। ..	३–भूत घनघोर; २,४,५,६,७,८–भूत गन घोर
२।१६८।१ राम प्रानहु ते प्रान तुम्हारे। ...	२,३,६,८–प्रानहु ते; ४,५,७–प्रान तेँ
२।१६८।२ बिधु बिष चवइ स्रवइ हिमु आगी। ...	३,४,५,८–चवइ;७–चुवइ;२,६–बमइ।
२।१६६ उठे भरत गुर बचन सुनि, करन कहेउ सब साजु। ...	२,३,६,८–साजु; ४,५७–काजु
२।१७१।६ सोचिय सूद्र बिप्र अवमानी। ...	२,३,६,८–अवमानी; ४,५,७–अपमानी
२।१७३।५ करहु तात पितु बचनु प्रवाना। ...	२, ३, ६, ८–प्रवाना; ४,५,७–प्रमाना
२।१७४।२ बेद बिहित संमत सब ही का। ...	२, ४, ५, ६,७–बिहित; ३,८–बिदित

२।१७४।७ मरम तुम्हार राम कर जानिहिं । ...	२,५,७—मरम; ३, ४—प्रेम; ६, ⑧ परम
२।१७५।२ बन रघुपति सुरपुर नरनाहू । ...	३,४,५,७—सुरपुर ; २,६, ⑧ सुरपति
२।१७६।२ मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । ...	२,३,४,५,६,८—धरि; ७ पुनि
२।१७७।२ मैं अनुमानि दीखि मन माहीं ।...	२,३,६,८—दीखि ; ४,५,७—दीख
२।१७८।२ रसा रसातल जाइहि तबहीं । ...	२,३,४,५,६,७—रसा ; ८—राजु
२।१७८।५ बैठ बात सब सुनउँ सचेतू । ...	२,३,४,६,७—बैठ; (बैठि)
२।१७९।१ कैकेई भव तनु अनुरागे, पाँवर प्रान...। ...	२,३,४, ५—तनु...पाँवर; ६,८—तनु, पावन; २—पावन; ७—तनु ते पाँवर
२।१८० तेहि पिआइअ बारुनी, कहहु कवन उपचार । ...	२,३,६—तेहि; ४,५,७—ताहि; ⑧ तोहि; ३,४,५,७—कवन; २, ६—कौन; ८—काह
२।१८०।३ राय राजु सबही कहँ नीका । ...	२, ३, ४, ५, ७—राजु सब ही कहँ; ६—रजायसु सबही, ८—रजायसु सब कहँ
२।१८१।२ कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं । ...	२, ३, ४, ५,६,८—कहिहि; ७—कहहि
२।१८१।५ डरु न मोहि जगु कहिहि कि पोचू ।	२,३,५,६,७—कहहि ; ८—कहिहि
२।१८३।७ बसहिँ कलप सत नरक निकेता ।...	२, ३, ४, ५, ६, ७, ८—बसहिँ; (बसिहि)
२।१८५ सनमुख होत जो रामपद, करइ न सहस सहाइ । ...	३,६,८—सहस; २,४,५,७—सहज
२।१८५।१ हरषु हृदय परभात पयाना । ...	२, ३, ४,५, ६, ७, ८—परभात; (प्रभात)
२।१८५।७ जो जेहि लायक सो तहँ राखा । ...	२, ४, ५, ७—तहँ; ३,६,८—तेहि

२।१८६।१ बहुत प्रात उर आरत भारी। ... २,३,४,५,७–चहत; ६ⓒ चलत

२।१८६।५ अब धनी अब अगिनि समाऊ।... राऊ ... २,३,६,८–समाऊ; (सुभाऊ··· राऊ) ४,५,७–समाजू...राजू

२।१८७ सौंपि नगर सुचि सेवकनि, सादर सबहि चलाइ। ... २,३,४,५,६,७–सबहिं; ८–सकल

२।१८९।५ स्वामि काज करिहहुँ रन रारी। ... ३–करिहहुँ; ८–करिहहु; २,४, ५,६–करिहउँ; ७–करिहौं

२।१८९।५ अस धवलिहहुँ भुअन दसचारी। ... ३–धवलिहहुँ; २,४,५,६,८– धवलिहउँ; ७–धवलिहौं।

२।१९०।४ भाथी बाँधि चढ़ाइन्हि धनुही। ... २,३,५,६,८–भाथी; ४,७–माथा २,३,४,५,७–धनुही; ६,८-धनही

२।१९३।५ राम राम कहि जे जमुहाहीं। ... २,३,६–जमुहाही; ४,५,७,८– जमुहाहीं

२।१९४ रामु कहत पावन परम, होत भुअन बिख्यात। ... २,३,४,५,६,७–पावन; ८–पाँवर

२।१९५।७ भेंटेउ राम भद्र भरि बाहू। ... २,३,४,५,८–भद्र; ७–चंद्र; ६–भाइ

२।१९६।१ भे सनेह सब अंग सिथिल तब। ... ४,५,७–बस; २,३,६,८–सब

२।१९६।२ जनु तनु धरे बिनय अनुरागू। ... २,३,४,५,७–तनु; ६,८–धनु; ३–विषय अनुरागू

२।१९६।३ दीख आइ जग पावनि गंगा। ... २,३,४,५,६,७–दीख; ⓒ दीखु

२।१९७।२ गुर सेवा करि आयसु पाई। ... २, ३, ४, ५, ६–गुर; ७ गुरु; ८–सुर

२।१९८।५ अथा अवध नर नारि मलीना। ... २,३,४,५,७–मलीना; ६,ⓒ– बिलीना

२।१९९ बिहरत हृदउ न हहरि हर, पबि ते कठिन बिसेषि। ... २,३,४,५,६,७–पबि; ⓒ पवि

२।१९९।३ मै न माइ अस अहहिं न होने । ... ३,४ ५,७—अस ; २,⑧ ऐसे

२।१९९।८ सादर कोटि कोटि सत सेषा । ... ३,८—आदर ; २,४,५,६,७—सारद

२।२००।६ साँइ दोह मोहि कीन्ह कुमाता । ... २,३,६,८—सांइ दोह ; ५—साँइ द्रोहि ; ४,७—साँईं द्रोह

२।२००।८ यह निरजोसु दोसु बिधि बामहि । ... २,३,४,६,८—निरजोसु; ५—निरजोसु; ७—निरदोस

२।२०४।१ जानहुँ राम कुटिल करि मोही । ... २,३,४,६,८—जानहु; ५,७—जानहि

२।२०५।४ मूरतिवंत भाग्य निज लेखे । ... २,४,५,७—मूरतिवंत ; ३,६,८—मूरति मंत

२।२०६।४ राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई । ... २,४,५,६,७,८—बोलाई ; ३—बलाई

२।२०७।३ प्रेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं । ... ४,५,७—प्रेमपात्र : २,३,६,८—प्रेमपात्रु

२।२०८ राम भगति रस सिद्धि हित, भा यह समउ गनेसु ... २,३,४,५,६,७—सिद्धि ; ८—सिद्ध

२।२०८।५ गुर अवमान दोष नहिँ दूषा । ... २,३,६—अवमान ; ४,५,७,८—अपमान

२।२०८।६ कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहू । ... २,३, ६, ७—कीन्हिहु; ४,५,८—कीन्हेहु; (कीन्हेउ)

२।२०९।१ कीरति बिधु तुम्ह कीन्हि अनूपा । ... २, ३, ६—कीन्हि ; ४,५,७,८—कीन्ह

२।२०९।६ भरतु धन्य तुम्ह जगु जसु जयऊ ।... २,४,५,७,८,—जगु जसु ; ३,६—जसु जगु

२।२१०।५ पितहु मरन कर नाहिन सोकू । ... २,७—नाहिन; ३, ४, ५, ६, ८—मोहि न

२।२११।६ मिटइ कुजोगु रामु फिरि आए । ... २,५,६,८—कुजोगु ; ३,४,७—कुरोग ।

२।२१३।४ अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । ... २,३,४,५,६,८—रचेउ; ७—रचे

२।२१७ रामु सकोची प्रेम बस, भरतु सुपेम पयोधि।	... ३,६–सुपेम; २,४,५,७–सुप्रेम; ८–सपेम
२।२१७ बनी बात बेगरन चहत......	... २, ३, ६–बेगरन; ४, ५, ७,८–बिगरन
२।२१८।३ गहहिँ न पाप पुंजु गुनु दोषू।	.. ३,८–पुनु; ४,५,७–पुन्य;२,६–पूनु
२।२२१।५ कहहिँ सकल तोहि सम न सयानी।	.. २,३,४,५,६,७–तोहि; ८–तेहि
२।२२४।६ सीय समेत बसहिँ दोउ बीरा।	... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–समेत; (समीप)
२।२२६ तुलसी उठे अवलोकि कारनु, काह चित सचकित रहे।	... २,३,६,८–चित सचकित; ४,५–चित चकित; ७–चित चक्कित।
२।२२६।८ आपनि समुझि कहइ अनुगामी।	२,३,४,५,६–कहइ; ७–कहौं; ८–कहउँ
२।२२८।७ भरत हमहिँ उपचारा न थोरा।	. २,६–उपचरा; ३, ४, ५, ७,८–उपचार
२।२२९ छत्र जाति रघुकुल जनमु, राम अनुज जगु जान।	... २, ३,४,६–छत्र; ५,७,८–छत्रि; २,३,४,५,७–अनुज; ६,८–अनुग
२।२३०।७ जो अँचवत नृप मातहि तेई।	... २,३,६,७–नृप मातहि; ४,५,८–मातहिं नृप
२।२३०।७ नाहिन साधु सभा जेहिँ सेई।	... २,३,६,७,८–जेहि ँ; ४,५–जेइ
२।२३१।२ मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई।	... २,३,४,५,६,८–मकु; ७–बरु
२।२३३ मातु मते महुँ मानि मोहि, जो कछु करहिँ सो थोर।	... २,३,४,५,६,७,८–मानि,(जानि) २, ३, ४, ५, ६, ७–करहिँ; ८–कहहिं
२।२३३।२ मोरे सरन राम की पनहीं।	... २,४,५–राम; ३,६,७,८–रामहिँ
२।२३३।५ फेरत मनहिँ मातु कृत खोरी।	... २,३,४,५,६,७–मनहिं; ८–मनहु
२।२३६।३ तिन्ह तरु बरन्ह मध्य बटु सोहा।	... २,३,४,५,६,७–तिन्ह; ८–जिन्ह

२।२३६।४ अविरल छाँह सुखद सब काला। ...	३,६,८—अविरल; २,४,५,७—अविचल
२।२३८।८ जिअ की जरनि हरत हँसि हेरत। ...	३,५,७,८—हरत, २,६—मनहु; ४—हिय को जरनि हरत
२।२३९।४ बंधु सनेह सरस इहि ओरा, उत साहिब सेवा बस जोरा। ...	२, ३,४,५,६, ८—सरस एहि; ७—सरिस यहि ३, ४,५,७—बर; २,६,८—बस
२।२४० भरत राम की मिलन लखि, बिसरा सबहि अपान। ...	३,७—बिसरा; २,४,५,६,८—बिसरे
२।२४१ भूरि भायँ भेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम।	२,३,६,८—भायँ, ४, ५—भाय ; ७—भाग
२।२४६।७ सहित समाज सुसरित नहाए। ...	२, ३, ४, ५, ६, ७, ८—सुसरित; (सुरसरित)
२।२४७।४ बोले गुर सन राम पिरीते। ..	३,४,५,७,८—राम ; २,६—मातु ; (भरत)
२।२५१ तुलसी कृपा रघुबंस बनि, की लोह लै लौका तिरा।	३,६,८—लौका ; २,४,५,७—नौका
२।२५१।१ पुर नर नारि मगन अति प्रीती। ..	२,३,४,५,७—पुर नर नारि ; ६, ८—पुरजन नारि
२।२५२ निसि न नींद नहिं भूष दिन, भरतु बिकल सुठि सोच।	२,३,४,५,६,७—सुठि ; ८—सुचि
२।२५२।६ इर गिरि ते गुरु सेवक धरमू। ...	३,४,५,६,७,८—इर ; २—है।
२।२५६।३ गा चह पार जतनु हिय हेरा। ...	३,४,५,६,७,८—हिय , २—हिये ; (बहु)
२।२५६।४ सरसी सीपि कि सिंधु समाई। ...	२,६,८—सरसी सीपि; ३,४,५,७—सर सीपी
२।२५७।१ सुकं कुआरिहि आपन दाऊ। ...	२, ३, ४, ५, ६, ७—आपन, ८—आपुन

२।२६०।४ मुकुता प्रसव कि संबुक काली।	२,३,६,८–काली; ४,५,७–ताली
२।२६०।५ सपनेहु दोष कलेसु न काहू। …	२,४,५,७,८–कलेस ; ३, ६–कलेसु (क लेसु)
२।२६१।८ तबहिँ बिषम बिष तापस तीछी।…	२,६–तापस; ३,४,५,७,८–तामस
२।२६३ मिटिहइँ पाप प्रपंच सब,	२,३,४,५,६–मिटिहइ ; ७,८–मिटिहहिं
२।२६४।२ करत उपाउ बनत कछु नाहीँ।…	६,७–करत उपाय बनत ; ३,४,५,८–बनत उपाय करत
२।२६४ / २।२६६।२ / २।२६८।२ } प्रसन्न	३,४,५,७–प्रसन्न; २,६,८–प्रसंन
२।२६८।३ देव दीन्ह सबु मोहि अ भारू। …	२,३,६,८–मोहिअ भारू; ४, ५, ७–मोहि सिर भारू
२।२७१।५ किए बिस्राम न मगु महिपाला। …	४,५,८–किए ; २,३,६–किये ; ७–किय
२।२७२।४ गनप गौरि तिपुरारि तमारी। …	२,३,६,८–गनप गौरि तिपुरारि; ४,५,७–गनपति गौरि पुरारि
२।२७६ अवगाहि सोक समुद्र सोचहिँ …	२,३,४,५,६–सोक ; ७–शोक ; ८–सोच
२।२७९ पूजि पितर सुर अतिथि, गुर लगे करन फलहार। …	२, ३, ४, ५,६,७, ८–फलहार; (फरहार)
२।२८०।६ सीलु सनेहु सकल दुहुँ ओरा। …	२,३,४, ६, ८–सकल; ५,७–सरस
२।२८१।४ जो सुभ असुभ सकल फल दाता।…	२,३,४,५,६,८–जौ ; ७–सो
२।२८२।१ सुत सुत बधू बिबुध सरि बारी। …	२, ३, ६–बिबुध ; ४,५,७,८–देवसरि
२।२८४ हमरेँ तौ अब ईस गति, कै मिथिलेसु सहाय। …	३,४,५,७–तौ ; २,६,८–सब भूप

२।२८५।६ सिय सनेह बढ़ु बाढ़त जोहा। ...	२,३,४,५,६,७–सनेह; ⑧ समेत
२।२८५।८ मोह मगन मति नहिँ बिदेह की।	२,३,४,५,६,७–मति ; ⑧ अति
२।२८६।५ सोच सकुच महुँ मनहुँ समानी। ...	२,६,७–सकुच महुँ ; (सकुचि महि) ; ३,४,५–सकुच महि ; ८–सकुचि महु
२।२८८।४ बहुरहिँ लषन भरतु बन जाहीं। ...	२,३,४,५, ६, ७–बहुरहि, ⑧ बर नहिं
२।२८८।६ जद्यपि रामु सीम समता की। ...	३–सीम ; २,४,५,७–सीँव ; ६,⑧ सीय
२।२९१।४ प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई। ...	४,५,७–बढ़ाई ; २,३,६, ⑧ बड़ाई
२।२९२ संकट सहत सँकोच बस, कहिअ जो आपसु देहु।	२,३,४,५,६, ७–संकट ; ⑧ संकत
२।२९३।४ भूप भरतु मुनि साधु समाजू। ...	२,३,४,५,६,७,८–साधु; (सहित)
२।२९४।६ चंदिनि कर कि चंड करजोरी। ...	२,६,८–चंड करचोरी ; ३,८–चंद कर चोरी ; ४, ५–चंद्र कर चोरी
२।२९८।५ आपु समान साज सब साजी। ...	४, ५, ७–समान ; २,३,६,८–समाज
२।३०० आपसु देइअ देव अब, सबइ सुधारिअ मोरि। ...	३–सुधारिअ ; ७–सुधारिय ; २,४,५,६,८–सुधारी
२।३०२ भरत जनकु मुनिगन सचिव, साधु सचेत बिहाय। ...	२,३,४,५,६,७–मुनिगन ; ८–मुनिजन
२।३०४।३ तुम्हहि बिदित सबही कर मरमू। ...	३–मरमू ; २, ४, ५, ६, ७,८–करमू
२।३०४।६ नतरु प्रजा पुरजन परिवारू। ...	२,३,४,५,६–पुरजन ; ७,८ परिजन

२।३०५।४ साधन एक सकल सिधि देनी, कीरति सुगति भूमिमय बेनी।	१,४,५,७—साधन ; १,६, ⑥ साधक ; (भूमिमय) ; २,३,४, ५,६,७,८—भूतिमय
२।३०६।८ सो अवलंब देव मोहि देई। ...	२,३,६,८—देउ ; ४,५,७—देव
२।३१०।५ कटुक कठोर कुवस्तु दुराई। ...	३,४,५,७—कटुक ; १,६,८—कटु
२।३१२।७ मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू। ...	३,८—सहेउ सबहि ; २,४,५,६—सबहि सहेउ ; ७—सहेउ सकल
२।३१३।१ सब सुचि सरस सनेह सगाई। ...	२,६,८—सुचि ; ३,४,५,७—रुचि सरस
२।३१४।५ चलेहु कुमग पग परै न खाले॑। ...	२,३,४,५, ६, ७, ८—चलेहु···· परहिं ; (चलत)
२।३१५।५ जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के। ...	२,३,४,५,७,८—जामिक ; ६—जामिनि
२।३२२।३ करि प्रनाम बर विनय निहोरे। ...	२,३,४,५,६,७—बर ; ८—बय
२।३२४।१ घट न तेजु बलु मुख छबि सोई। ...	४,५,७ में भा० का पाठ है ; ८—घटइ तेजु बल मुख छबि सोई; ६—घटइ तेजु बल सुख छबि सोई; २—घटत न तेजु बल मुख छबि सोई
२।३२५ माँगि माँगि आयसु करत, राज काज बहुँ भाँति। ..	२,५,६—चहुँ ; ३,४,७,८—बहु

आरण्य कांड

३।श्लो०।१	मोहांभोधर पूग पाटन···	१,२,३,४,५,६–पूग ; ७–पुञ्ज
३।०।१	पुर बर भरत प्रीति मैं गाई। ...	१,२,३,४,५,६–पुर नर; (पूरन); ७–पुरजन
३।१।१	चला भाजि बायस भय पावा। ...	१,२,३,४,५,६–भाजि ; ७–भागि
३।१।८	सब जगु ताहि अनलहु ते ताता।...	१,२,३,४,६,७–ताहि ; ५–तेहि ; १,२,३,६–अनलहु ; ७–अनल ; ४,५–अनलहुँ
३।२।१	चरित किए श्रुति सुधा समाना। ...	१,२,३,४,५,७–श्रुति ; ६–अति
३।२	त्वदंघ्रि मूल ये नराः।···मत्सराः	१,४,५–नराः··मत्सराः ; २,३,६,७–नरा मत्सरा
३।३	त्वदीय भक्ति संयुताः।	१,३,४–संयुताः ; २ संयुता ; ५,६–संयुतां ; ७–संयुतं
३।४।२	आसिष देइ निकट बैठाई।	१,२,३,४,५,६–देइ; ७–दीन्ह
३।४।४	कह रिषि बधू सरस मृदु बानी। ..	१,२,४,५,६–सरस ; ३,७–सरल
३।४।५	मित प्रद सब सुनु राजकुमारी। ...	१,२,३,४,५,६–मित प्रद सब ; ७–मित सुख प्रद
३।४।७	आपद काल परिखिअहि चारी। ···	१,२,३,४,५,६–परिखिअहि; ७–परिखियहि ; (परखिअहि)
३।४।८	बृद्ध रोग बस जड़ धनहीना। ...	१,२,३,४,५,६,७–जड़
३।४।१४	सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई। ...	१,२,३,४,५,६–सो ; ७–ते
३।४।१६	पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई। ...	१,३,४,५–जन्म ; २,६–जन्मि ; ७–जनम
३।५।२	आयसु होइ जाउँ बन आना। ...	१,२,३,४,५,६–होइ ; ७–होउ
३।५।७	भजी तुम्हहि सब देव बिहाई। ...	१,२,३,६,७–भजी ; ४,५–भजिय
३।५।९	केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी।	१,२,३,६–कहौं जाहु अब ; ४,५,७–कहौं जाहु बन

३।६।२ आगे राम अनुज पुनि पाछे।…काछे।	१,२,३,४,५,६—अनुज ; ७—लषन ; १,२,३, ४, ६—काछे ; ५,७—आछे
३।६।३ उभय बीच श्री सोहइ कैसी। …	१,२,३,४,५,६—श्री सोहइ ; ७—श्री सोहति; (सिय सोहति,)
३।६।४ पति पहिचानि देहिँ बर बाटा। …	१,२,३,४,५,६—बर ; ७—सब
३ २क।७ सबदरसी तुम्ह अंतरजामी। …	१,२,३,४,७-सबदरसी; ५,६—समदरसी; १,२,३,४,५,६—तुम्ह; ७—हर
३।३क सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि, आइ जाइ सुख दीन्ह। …	१, २—आश्रमहि; ३, ४, ५—आश्रमन्हि; ६,७—आश्रम
३।३क।१ मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। …	१, ३, ४,५,६,७—अगस्ति; २—अगस्त्य
३।३क।१ नाम सुतीछन रति भगवाना। …	१,३,४,५—सुतीछन;७—सुतीच्छन, २,६—सुतीच्छण
३।३क।४ है बिधि दीनबंधु रघुराया। …	१,२,५,६—है बिधि, ३,४,७—हे बिधि
३।३क।१२ कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई। …	१,२,३,६—पुनि; ४,५,७—चलि
३।३क।१७ जाग न ध्यान जनित सुख पावा। ..	१,२,३,४,५,७—जाग; ६—जान
३।४क।८ हर हृद मानस बाल मरालं। …	१,२,३,४,५,७—बाल ; ६—राज
३।४क।१८ बसतु मनसि मम कानन चारी। …	१,२,३,६—बसतु ; ४,५,७—बसहु
३।४क।२० जो कोसल पति राजिव नयना। ..	१,२,३,४,५,६,७—जो; (सो) १,२,६,७—नयना ; ३,४,५—नैना
३।४क।२४ समुझि न परै झूठ का साँचा। …	१,२,३,४,५,७-झूठ का साचा ; ६—कुठ का साचा
३।५क।१ एवमस्तु करि रमानिवासा। …	१, २—करि ; ३, ४, ५, ६, ७—कहि

३।५क।६ सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए। ...	१,२,३,४,५,७–धाए; ६–धाय
३।६क मुनि समूह महँ बैठे, सन्मुख सब की ओर।	... १, २, ४, ५, ७–महँ; ३–मह; ६–मो
३।६क।१ जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही। ...	१,२,३,४,५,६–मुनि द्रोही; ७–सुर द्रोही
३।६क।६ ऊमरि तरु बिसाल तव माया। ...	१, २, ३, ४, ५,६–ऊमरि; ७–डूमरि
३।६क।८ तव भय डरत सदा सोउ काला। ...	१,२,३,४,५,६–भय; ७–डर
३।६क।१० बसहु हृदय श्री अनुज समेता। ...	१, ३, ४, ५, ६–श्री; २–स्री; ७–सिय।
३।७ गीध राज सैं भेंट भइ, बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ।	... १, २, ३, ४, ५,७– बढ़ाइ; ६–दृढ़ाइ
३।८ ईस्वर जीव भेद प्रभु, सकल कहौं समुझाइ।	... १, २, ३–जीव; ४, ५, ६, ७–जीवहिं; १,२,३,४,५,६,७–कहहु (कहौ)
३।८।३ सो सब माया जानेहु भाई।	... १,२,३,४,५,७–सब; ६–सभ
३।८।४ बिद्या अपर अबिद्या दोऊ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–अपर; ६–अपार
३।६।६ निज निज कर्म निरत श्रुति रीती। ...	१,२, ३, ४, ५–कर्म; ६–धर्म; ७–धरम २–स्रुति;
३।६।७ यह कर फल मन बिषय बिरागा। ...	१,२–मन; ३,४,५,६,७–पुनि
३।६।७ तब मम धर्म उपज अनुरागा। ..	१,२,३,४,५,६–धर्म; ७ चरन
३।१० बचन कर्म मन मोरि गति, भजनु करहिँ निःकाम।	... १.३, ४, ५,७–निःकाम; २,६–निष्काम; (निहकाम)
३।१०।६ होइ बिकल सक मन नहिँ रोकी।	१, २, ३,६,७–सक; ४,५–सकि; १,२–मन नहि; ३,४,५,६,७–मनहि न

३।१०।८ यह संजोग बिधि रचा बिचारी। ...	३, ४, ५–यह; १, २, ६–येह; ७–अस
३।१०।१० ताते॑ अब लगि रहिउँ कुमारी।...	१, २. ३, ४, ५, ६, ७–रहिउँ; (रहेउँ) १, २, ३, ४, ५, ६–कुमारी; ७–कुँआरी
३।१०।११ अहै कुमार मोर लघु भ्राता। ...	१, ५, ६, ७–कुमार २,३,४–कुँआर
३।१०।१४ प्रभु समथ कोसलपुर राजा। ...	१,२,६–समथ; ३,४,५–समर्थ; ७–समरथ
३।१०।१६ लोभी असु चह चार गुमानी। ...	१, २, ३, ४,५,७–गुमानी; ६–गुनानी
३।११ ताके कर रावन कहँ, मनो चुनवती दीन्हि। ...	१,२,४,५–मनौ; ३, ६,७–मनहु; १,२,७–चुनवती; ३, ४, ५,६–चुनौती
३।११।२ खरदूषन पहि॑ गइ बिलपाता। ...	१,३,५,६–बिलपाता; २,४,७–बिलषाता।
३।११।४ धाए निसिचर निकर बरूथा। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–निकर; ६–बरन
३।१२ मरकत सयल पर लरत दामिनि, कोटि सो जुग भुजग ज्यौं। ...	१,२,४,५,६,७–सैल, ३–सयल १,२,३, ५, ६–लरत; ४, ७–लसत
३।१२ आइ गए बगमेल, धरहु धरहु धावत सुभट। ...	१, २, ३. ४, ५, ६–धावत; ७–धावहु
३।१२।३ देखे जिते हते हम केते। ...	१,२,३,४,५,७–हते ; ६–हने
३।१२।१२ जौं न होइ बल घर फिरि जाहू। ...	१,३,४,५,६,७–घर ; २–खर (गृह)
३।१३ उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए, बिकट भट रजनीचरा ...	१,२,४,५,६–धाए ; ३–धाये ; ७–धावहु

३।११	प्रभु कीन्हि धनुष टकोर, प्रथम कठोर घोर भयावहा।	... १,२,३,४,५,६–भयावहा ; ७–भयामहा
३।११।१	फुंकरत जनु बहु ब्याल।	... १,२,३,४,५,७–बहु ; ६–निज
३।११।६	आयुध अनेक प्रकार।	... १,३,४,५,७–प्रकार ; २, ६–अपार
३।११।११	खग कंक काक सृकाल।	... १,९–सृगाल ; ३,४,५–सृकाल ; ६,७–शृगाल
३।१४	कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत, पिसाच खर्प्पर संचहीं।	... १,२–खर्प्पर ; ६–खर्पर ; ३, ४, ५,७–खप्पर
३।१४।५	धुआँ देखि खरदूषन केरा।	... १,३,४,५–धुआँ ; २,६–धुआं ; ७–धुआ
३।१५।९	रूप रासि बिधि नारि सँवारी।	... १,२,३,४,५,६–नारि ; ७–रची
३।१५।१०	मुनि तव भगिनि करहिं परिहासा।	१,२,३,४,५–करहिं ; ६–करहि ; ७–करी
३।१६	सूपनखहि समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति	... १, २, ३, ४, ५,६,७–सूपनखहि ; (सूपनखइ)
३।१७	लछिमन गए बनहि जब, लेन मूल फल कंद।	१,२,३,४,५,६–मूल ; ७–फूल
३।१७।५	जो कछु चरित रचा भगवाना।	... १,२,३,४,५,७–रचा ; ६–रचेउ
३।१८।७	भइ मम कीट भृंग की नाईं।	... १,२,३,४,६,७–मम ; ५–मति ; १, २, ३, ४, ५, ६,७–की नाईं; (के नाईं)
३।१९।४	बेद बंदि कबि मानस गुनी।	... १,२,३,४,५–मानस ; ६, ७–मानस
३।२०	मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–धावत; (धाइहैं)
३।२०।११	माया मृग पाछे सोइ धावा।	... १,२–सोइ ; ३,४,५,६,७–सो

३।२०।१४ धरनि परेउ करि घोर पुकारा।	... १,२,३,४,५,६–परेउ ; ७–परा
३।२१।३ जाहु बेगि संकठ अति भ्राता।	... १,२,३,४,५,७–संकठ ; ६–कष्ट
३।२१।५ मरम बचन जब सीता बोला। ...मन डोला	... १, २, ३, ६, ७–बोला।... मन डोला; ४,५–बोली।...मति डोली
३।२१।९ इत उत चितइ चला भड़िहाईँ।	... १,२,३,४,५,६–भड़िहाईँ; ७–भड़िआई।
३।२१।१० रह न तेज तन बुधि बल लेसा।	... १,२,३,४,५,६–बल लेसा ; ७–लवलेसा
३।२१।११ नाना बिधि कहि कथा सुहाई।	... १,२,३,६–सुहाई ; ४,५–सोहाई; ७–सुनाई
३।२१।१२ बोलेहु बचन दुष्ट की नाईँ।	... १,२,३,४,५–बोलेहु; ७–बोलहु; ६–बोले
३।२१।१६ सुनत बचन दससीस रिसाना।	... १,२,६,७–रिसाना ; ३,४,५–लजाना
३।२२।१ हा जगदेक बीर रघुराया।	... १,३–जगदेक ; २–जग एक ; ६–जगदैक ; ७–जगदेव ; ४,५–जगदीस
३।२२।११ निर्भय चलेसि न जानेहि मोही।	... १,२,३,६,७–जानेहि ; ४, ५–जानेसि
३।२२ तब असोक पादप तर, राखिसि जतनु कराइ।	... १, २, ३, ६–राखिसि ; ४, ५–राखेसि ; ७–राखे
३।२३।३ मम मन सीता आश्रम नाहीँ।	... ३,४,५,६–में भा० का पाठ है;१, २–मम सीता आश्रम महुँ नाहीं; ७–मम मन आश्रम सीता नाहीँ।
३।२३।५ अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ। जहवाँ।	... १,२,३,४,५,७–तहवाँ.. जहवाँ, ६–तहाँ जहाँ
३।२३।१८ सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–जिन्ह ; (चिन्ह)

३।२४।२	तेहिं खल जनक सुता हरि लीन्ही। ...	१,२,४,५,६–तेहि ; ३-तेहिं; (तेइ)
३।२६	जो राम मंत्र जपंत ...	... १,२,३,४,५–जे ; ६,७–जो
३।२६	जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक ...	१,२,३,४,५,६–निरंजन ; ७–निरंतर।
३।२६	पस्यंति जं जोगी जतनु करि, करत मन गो बस सदा।	... १,२,३,४,५–सदा ; ६,७–अदा
३।२७	मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव।	... १,२,३,४,५,६,७–कर; (गुर)
३।२७	मोहि समेत बिरंचि सिव, बस ताके सब देव।	... १,२,५,६–ताकें; ३,४,७–ताके, (तेहि कइ)
३।२८।३	तिन्ह महँ मैं अति मंद अघारी। ...	१,२,३,६–अति; ४,५,७–मति
३।२८।६	भगति हीन नर सोहै कैसा।...जैसा	१,२,३, ४, ५, ६–कैसा...जैसा; ७–कैसे...जैसे
३।३१	सहित बिपिन मधुकर खग, मदन कीन्ह बगमेल।	... १,२,३,४,५,६–खग; ७–खगन
३।३१	डेरा कीन्हेउ मनहु तब, कटकु हटकि मनजात।	... १,२,३, ४,५, ६–कीन्हेउ; ७–दीन्हेउ
३।३१।१०	चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे।	... १,२,३,४,५,७–सेन; ६–सेना
३।३२।२	कामिन्हि कै दीनता दिखाई।	... १,२,३,४,५,६–कै; ७–कहँ
३।३२।५	सत हरि भजनु जगत सब सपना। ...	५,७–सत; ४–सच; १,२,३,६–सत्य
३।३३	मायाछन्न न देखिए जैसे निर्गुन ब्रह्म।	१,२,३–देखिऐ, ६–देखिअ; ४,५, देखियै; ७–देखिए
३।३३।६	पाटल पनस पनास रसाला।	... १, २, ३–पनास; ४, ५, ६,७–परास
३।३४	फल भारन नमि बिटप सब, रहे भूमि निअराइ।	... १,२, भारन नमि; ३,४,५,६,७–भर नम्र

१।१५।१ सुनहु उदार परम रघुनायक।	... १,३,४,६–उदार परम; २–उदार सहज; ७–परम उदार
१।१७ काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।	... १,२,३,४,५,७–कै; ६–कइ
३।१७।५ होइ हिम तिन्हहि देति सुख मंदा।	१,२–देति सुख; ३,४,५–तिन्है दहै सुख; ६,७–देति दुख मन्दा
३।३८।६ जिन्ह ते मैं उनके बस रहऊँ।	... १,२,३,४,५–जिन्ह ते; ६–जाते, ७–जेहि ते
३।३८।६ धीर धर्म्म गति परम प्रवीना।	... १, २, ३, ४, ५–धर्म्मगति; ७–धरम गति; ६–भगति पथ
३।३६ गुनागार संसार दुख, रहित विगत संदेह।	... १,२,३,४,५,६–दुख, ७–दुख
३।४० दीप सिखा सम जुवति तन, मन जनि होसि पतंग।	... १,२–जुवति तनु; (जुवतिजन) ३,४,५,६–जुवती; [कोदवराम में यह दोहा नहीं है]

किष्किंधा कांड

४।०।१ आगे चले बहुरि रघुराया।	... १,२,३,४,५,६,७–रघुराया
४।०।५ पठए बालि होहिं मन मैला।	... १,२,४,५,६–पठए ; ३–पठये ; ७–पठवा
४।१ जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार।	... १,२,३,४,५,६,७–भव; (भवहिं)
४।२ एकु मैं मंद मोह बस, कुटिल हृदय अज्ञान।	... १,२,३,४,५,६–कुटिल ; ७–कीच
४।४ तब हनुमंत उभय दिसि, की सब कथा सुनाई।	... १,२,३,५,७–की ; ६–कह ; ४–कहि
४।४।४ परबस परी बहुत बिलपाता।	... १,२,३,४,५,७–बिलपाता ; ६–बिलखाता
४।५।१४ फरकि उठीं द्वौ भुजा बिसाला।	... १,२–द्वै ; ३,४,५–उठीं दोउ ; ६–उठी दो ; ७–उठे दोउ
४।६ सुनु सुग्रीव मारिहौं, बालिहि एकहि बान।	... १,२,३,४,५,६–मारिहौं ; ७–मैं मारिहौं
४।६।१२ बिनु प्रयास रघुनाथ उठाए।	... ३–उठाए ; ७–रघुबीर ढहाए ; १,२–ढ़ाए ; ४,५,६–रघुनाथ ढहाए
४।६।१३ बालि बधब इन्ह भइ परतीती।	... १,२,७–भइ ; ४,५–भै; ३–भय; ६–बाली बध की भै
४।६।२१ अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती।	... ४,५–एहि ; १,२–येहि ; ३,७–यहि ; ६–वेहि
४।७ कह बाली सुनु भीरु प्रिय,	... १,२,३,४,५,६–कह बाली ; ७–कहा बालि
४।७ जौं कदाचि मोहि मारहिं, तौ पुनि होउँ सनाथ।	... १,३,५–मारहिं; ४–मारिहिं;६–मारहि; ७–मारिहै; २–मारिहहि

४।१० सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न आनै नाग।	... १,२,३,४,५—आनै; ७—आने; ६-जानइ
४।११।२ स्वारथ लागि करहिँ सब प्रीती।	१,२,३,४,५,७—करहिं; ६—करति
४।११।४ सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ।	... १,२,३,४,५,६—सोइ; ७—सो
४।१२।४ करहिँ सिद्ध मुनि प्रभु की सेवा।...	३—की; १,२,४,५,६,७—कै
४।१३।२ दामिनि दमक रह न घन माहीँ।...	१,२,३,४,५,६—रह न; ७—न रह; (रही)
४।१३।५ छुद्र नदी भरि चली तोराई। अस थोरेहु धन···	... १,२,४,५,६,७—तोराई; ३—तुराई; (उतिराई); १,२,४,५, ६, ७—थोरेहु; ३—थोरेहुँ
४।१४ जिमि पाखंड बाद तेँ, गुप्त होहिँ सदग्रंथ।	... १, २, ३, ५,६—पाखंड; ४,७—पाखंडी; १, २,३,४,५,६,७—गुप्त (लुप्त)
४।१४।४ खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी।...	१,२,३, ४, ५, ७—कतहुँ मिलइ नहिं; ६—कतहूँ मिलइहि
४।१४।१० जिमि हरिजन हिय उपज न कामा।...	१,२,३,४,५,७—हिय; ६—पिय
४।१५ कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ तहँ मेघ उड़ाहिं।	... १,३,४,५,७—बह; २,६—चल
४।१५।२ जनु बरखा कृत प्रगट बुढ़ाई।	... १,२,३,४,५,७—कृत; ६—ऋतु
४।१५।१० कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी।...	१,२,३,४,५,७—जिमि; ६—जसि
४।१६।२ फूले कमल सोह सर कैसा।...जैसा...	१,२,३,४,६—कैसा-जैसा; ५,७—कैसे...जैसे
४।१७।८ लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना।	... १,२,३,४,५, ७—लछिमन; ६—लछिमन
४।१८।३ करि बिनती समुझाउ कुमारा।	... १,२,३,४, ५, ६, ७—समुझाउ; (समुझाइ)
४।१६।७ मुनि मन मोह करै छन माहीँ।...	१,२,३,४,५,६—मोह; ७—छोभ

४।२१।१	सो मूरख जो करन चह लेखा।	... १, २, ३,५,६—करन चह; ७—करि चहै; ४—किय चह
४।२२।३	मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु।	१,३,४,५—सो जतन; २,६—सो जतनु; ७—सुजतन
४।२२।७	सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी।	... ३,४,५,६,७—गुनज्ञ; १, २—गुन ज्ञान
४।२३।३	मिलै न जल घन गहन भुलाने।	... १,२,३,४,५,६—घन; ७—बन
४।२४	दीख जाइ उपवन बर सर बिगसित बहु कंज।	... १,२,४,५—बर सर बिकसित बहु; ३,६—सर बिकसित बहुतक; ७—सुभग सर बिगसित
४।२६	निज इच्छा प्रभु अवतरइ, सुर महि गो द्विज लागि।	... १,२,३,४,७—प्रभु अवतरइ; ५—अवतरहिं; ६—अवतरइ प्रभु
४।२६	सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि।	... १,२—मोच्छ सब; ६—मोच्छ सुख, ३,४,५,७—मोच्छ सब
४।२६।१	गिरि कंदरा सुनी संपाती।	... १,२,३,४,५—सुनी; ६,७—सुना
४।२६	बाहेर होइ देखि बहु कीसा।	... १,२,३,४,५—देखि; ६,७—देखे; १,२,६—बाहेर; ३,४,५,७—बाहिर (बाहेरि)
४।२७।५	लागी दया देखि करि मोही।	... १,२,३,४,५,६—करि; ७—अति
४।२७।६	जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता।	१,२,३,४,५,६—चिंता; ७—चीता; (चिन्ता)
४।२८	मैं देखउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार	... १,२,३,५,६—नाहीं; ४—नाहि; ७—नाहिन
४।२८।५	अस कहि गरुड़ गीध जब गयउ।	... १,२,३,४,५,७—गरुड़; ६—उमा
४।२८।६	पार जाइ कै संसय राखा।	... १,२,३,४,५—कै; ६,७—कर
४।२९	उभय घरी महँ दीन्ही, सात प्रदच्छिन धाइ।	... १, २, ३, ४, ५,६—दीन्ही; ७—दीन्हि मैं

४।२९।३ कहइ रीछ पति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना ।	... १,२,४,७–कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ; ३–रिच्छपति ; १,२–का चुप साधि रहेहु बलवाना ; ३,४,५,७–का चुप साधि रहेउ बलवाना ; ६–का चुप साधि रहेउ बलवाना । कहइ रिछेस सुनहु हनुमाना ।
४।२९।५ जो नहिँ होइ तात तुम्ह पाहीँ ।	... १,२,३,४,५–होइ तात ; ६,७–तात होइ
४।२९।८ लीलहि नाघउँ जलनिधि खारा ।	१,२, ३, ४, ५, ६, ७–जलनिधि खारा ; (जलधि अपारा)
४।३० तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिँ त्रिसिरारि ।	... १,२,३,५,६–त्रिसिरारि ; ४,७ त्रिपुरारि

सुंदर कांड

५।श्लो०।१ शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं, गीर्वाणशांतिप्रदं।	... १,२,३–शांत शाश्वत ; ४,५,६, ७–शांतं शाश्वत ; १,२,३,४,५, ७–गीर्वाण ; ६–निर्वाण
५।श्लो०।३ वानराणामधीशं···	१,४,५,७–णाम ; २,३,६–नाम
५।०।३ होइहि काजु मोहि हरष बिसेखी। ...	१,२,३,६–होइहि ; ४,५,७–होइ
५।०।७ जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ···	... १,२,३,४,५,६–जेहि···चलेउ ; ७–जे···दीन्ह ; (चलि सो गा)
५।०।८ एही भाँति चला हनुमाना।	··· १,२,३,४–एही भाँति चला ; ५,७–तेही ; ६–योही
५।१।६ तासु दून कपि रूप देखावा।	... १,२,३,४,६,७–दून ; ५-दुगुन
५।२।४ सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। ...	१,२,३,४,५–सोइ···कहँ ; ७–सोइ···ते ; ६–सो···कहँ
५।३ कनक कोट विचित्र मनि कृत, सुंदरायतना घना। ...	१, २, ३, ४,५,६–सुंदरायतना ; ७–सुंदरायत अति
५।३ कहुँ माल देह विसाल···	१,२,३,४,५,६–माल; ७–मल्ल
५।३ नगर चहु दिसि रच्छहीं।···भच्छहीं	१,२,३,४,५–रच्छहीं-भच्छहीं ; ६, ७-रच्छहीं-भच्छहीं
५।३।२ सो कह चलेसि मोहि निंदरी। ...	१, २, ३, ४, ५,६–निंदरी ; ७–निन्दरी
५।३।४ रुधिर बमत धरनी ढनमनी। ···	१,२,३,४,५,७–बमत ; ६–बमन
५।३।७ बिकल होसि तैं कपि कें मारे। ...	१,२,३,४,५,६–तैं ; ७–जब
५।४ तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिअ तुला एक अंग।	१,२,३,४,५,६–तात ; ७–सात
५।४।३ गरुड सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही।	१,२,३,४ ५,६–गरुड ; ७–गरुड़ १,२,३,४,५,६–चितवा ; ७–चितवहिं

५।६ नव तुलसिका वृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ।	... १,२,३,४,५,६–तुलसिका ; ७–तुलसी के
५।७।३ सुनि सब कथा बिभीषन कही।	... १,२–सुनि ; ३,४,५,६,७–पुनि
५।७।४ देखी चहौं जानकी माता।	... १,२,३–देखी ; ४,५,६,७–देखा
५।८ निज पद नयन दिएँ मन, राम चरन महुँ लीन।	... १,२,४,७–चरन महु ; ३,५–चरन महँ ; ६–कमल पद
५।८।३ साम दान भय भेद देखावा।	... १,२,३,४,५,६–दान ; ७–दाम
५।८।८ अस मन समुझु कहति जानकी।	... १, २, ३, ४, ६–समुझु; ५,७–समुझि
५।९।४ सुनु सठ अस प्रवान मन मोरा।	... १,२–मन; ३,४,५,६,७–पन
५।९।६ सीतल निसि तव असि बर धारा।	१, २,३,४,५,६–निसि तव असि; ७–निसित बहसि
५।१०।६ तब प्रभु सीता बोलि पठाई।	... १, २, ३, ४, ५, ६–सीता; ७–सीतहि
५।११।११ देहि अगिनि तन करहि निदाना।	... १,२,५,७–तन; ३, ४, ६–जनि; (जन)
५।१२।७ श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई। कही सो प्रगट...	... १,२,३,४,५,६,७–सुहाई; (सुनाई) १,२,५,६–कही; ३,४,७–कहि
५।१३।७ बचनु न आव नयन भरि बारी।	... १,२,६–भरे; ३,४,५,७–भरि
५।१४।४ जे हित रहे करत तेइ पीरा।	... १,२,६–जे हित रहे; ३,४,५,७–जेहि तरु रहे
५।१६ सुनु माता साखामृग नहिँ बल बुद्धि बिसाल।	.. १,३,४,५,६–साखामृग नहिँ; २–साखामृगन; ७–साखा-मृगहि
५।१६।४ निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।	... १,२,३,४,५,६–मगन; ७–हरख
५।१६।८ परम सुभट रजनीचर भारी।	... १,२,३,४,५,७–भारी; ६–धारी
५।२०।२ का मैं श्रवन सुनेहि नहिं मोही।	... १,२,४,५,६,७–स्रवन सुने; ३–सुनेहि

५।२०।३ मारे निसिचर केहि अपराधा।	... १,२,३,४,५–मारे; ६,७–मारेहि
५।२०।५ पालत सृजत हरत दससीसा।	... १, २,३, ४, ५,६–पालत सृजत हरत; ७–सिरजत पालत हर
५।२१।६ जो सुर असुर चराचर खाई।	... १,२,३,४,५,६, ७–असुर
५।२२ गए सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि।	... १,३,४,५–राखिहैं; २–राखिहैं; ७–राखिहै; ६–राखिहि; (राखिहहिं)
५।२२।६ सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं।...	१,२,३,४, सरित; ५,६,७–सजल
५।२३।४ मति भ्रम तोहि प्रगट मैं जाना। ...	१,२,३,५,६–तोहि; ४–तोरि; ७–तोर
५।२४ कपि के ममता पूँछि पर, सबहिं कह्यौ समुझाइ।	... १,२–कह्यो; ३,४,५–कह्यौ; ७–कहा; ६–कहैं
५।२४।१ पूँछहीन बानर तहँ जाइहि।	... १,२,३,४,५,६–तहँ; ७–जब
५।२५।२ झपट लपट बहु कोट कराला।	... १,२,३,४,५,६–झपट; ७–दपट
५।२६।४ दीनदयाल बिरिदु संभारी।	... १,२,३–बिरिदु; ४,५,७–बिरद; ६–बिरुद
५।२६।६ मास दिवस महुँ नाथ न आवा। ... पावा।	१,३,४,५,६–आवा-पावा; २,७–आवै-पावै
५।२७।१ गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी।	१, २, ३, ४, ५, ६–स्रवहि सुनि निसिचर; ७–रजनीचर
५।२७।५ तलफत मीन पाव जिमि बारी।	... १,२,३,४,५–जिमि; ६,७–जनु
५।२८ जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज।	... १,२,३,४,५,६,७–सब; (सबनि)
५।२८।३ मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा।...	१,२,३,४,५–प्रीति; ६,७–प्रेम
५।३० नाम पाहरू राति दिनु, ध्यान तुम्हार कपाट।	... १,२,३,४,७–राति दिनु; ५,६–दिवस निसि
५।३०।६ निसरत प्रान करहिं हठि बाधा। ...	१,२,३,४,५,६,७–हठि

५।११ निमिख निमिख करुनानिधि, जाहिं कलप सम बीति ।	... १,२,३,४,५,६–करुनानिधि; ७–करुनायतन
५।१२।६ नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ।	... १,२,३,४,५,६–कछू ; ७–कछुक
५।१३ तव प्रभाव बड़वानलहि, जारि सकै खल तूल ।	... १,२,३,६–प्रभाव; ४,५,७–प्रताप
५।१३।१ नाथ भगति अति सुख दायनी ।	१, २, ३, ४, ५,६,७–अति सुख-दायनी ; (तव अति सुखदायिनि)
५।१३।२ देहु कृपा करि अनपायनी ।	... १,२,३,४,५, ६, ७–अनपायनी ; (सो अनपायिनि)
५।१३।५ सुनि प्रभु बचन कहहिं कपि बृंदा ।...	१,२,३,४,५,६–प्रभु ; ७–कपि
५।१४।५ जासु सकल मंगलमय कीती ।	... १,२,३,४,५,६–कीती ; ७–रीती
५।१५ सहि सक न भार उदार अहिपति, बार बारहिं मोहई ।	... १,२,३,४,५,६–उदार ; ७–अपार १,२,३,४,६,७–बारहि मोहई ; ५–बार बिमोहई
५।३६।६ मंदोदरी हृदय कर चिंता ।	... १,२,३,४,५,६–चिंता; ७–चीता
५।४० सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ।	... १,२,३,४,५,६–देहु ; ७–देव
५।४०।३ जियसि सदा सठ मोर जिआवा । ...	१, २, ३, ४,५,७–सठ; ६–सब
५।४३।२ जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ...	१, २, ३,४,५, ६–नासहिं; ७–नासौं
५।४३।७ लछिमन हनइ निमिष महुँ तेते । ...	१, २, ३, ४, ५, ६–हनइ; ७–हनहिं
५।४४।५ आनन अमित मदन मन मोहा । ...	१,२,३,४,५,७–मन; ६–छबि
५।४६।२ लोभ मोह मच्छर मदमाना ।	... १,२–मछर; ६–मच्छर; ३,४,५,७–मत्सर ।
५।४८ सगुन उपासक परहित, निरत नीति दृढ़ नेम ।	... १, २, ३, ४,५,६–परहित; ७–परम हित

५।४९	जरत बिभीषन राखेउ, दीन्हेउ राजु अखंड। ...	१,२—राखेउ; ३,४,५,६—राखा; ७—राखे; (राखेऊ)
५।४९।६	अति अगाध दुस्तर सब भाँती। ...	१,२,३,४,५,६—सब; ७—बहु
५।५१।२	सकल बाँधि कपीस पहिँ आने। ...	१, २, ३, ४, ५, ६—सकल; ७—ताहि...कपिपति
५।५१।३	कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। ...	१,२,३,४,५,६—बानर; ७—बनचर
५।५१।७	सुनि लछिमन सब निकट बोलाए।...	१,२,३,४,५,६—सब; ७—तब
५।५२।३	कहसि न कस आपन, कुसलाता। ...	१,२—कस; ३, ४, ५, ६,७—सुक
५।५२।४	पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। ... जाहि मृत्यु	१, २, ३, ४, ५,६—खबरि-जाहि ७—कुसल-जासु
५।५२।५	करतु राजु लंका सठ त्यागी। ...	१,२,३,४,५,६—त्यागी; ७—त्यागा
५।५३।३	कपिन्ह बाँध दीन्हे दुख नाना। ...	१, २, ३, ४, ५—दीन्हे, ६,७—दीन्हेउ
५।५३।८	अमित नाम भट कठिन कराला। ...	१,२,४,५,६—कठिन; ३—कठिन्ह; ७—बिकट
५।५४	द्विविद मयंद नील नल, अंगद गद विकटासि। ...	१,५,६—अंगद गद बिकटास्य; ४—अंगदादि बिकटास्य; २,३—अंगद गद विकटासि; ७—अंगदादि विकटासि
५।५४	दधिमुख केहरि निसठ सठ, जामवंत बल रासि। ...	१,२,३,४,५—निसठ सठ; ६,७—कुमुद गव
५।५५	रावन काल कोटि कहुँ, जीत सकहिँ संग्राम। ...	१, २, ३, ४, ५, ६—काल; ७—काली
५।५५।७	बिजय बिभूति कहाँ जग ताके। ...	१,२,३,४,५—जग ताके; ६,७—लगि ताके
५।५५।८	सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी। ...	१,३,४,५,७—दूत; २,६—दूतहि
५।५६	होइ कि राम सरानल, खल कुल सहित पतंग।	१,२,३,४,५,६—होहि; ७—होसि राम सर अनल खल जनि

५।५६।६ मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही ।... १,२,४,५,६–करिही; ३–करिहौं; ७–करिहहिं करिहहिं

५।५७।४ ऊसर बीज बोए फल जथा । ... १,२,३–बोए ; ७–बोये ; ६–बए ; ४,५–बये

५।५७।८ बिप्र रूप आएउ तजि माना । ... १,२,४–आए ; ३,५,७–आएउ, ६–आए

५।५८ बिनय न मान खगेस सुनु,
डाटेहि पइ नवै नीच । ... १,२,४,५,६,७–नव ; ३–नवै

५।५८।४ प्रभु आयसु जेहि कहँ जसि अहई । १,२,५,६,७–जस ; ३,४–जसि

५।५९ सुनत बिनीत बचन अति,··· ... १, २, ३, ४, ५, ६–सुनत ; ७–सुनतहि

५।६० सुख भवन संसय समन दवन,
बिषाद रघुपति गुन गना । ... १,२,३,६–दवन ; ४,५,७–दमन

५।६० तजि सकल आस भरोस गावहि,
सुनहि संतत सठ मना । ... १,२,३,४,५,६–सठ ; ७–सुंठ

लंका कांड

६।श्लो०। नौमीक्ष्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं, श्री शंकरं मन्मथारिं।	... १,२,३,४,७–श्रीशंकरं मन्मथारिं; ५,६–कन्दर्पहं शंकरं; (श्रीशंकरं कामदम)
६।श्लो०। खलानां दंडकृद्यौसौ	... १,४,५–दंड कृद्योसौ ; ६–कृत यो सौ ; ७–कृद्योसि ; २, ३–कृद्योऽसौ
६।०।७ सकल सुनहु बिनती कछु मोरी।	... १,२,३,४,५–कछु ; ६,७–एक
६।१ अति उतंग गिरि पादप ... नीलहि	... १,२,३,४,५–गिरि पादप; ६,७–तरु शैल गन ; १,२,३,४,५,६–नीलहि ; ७–नील कहँ
६।१।४ करिहौं इहाँ संभु थापना।	... १, २, ३, ४, ५, ६–थापना ; ७–अस्थापना
६।१।७ सिव द्रोही मम भगत कहावा।	... १,२,३,४,५,६–भगत ; ७–दास
६।२।१ जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।	... १,२,३,४, ५, ६, ७–जे;...मम; ६–हरि; (जो)
६।२।४ मम कृत सेतु जो दरसनु करिही। ... तरिही	१,२,३,४,५,६–करिही···तरिही; ७–करिहहिं···तरिहहिं
६।२।५ राम बचन सबके जिय भाए।	... १,२,३,४,५,६–जिय ; ७–मन
६।२।७ बाँधा सेतु नील नल नागर।	... १,२,३,४,५–बाँधा; ६,७–बाँधेउ
६।३।५ मकर नक्र नाना झख ब्याला।	... १,२,३,४,५,७–मकर नक्र नाना झख ; ६–नाना मकर नक्र झख
६।३।९ चला कटकु प्रभु आयसु पाई।	... १,२,३,४,५,७–प्रभु आयसु पाई; ६–कछु बरनि न जाई।
६।४।५ रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी।	१,२,३,४,५–रितु अरु कुरितु ; ६–ऋतु अनऋतु ; ७–ऋतु अनऋतुहि

६

६।५ बाँध्यो बन निधि नीर निधि।	... १,४,५–बाँध्यो ; ३–बाँध्यौ ; २, ६–बाध्यो ; ७–बाँधे
६।५।१ निज बिकलता बिचारि बहोरी।...	१, २, ३, ४, ५–निज बिकलता बिचारि ; ६,७–ब्याकुलता निज समुझि
६।५।६ खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।	... १,२,३,४,५,६–दिनकरहि ; ७–दिवाकर
६।७ अस कहि नयन नीर भरि, गहि पद कंपित गात।	... १,२,३,४,५–नयन नीर भरि ; ६,७–लोचन बारि भरि
६।७ नाथ भजहु रघुनाथहि, अचल होइ अहिवात।	... १,२,३,४,५–रघुनाथहि अचल होइ अहिवात; ६,७–रघुबीर पद मम अहिवात न जात
६।७।६ काल बस्य उपजा अभिमाना।	... १, २, ३, ४, ५–बस्य ; ६, ७–बिबस
६।७।७ सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा।	... १,३,४,५–तेहिं ; २,६–तेहि ; ७–सन
६।७।८ बार बार प्रभु पूछहु काहा।	... १,२,३,६–प्रभु पूछहु ; ४, ५–पूछहु प्रभु ; ७–प्रभु बूझहु
६।८ सब के बचन भवन सुनि...	... १,२,३,४,५,७–सब के बचन ; ६–बचन सबहि के
६।८।१ कहहिं सचिव सठ ठकुर सोहाती।	१,२,३–सठ ; ४,५,६,७–सब
६।८।८ अइसे नर निकाइ जग अहहीं। ..	१,२,३–अइसे ; ४,५,६–औसे ; ७–ऐसे
६।८।१० सीता देइ करहु पुनि प्रीती।	... १, २, ३, ४, ५, ७–सीता ; ६–सीतहि
६।६।८ लागे किंनर गुन गन गावन।	... १,२,३,४,५–किंनर ; ६–किंनर गंधर्व ; ७–गंध्रब

६।१० परम प्रबल रिपु सीस पर, तदपि सोच न त्रास।	... १,२,३-तदपि सोच न त्रास ; ४,५-तदपि सोच नहिं त्रास ; ६-तदपि न कछु मन त्रास ; ७-तदपि न तेहि कछु त्रास
६।१०।२ सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी।	... १,२,३,४,५-सिखर एक उतंग अति देखी ; ६, ७-सैल सृंग एक सुंदर देखी ; १,२,३,४,५-परम रम्य ; ६,७-अति उतंग
६।१०।४ तापर रुचिर मृदुल मृगछाला।	... १,२,३,४,५-तापर ; ६, ७-तेहि पर
६।११ एहि बिधि कृपा रूप गुन, धाम रामु आसीन	... १,२,३,४,५,७-कृपा रूप गुन ; ६-करुना सील गुन
६।११ धन्य ते नर एहिं ध्यान जे, रहत सदा लयलीन।	... १,२,३,४,५,७-धन्य ते नर एहि ध्यान ; ६-ते नर धन्य जे ध्यान एहि
६।१२ कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास।	... १,२,३,४,५-हनुमंत ; ६, ७-मारुत सुत ; १,२,३,४,५,७-प्रिय ; ६-निज
६।१२ दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान।	... १, २, ३, ४, ५, ७-दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु ; ६-दच्छिन दिसा बिलोकि पुनि
६।१२।४ लंका सिखर उपर आगारा।	... १,२,३,४,५,७-उपर ; ६-रुचिर
६।१२।७ सोइ रव मधुर सुनहु सुर भूपा।	... १,२,३,४,५-मधुर ; ६,७-सरस
६।१३।४ मुकुट परे कस असगुन ताही।	... १,२,३,४,५-परे ; ६,७-खसे
६।१३।८ जानि मनुज जनि हठ उर धरहू। ..	१,२,७-हठ उर ; ६-मन हठ ; ३,४,५-हठ मन
६।१५ मनुज बास सचराचर, रूप राम भगवान	... १,२,३,४,५,७-सचराचर ; ६-चर अचर मय

६।१५।२ नारि सुभाउ सत्य सब कहहीँ । ...	१,२,३–सब ; ४,५,६,७–कवि
६।१५।६ एहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई ।...	१, २–विधि कहहु ; ७–विधि कहेउ ; ३, ४, ५–विधि कहेहु ; ६–मिसि कहिहि
६।१५।७ समुभत सुखद सुनत भय मोचनि ।	१,३,४,५,७–मोचनि ; २, ६–सोचनि
६।१६ एहि बिधि करत बिनोद बहु, प्रात प्रकट दस कंध । ...	१,२,३,४,५–एहि विधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट ; ६,७–बहु बिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भए
६।१६ सहज असंक लंकपति, सभा गएउ मद अंध । ...	१,२,३,४,५,७–लंकपति ; ६–सुलंकपति
६।१६ मूरख हृदय न चेत, जैाँ गुर मिलहिँ बिरंचि सिव । ...	१,३,४,५–सिव ; २–सम ; ६, ७–सत
६।१६।३ सुनु सरवज्ञ सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ।	१,२,३,४,५–उर बासी ; ६,७–गुन रासी ; १,२,३,४,५–बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ; ६,७–सत्य संध प्रभु सब उर बासी
६।१६।८ रिपु सन करेहु बतकही सोई । ...	१,२,३,४,५,७–सन ; ६–सैं
६।१७।३ खेलत रहा होइ गै भेंटा । ...	१, २, ३, ५–होइ गै ; ७–तासु भइ ; ४,६–सो होइ गइ
६।१८।४ अंगद दीख दसानन बैसें ।···जैसे ।	१,२,३,४–बैसे···जैसे ; ५,६,७–बैसा···जैसा
६।१९।४ जीतेहु लोक पाल सब राजा । ...	१,२,३,४,५–सब ; ६,७–सुर
६।२० आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करैगो तोहि । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–आरत गिरा सुनत प्रभु ; ६–सुनतहि आरत बचन प्रभु १, २, ३,६–करै गो ; ४,५,७–करहिँ गे ;

६।२०।१	रे कपि पोत बोलु सँभारी।	... १,२,३,५, ६, ७–बोलु ; ४–न बोल
६।२०।३	तासों कबहुँ भई ही भेंटा।	... १,२,३,४,६–ही ; ७–हुइ ; ५–रही
६।२०।४	रहा बालि बानर मैं जाना।	... १,२,३,४,५–रहा ; ६, ७–हाँ बाली
६।२०।६	गर्भ न गएहु व्यर्थ तुम्ह आएहु।	... १, २, ३, ४,५, ६–गएहु व्यर्थ; ७–गयहु वृथा; २–गएउ
६।२१	अंधौ बधिर न अस कहहि, नयन कान तव बीस।	... १,२,३,४,५,७–बधिर;...कहहि; ६–बहिर;...कहइ
६।२१।६	देखी नयन दूत रखवारी।	... १,२,३,४,५–देखी;६,७ देखिउँ
६।२१।८	पावा दरसु हमहुँ बड़ भागी।	... १,३,४,५,७–हमहुँ, २,६–महुँ,
६।२२।४	जामवंत मंत्री अति बूढ़ा।	... १,२,३,४,५,७–बूढ़ा ; ६ -मूढ़ा
६।२२।६	सुनत बचन कह बालि कुमारा।	... १,२,३,४,५–सुनत बचन कह ; ६,७-सुनि हँसि बोलेउ
६।२२।८	सुनि अस बचन सत्य को कहई।	१,२,३,४,५,७–सुनि अस बचन; ६–को अस झूठ सुनै
६।२३	सत्य नगरु कपि जारेउ, बिन प्रभु आएसु पाइ।	... १, २, ३, ४, ५–सत्य नगर कपि जारेउ ; ६–अब जानेउ पुर दहेउ कपि ; ७–अब जाना पुर दहेउ कपि
६।२३	फिरि न गएउ सुग्रीव पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ।	... १,२,५–फिरि न गएउ सुग्रीव ; ३,४–फिरि न गयो सुग्रीव ; ६–गयेउ न फिरि निज नाथ ; ७–फिरि न गयउ निजनाथ
६।२३	तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्र जाति कर रोष।	... १,२,३,४,६–छत्र ; ५,७–छत्रि

६।२३ जो प्रति पालै तासु हित, करै उपाय अनेक।	... १,२,३,४,५,७–जो ; २,६–जौ
६।२३।२ पति हित करै धर्म निपुनाई।	... १,२,३,४,५,६–करै ; ७–धरै
६।२३।१२ कहु रावन रावन जग केते …जेते।	... १,२,३,४,५,७–कहु ; ६–सुनु ; १,२,३,४,५,६–जेते ; ७–तेते
६।२४ इन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य बदहि तजि माँष।	... १,२,३,४,५, ७–इन्ह; ६–तिन्ह
६।२४।६ जिन्ह के दसन कराल न फूटे।	... १,२,३,४,५,६–जिन्ह; ७–तिन्ह
६।२५ रे कपि बर्बर खर्ब खल, अब जाना तव ज्ञान।	... १,३,४,५-अब जाना तव ज्ञान; ... २,६–अब जाना तव जान; ७–तब न जान अब जान
६।२५।४ सो नर क्यौं दससीस अभागा।	... १,२,३,४, ५, ६–दससीस; ७–दसकंठ
६।२६।३ मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला।	... १,२,३,४,५,७–वृथा; ६–मुघा
६।२६।५ ते तव सिर कंदुक सम नाना।	... १,२,३,४,५–सम; ६,७–इव
६।२७ कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि।	... १,२,३,४,५,६–अस: ७–सम
६।२७।२ सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा।	... १, २, ३–सब; ४, ५, ७–सठ; ६–जड़
६।२७।८ हरि गिरि मथन निरखि मम बाहू।	... १,७–निरखि; २, ३, ४, ५, ६–निरखु
६।२८ हुने अनल अति हरष बहु, बार साखि गौरीस।	... १,२,३,४,५–अति हरष बहुबार साखि गौरीस; ६,७–महुँ बार बहु हरषि साखि गिरीस।
६।२८।१० इन्द्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा।	... १,२,३,४,५–इन्द्रजालि; ६,७–बाजीगर
६।२९ जरहि पतंग मोह बस, भार बहहिं खर बृंद।…कहावहि…	... १,२,३,४,५–मोह;… कहावहि; ६,७–विमोह…सराहिअहि

६।२९।३	बार बार अस कहइ कृपाला ।	... १, २, ३, ४, ५-अस कहइ; ६,७-इमि कहइ ; (अस कहै)
६।२९।६	चले हरि आनिहि परनारी ।	... १,२,६-हरि आनिहि; ३,४,५-हरि आनेहि; ७-हरि आनहि ।
६।३०	तब जुवतिन्ह समेत सठ, जनक सुतहि लै जाउँ	... १, २, ३, ४-तब जुवतिन्ह; ५-तव जुवतीन्ह; ६,७-मंदोदरी
६।३०।७	रे कपि अधम मरन अब चहसी ।	... १,२,३,४,५,७-अधम; ६-पोत
६।३१	अगुन अमान जानि तेहि, दीन्ह पिता बनवास ।...... पुनि निसि दिन ममत्रास ।	... १, २, ३, ४, ५, ७-जानि; ... निसिदिन; ६-बिचारि...अनुदिन
६।३१।६	*गिरत सँभारि उठा दसकंधर ।*	... १,२,३,४,५-*सँभारि उठा दसकंधर* ; ६, ७-दसानन उठेउ संभारी
६।३२	तरकि पवन सुत कर गहेउ, आनि धरे प्रभु पास ।	... १,२,३,४,५-तरकि पवन सुत कर गहेउ ; ७-कूदि पवन सुत कर गहेउ ; ६-कूदि गहे कर पवन सुत
६।३२	{ उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ ।	... १,२,३,४,५-मा० का पाठ है ; ६,७-उहाँ कहत दसकंध रिसाई ।
	धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ।	... धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
६।३२।१	एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु ।	... १,२,३,४,६-बधि ; ५,७-बिधि
६।३२।४	बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती ।	... १, २, ३, ७-बिहरति ; ४, ५-बिहरत ; ६-बिहरी
६।३२।५	खल मल रासि मंद मति कामी ।	... १, २, ३, ४, ५,६,७-मलरासि ; (मलराजि)
६।३२।६	भयेसि काल बस खल मनुजादा ।	... १,२,३,४,५-खल ; ७-सठ ६-निसि

६।३३।३ गूलरि फल समान तव लंका।	... १,२,३,४,५,७–तव ; ६–यह
६।३३।८ समुझि राम प्रताप कपि कोपा।...	१,२,३,४,५–समुझि राम प्रताप; ६,७–राम प्रताप सुमिरि
६।३४।१ उठा आपु कपि के परचारे।	... १,२,३,४,५–कपि के परचारे, ६,७–जुवराज प्रचारे
६।३५ रिपु बल धरषि हरषि कपि, बालि तनय बल पुंज।	... १, २, ३, ४, ५, ७–धरषि ; ६–धरषित
६।३५ पुलक सरीर नयन जल, गहे राम पद कञ्ज।	... १, २, ३, ५–पुलक सरीर नयन जल; ६, ७–सजल सुलोचन पुलक तनु
६।३५ मंदोदरी रावनहि, बहुरि कहा समुझाइ।	... १,२,३,४,५–रावनहि ; ७–तब रावनहि ; ६–निसाचरहिं
६।३५।३ जाके दूत केर यह कामा।	... १, ३, ४, ५, ७-यह ; २–येह ; ६–अस
६।३५।६ जारि सकल पुर कोन्हेसि छारा।...	१,२,३,४,५,७–सकल पुर ; ६–नगर सब
६।३५।८ पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु।...	१,२,३,४,५,७–जनि; ६–मति
६।३५।१० जनक सभा अगनित भुअपाला। रहे तुम्हो बल अतुल बिसाला।	... १,२,४,५,७–भूपाला; ३–भुअ-पाला; ६–महिपाला; १,२,३,४,५–अतुल; ६,७–बिपुल
६।३७ दुइ सुत मरे दहेउ पुर...	... १–मरेउ; २–मरे; ३,४,५,७–मारेउ; ६–मारे
६।३७ कृपासिंधु रघुनाथ भजि...	... १, २, ३, ४, ५,७–रघुनाथ; ६–रघुपतिहि
६।३७।९ साम दान अरु दंड बिभेदा।	... १,२,३,४,६–दान; ५,७–दाम
६।३८ तेहि परिहरि गुन आए, सुनहु कोसलाधीस।	... १,२,३,४,५–तेहि परिहरि गुन आए; ६,७–आए गुन तजि रावनहिं

६।३६ जयति राम जय लछिमन, जय कपीस सुग्रीव ।	... १,२,३,४,५–जयति राम जय लछिमन; ६,७–जयति राम भ्राता सहित
६।३६ गर्जहिं सिंहनाद कपि, भालु महाबल सीव	... १,२,३,४,५–सिंहनाद; ६,७–केहरिनाद
६।३९।२ क्षुधावंत सब निसिचर मेरे ।	... १, २, ३, ४, ५–सब निसिचर; ६,७–रजनीचर
६।४१ एकु एक निसिचर गहि, पुनि कपि चले पराइ ।	... १,२–निसिचर गहि; ३,४,५– ... गहि निसिचर; ६, ७–गहि रजनिचर
६।४१।१ मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–सुभट; ६–निकर
६।४१।३ चले निसाचर निकर पराई ।	... १,२, ३, ४, ५,७–निसाचर; ६–तमीचर
६।४१।४ रोवहिं बालक आतुर नारी ।	... १,२,३,४,५–बालक आतुर; ६, ७–आरत बालक
६।४१।६ निज दल बिचल सुनी तेहि काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ।	...१,२,३,४,५–सुनी तेहि; ६,७–सुना जब; (सुना तेहि); १,२,३, ४,५,६,७–फेरि; (फिरे)
६।४१।७ जो रन बिमुख फिरा मैं जाना । सो मैं हतब कराल कृपाना ।	... १,२,६,७–फिरा मैं जाना; ३,४, ५–सुना मैं काना; १, २, ३, ४,५, ७–सो मैं हतब; ६–तेहि मारिहौं
६।४१।८ समर भूमि भए बल्लभ प्राना ।	... १,२,३,४,५–बल्लभ ; ७–दुर्लभ ; ६–दुल्लभ
६।४१।६ चले क्रोध करि सुभट लजाने ।	... १,२,३,४,५,७–चले क्रोध करि सुभट ; ६–फिरे क्रोध करि बीर

६।४१	व्याकुल किए भालु कपि, परिघ त्रिसूलन्हि मारि।	... १,२,३—व्याकुल किए; ४,५,७—व्याकुल कीन्हे; ६—कीन्हे व्याकुल ··· प्रचंडन्हि मारि
६।४२।३	निल दल बिकल सुना हनुमाना।	१,२,३—बिकल सुना; ६—बिचल सुनी; ४,५,७—बिचल सुना
६।४२।८	दुसरे सूत बिकल तेहि जाना।	... १,२,३,४,५,६—दुसरे; ७—दूसर
६।४३।१	जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर।	... १—बंनर; २,५,७—बंदर; ३,४,६—बानर
६।४३।२	रावन भवन चढ़े द्वौ धाई।	... १,२,३,४,५—द्वौ; ६,७—तब
६।४३।७	गर्जि परे रिपु कटक मझारी।	... १,२,३,४,५—गर्जि परे; ६—कूदि परे; ७—कूदि परेउ
६।४४	एक एक सो मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुण्ड।	... १,२,३,४,५—सो मर्दहिं ७—सन मर्दहिं; ६—सन मर्दि करि
६।४५	कूदे जुगल बिगत स्रम, आए जहँ भगवन्त।	... १,२,३,४,५—बिगत स्रम; ६,७—प्रयास बिनु
६।४५।७	महाबीर निसिचर सब कारे।	... १,२,३,४,५—महाबीर निसिचर सब कारे; ६,७—बीर तमीचर सब अतिकारे।
६।४६	एकहि एकु न देखई, जहँ तहँ करहिं पुकार।	... १,२—देखई; ६,७—देख तब; ... ३,४,५—देखइँ
६।४६।१	सकल मरमु रघुनायक जाना।	... १,२,३,४,५—सकल मरमु रघुनायक जाना; ६,७—यह सब मरम राम बिनु आना
६।४६।४	ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं	... १,२,३,४,५,७—संसय; ६—दुख सब
६।४६।५	धाए हरषि बिगत स्रम त्रासा।	... १,२,३,४,५,७—हरषि; ६—कोपि
६।४७	कछु मारे कछु घायल, कछु गढ़ चढ़े पराइ।	... १, २, ३, ४, ५—कछु मारे कछु घायल... ६,७—कछु घायल कछु रन परे।

६।४७ गर्जहिं भालु बली मुख, रिपु दल बल बिचलाइ। ...	१,२,३,४,५–गर्जहिं भालु बली-मुख ; ६,७–गर्जहिं मर्कट भालु भट
६।४७।३ उहाँ दसानन सचिव हँकारे। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–सचिव; ६–सुभट
६।४७।८ बेद पुरान जासु जस गायो।...पायो।	१, २,३,४, ५–गायो...पायो...; ६,७–गावा...पावा
६।४८ सिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासो कवन बिरोध। ...	१,२,३,४,५–सिव बिरंचि जेहि सेवहिं; ६,७–जेहि सेवहिं सिव कमल भव।
६।४८।२ करिआ मुँह करि जाहि अभागे। ...	१,२,७–मुँह; ३,४,५,६–मुख
६।४८।४ बध्यो चहत एहि कृपानिधाना। ...	१, २, ३, ४,५,७–कृपानिधाना; ६–श्री भगवाना।
६।४९ गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं	१,२,३,४,५,७–तेहि; ६–तेइ
६।४९ उतरयौबीर दुर्ग ते, सन्मुख चल्यौ बजाइ। ...	१,२,३,४,५–उतरयौ बीर; ६–उतरि दुर्ग ते बीर बर; ७–उतरि बीर बर दुर्ग ते
६।४९।३ आसु सबहि हठि मारौं ओही। ...	१,२,३,४,५–सबहिं ; ६, ७–सठहिं
६।४९।४ अतिसय क्रोध स्रवन लगि ताने। ..	१,२,३,४,५,७–क्रोध; –कोप
६।४९।७ जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा। ...	१,२,३,४,५–जहँ तहँ भागि चले ; ६,७–भागे भय ब्याकुल
६।५० दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर। ...	१,२,३,४,५–दस दस सर सब मारेसि ; ६,७–मारेसि दस दस बिसिख सब
६।५० सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलबीर।	१, २, ३, ४, ५–सिंहनाद करि गरजा...; ६,७–सिंहनाद गर्जत भयउ मेघनाद रनधीर।

६।५०।२ महासैल एक तुरत उपारा।	.. १, २, ३,४,५–सैल एक तुरत ; ६,७–महीधर तमकि
६।५०।५ रघुपति निकट गएउ घननादा	... १,२, ३, ४, ५–रघुपति निकट; ६,७–राम समीप
६।५०।७ देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना।	१,२, ३, ४, ५,७–प्रताप ; ६–प्रभाउ
६।५२ आएसु माँगि राम पहिँ, अंगदादि कपि साथ।	. १, २, ३, ४,५–माँगि; ७–माँगी; ६–माँगेउ
६।५२ लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाथ।	... १,२,३–क्रुद्ध होइ ; ६,७–सकोप अति ; ४,५–क्रुद्ध है
६।५४ जगदाधार सेष किमि, उठइ चले खिसिआइ।	... १,२,३,४,५–सेष ; ६,७–अनंत
६।५५ राम पदारबिंद सिर, नाएउ आइ सुखेन।	... १, २, ३, ४, ५–रामपदारबिंद ; ६,७–रघुपति चरन सरोज
६।५५।४ तासु पंथ को रोकन पारा।	... १, २, ३–पारा ; ४, ५–रोकनहारा ; ६,७–रोकनिहारा
६।५५।५ छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना।	... १,२,३,४,५–मृषा ; ६,७–बृथा
६।५५।७ मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू। महा मोह निसि सूतत जागू।	... १, २, ३, ४, ५–मैं तैं मोर मूढ़ता;६,७–अहंकार ममता मद; ७–सोवत ;
६।५७।२ मानहु सत्य बचन कपि मोरा।	... १, २, ३, ४, ५, ७–कपि ; ६–प्रभु
६।५७।३ निसिचर निकट गएउ कपि तबहीं।	१,३,४,५–कपि ; ६,७–सो
६।५८ बिनु फर सायक मारेउ, चाप स्रवन लगि तानि।	··· १,२,३,४,५,७–सायक ; ६–सर तकि
६।५८।२ सुनि प्रिय बचन भरतु तब धाए।	... १,२,३,४,५,७–तब ; ६–उठि
६।५९।२ कपि सब चरित समास बखाने।	... १,२,३,४,५,७–समास; ६–संछेप

६।६०	तव प्रताप उर राखिप्रभु, जैहौं नाथ तुरंत। अस कहि आयेसु पाइ, पद बंदि चलेउ हनुमंत।	... १,२,३,४,५–आ० का पाठ है ; ६, ७–तव प्रताप उर राखि गोसाईं। जैहौं राम बान की नाईं॥ भरत हरषि तब आयसु दयऊ। पद सिर नाइ चलत कपि भयऊ॥
६।६०	मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवन कुमार।	... १,२,३,४,५,७–मन महुँ जात सराहत ; ६–जात सराहत मनहि मन
६।६०।११	जैहौं अवध कौन मुहुँ लाई।	... १, ३, ७–मुहुँ ; २,४,५–मुह ; ६–मुख
६।६१	प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।	... १, २, ३, ४, ५–प्रलाप ; ६,७–बिलाप
६।६१।६	व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।	... १,२,३,४,५–आवा, जगावा; ६, ७–गयऊ करि बहु जतन जगावत भयऊ
६।६१।८	कुंभकरन बूझा कहु भाई।	१,२,३,४,५,७–कहु ; ६–सुनु
६।६२।६	नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा, कहतेउँ तोहि समय निर्बहा।	... १, २, ३, ४,५–कहा...निर्बहा ; ६,७–कहेऊ...निर्बहेऊ
६।६२।७	लोचन सुफल करौं मैं जाई।	१,२,३,४,५,७–मैं ; ६–निज
६।६३	राम रूप गुन सुमिरत, मगन भएउ छन एक।	... १,२,३,४,५–सुमिरत ; ६,७–सुमिरि मन
६।६३।३	देखि बिभीषनु आगे आएउ। परेउ चरन निज नाम सुनाएउ।	... १,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है ; ६–गएऊ। पद गहि नाम कहत निज भएऊ
६।६४।१	बंधु बचन सुनि चला बिभीषन।	१,२,३,४,५,७–चला ; ६–फिरा
६।६४।४	लिए उठाइ बिटप अरु भूधर।	... १,२,३–उठाइ ; ४,५–उठाय; ६,७–उपारि

६।६४।५ करहिं भालु कपि एक एक वारा।	१,२,३,६–एक एक ; ४,५,७–एकहि
६।६४।६ मुरयौ न मनु तनु टरयौ न टारयौ। जिमि गज अर्क फलनि को मारयौ।	१,२,३,४,५–में मा० का पाठ है; ६,७–मुरै न मन तन टरै न टारा। जिमि गज अर्क फलन्हि कर मारा॥
६।६५ अंगदादि कपि मुरछित, करि समेत सुग्रीव।	... १,३,४,५–मुरछित ; २–मुर्छित ; ६,७–घाय बस
६।६५।५ सुग्रीवहुँ कै मुरछा बीती।	१,२,३,४,५–सुग्रीवहुँ ; ६, ७–कपिराजहुँ
६।६५।७ गहेउ चरन गहि भूमि पछारा।...	१,२,३,४,५–गहेउ चरन गहि ; ६,७–गहेसि चरन धरि धरनि
६।६५।८ जयति जयति जय कृपा निधाना। ...	१,२,३,४,५–में मा०का पाठ है ; ६,७–जय जय कारुनीक भगवाना
६।६५।९ नाक कान काटे जिय जानी।	... १,२,३,४,५,७–जिय ; ६–सोइ
६।६६ एकहिं बार तासु पर, छाडेन्हि गिरि तरु जूह।	... १,२,३,४,५–तासु ; ६, ७–जो तासु ; १,२,६–छाडेन्हि ; ३,४,५,७–डारेन्हि
६।६६।६ मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे।	... १,२,३,४,५,७–सब ; ६–रन
६।६६।७ कुंभकरन कपि फौज बिडारी।	... १,२,३,४,५,७–बिडारी ; ६–बितारी
६।६७ सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज, सभारेहु सेन।	... १, २, ३. ४, ५–सुग्रीव बिभीषन अनुज ; ६, ७–सौमित्र कपीस तुम्ह सकल
६।६७।१ कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा।	... १,२,३,४, ५–साजि,...अरि दल अरि दल दलन ; ६,७–बिसिख, मृगपति ठवनि

६।६७।४ जह तहँ चले बिपुल नाराचा। ...	१, २, ३, ४, ५–जहँ तहँ चले बिपुल; ६, ७–अति तब चले निशित
६।६७।७ लागत बान जलद जिमि गाजहिँ। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–जलद; ६–बनद
६।६८ पुनि रघुबीर निषंग महुँ, प्रबिसे सब नाराच। ...	१,२,३,४,५–रघुबीर निषंग महुँ; ६,७–रघुपति के स्रोन महुँ
६।६८।१ हति छन माँझ निसाचर धारी।...	१,२,३,४,५–हति छन माँझ निसाचर; ६, ७–हती निमिष महँ निसिचर
६।६८।२ भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा। ...	१,२,३,४,५,७–भा अति क्रुद्ध महा; ६–भएउ क्रुद्ध दारुन
६।६८।८ बिहँसा जबहिँ निकट कपि आए। ..	१,२,३,४,५–कपि; ६–भट; ७–चलि
६।६९ महानाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस। ...	१,२,३,४,५–महानाद करि गर्जा; ६,७–गर्जत धाएउ बेग अति
६।७० करि चिक्कार घोर अति, धावा बदनु पसारि। होति पुकारि। ...	१,२,३,४,५–करि चिक्कार घोर अति......होति; ६, ७–करि चिकार अति घोर तर...होत
६।७०।३ सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा। ...	१,२,३, ४, ५, ७–मुख सन्मुख; ६–सनमुख सो।
६।७०।९ सुर दुंदुभी बजावहिँ हरषहिँ। ... अस्तुति करहिँ सुमन बहु बरषहिँ	१, २, ३, ४, ५, ७–सुर; ६–नभ, १, २,३, ४, ५–अस्तुति करहि सुमन बहु; ६–जय जय करि प्रबल सुर; ७–जय जय करहि सुमन सुर
६।७१ रुम बिंदु मुख राजीव लोचन, अरुन तन सोनित कनो ...	१,२, ३, ४,५–अरु तन; ६,७–रुचिर तन

६।७१	निसिचर अधम मलाकर, ताहि दीन्ह निज धाम ।	... १,२,३, ४, ५–मलाकर; ६,७–मलायतन
६।७१।१	निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती ।...	१,२,३,४,५–सुकृत, ६,७–धर्म
६।७२	मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गयउ अकास ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–मायामय; ६–माया रचित
६।७२	गर्जेउ अट्टहास करि, भइ कपि कटकहि त्रास ।	... १, २, ३, ४, ५–अट्टहास करि; ६,७–प्रलय पयोद जिमि
६।७२।३	दस दिसि रहे बान नभ छाई । ..	१,२,३,४,५–दस दिसि रहे बान नभ; ६, ७–रहे दसहुँ दिसि सायक
६।७२।४	धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना ।...	१,२,३,४,५–सुनिअ धुनि; ६, ७–सुनहिं कपि
६।७२।१३	रन सोभा लगि प्रभुहिँ बँधायो । नाग पास देवन्ह भय पायो ।	... १,२, ३, ४,५–प्रभुहि बँधायो; ७–आपु बधावा;१,२–नाग पास देवन्ह भय पायो; ३,४,५–नाग पास देवन्ह दुख पायो ६,७–देखि दसा देवन्हि भय पावा
६।७३	गिरिजा जासु नाम जपि, मुनि काटहिँ भव पास । सो कि बंध तर आवै, व्यापक विस्व निवास ।	... १, २, ३, ४,५,७–गिरजा, ६–खगपति; १,२,३,४,५–सो कि बंध तर आवै; ६,७–सो प्रभु आव कि बंध तर
६।७३।५	लागेसि अधम पचारै मोहीं ।	... १, २, ३, ४, ५–अधम; ६,७–पतित
६।७३।६	अस कहि तरल त्रिसूल चलायो ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–तरल; ६–तीव्र
६।७३।७	परा भूमि घुर्मित सुरघाती ।	... १, २, ३, ४, ५,७–भूमि; ६–धरनि

६।७४ खगपति सब धरि खाए, माया नाग बरूथ। माया बिगत भए सब, हरषे बानर जूथ।	... १, २, ३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७—पन्नगारि खाए सकल छन महँ व्याल बरूथ। भए बिगत माया तुरत हरषे बानर जूथ।
६।७४।३ इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७—सो सुधि पाइ बिभीषन कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई
६।७४।५ नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि।	... १, २, ३, ४, ५—पुनि; ६,७—रिपु
६।७४।६ जामवंत सुग्रीव बिभीषन।	... १, २, ३, ४, ५,७—सुग्रीव; ६—कपिराज
६।७५ रघुपति चरन नाइ सिरु, चलेउ तुरंत अनंत। सुभट हनुमंत।	... १,२,३,४,५,७—रघुपति चरन नाइ सिर...सुभट; ६—बंदि राम पद कमल जुग...रिषभ
६।७५।२ कीन्ह कपिन्ह सब जश बिधंसा।	... १, २, ३, ४, ५,७—कीन्ह कपिन्ह सब; ६—तब कीसन्ह कृत
६।७५।१४ लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा। एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७—एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा। अब बध उचित कपिन्ह भय पावा
६।७६ धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान।	... १,२,३,४,५—धन्य तव जननी; ६,७—सक्रजित मातु तव
६।७६।२ श्री रघुनाथ बिमल जसु गावहिं।	... १,२,३, ४, ५—रघुनाथ; ६,७—रघुबीर

६।७७	तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सब नारि। नस्वर रूप जगत सब, देखहु हृदय बिचारि।	... १, २, ३, ४, ५–दसकंठ बिबिध बिधि ...जगत सब ; ६,७–लंकेस अनेक बिधि...प्रपंच
६।७७।१	आपुन मंद कथा सुभ पावन।	... १, २, ३, ४, ५,७–पावन; ६–भाव न
६।७८	गोमाय गीध करार खर रव, स्वान बोलहिं अति घने।	... १,२,३,४–बोलहिं ; ५,६,७–रोवहिं
६।७८।२	प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–मरुत ; (पवन)
६।७८।८	प्रलय समय के घन जनु गाजहिं।	... १,२,३,४,५–प्रलय समय; ६, ७–महाप्रलय
६।७९	भिरे बीर इत रामहित, उत रावनहि बखानि।	... १,२,३,४–राम हित ; ५–राम कहि; ६,७–रघुपतिहि
६।८०	सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पद कंज।	... १, २, ३, ४,५–सुनि प्रभु बचन बिभीषन; ६,७–सुनत बिभीषन प्रभु बचन
६।८०	एहि मिस मोहि उपदेसेहु, राम कृपा सुख पुंज।	... १, २, ३,४, ५–एहि मिस मोहि उपदेसेहु; ७-एहि बिधि मोहि उपदेसे ; ६–एहि बिधि मोहि उपदेस दिअ
६।८०	उत पचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान।	... १,२,३–पचार दसकंधर; ४,५, ७–प्रचार दसकंधर ; ६–प्रचार दसकंठ भट
६।८०।६	उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं। गहि पद अवनि पटकि डारहिं।	... १, २, ३, ४, ५, ७–उपारहिं... डारहिं; ६–उपाटहि...डाटहिं
६।८०।७	ऊपर ढारि देहिं बहु बालू।	... १–ढारि; ३,४,५,६,७–डारि ; २–टारि

६।८१ निज दल बिचलत देखेसि, बीस भुजा दस चाप। रथ चढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप।	... १,२,३,४,५–बिचलत देखेसि··· रथ चढ़ि चलेउ दसानन;६,७– बिचल बिलोकि तेहि···चलेउ दसानन कोपि तब
६।८१।४ चला न अचल रहा रथ रोपी।	... १, २, ३, ४, ५, ७–रहा रथ; ६–महारथ
६।८२ निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ। लछिमन चले सक्रुद्ध होइ, नाइ राम पद माथ॥	... १,२,३,४, ५–निज दल बिकल देखि कटि कसि...सक्रुद्ध होइ; ६–बिचलत देखि अनीक निज कटि...सरोष तब; ७–निज दल बिकल बिलोकि तेहि......कोपि तब
६।८२।४ कोटिन्ह आयुध रावन डारे।	... १,२,३,४,५,६–डारे ; ७–मारे
६।८२।७ परेउ धरनि-तल सुधि कछु नाहीं।...	१, २, ३, ४, ५–धरनि ; ६,७– अवनि
६।८३ ब्रह्मांड भवन बिराज जाके, एक सिर जिमि रज कनी।	... १,२,५,६–भवन ; ३,४,७–भुवन
६।८३ देखि पवन सुत धाएउ, बोलत बचन कठोर। आवत कपिहि हन्यो तेहिं, मुष्टि प्रहार प्रघोर॥	... १, २, ३, ४, ५–देखि पवन सुत धाएउ···आवत कपिहि हन्यो तेहि; ६,७–देखत धाएउ पवन- सुत ··आवत तेहि उर महँ हतेउ
६।८३।१ जानु टेकि कपि भूमि न गिरा।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–गिरा ; (परा)
६।८३।८ पुनि कोदंड बान गहि धाए। रिपु सन्मुख अति आतुर आए।	... १, २, ३, ४, ५, ७ में आ० का ... पाठ है; ६–धरि सर चाप चलत पुनि भए। रिपु समीप अति आतुर गए।

६।८४ राम बिरोध बिजय चह, सठ हठ बस अति अग्य।	... १,२,३,४,५–राम बिरोध बिजय चह ; ६–जय चाहत रघुपति बिमुख ; ७–बिजय चहत रघुपति बिमुख
६।८४।३ पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर।	... १,२,३,४,५–नाथ; ६,७–देव
६।८४।८ अस कहि अंगद मारा लाता।	... १, २, ३, ४, ५–मारा ; ६,७–मारेउ
६।८५ नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन्ह लातन्ह मारहीं।	... १, २, ३, ४,५–करि कोप कपि; ६,७–कपि कोपि तब
६।८५ जग्य बिधंसि कुसल कपि, आए रघुपति पास। चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस ॥	.. १,२,३,४,५–जग्य बिधंसि कुसल कपि...निसाचर; ६, ७–मख बिधंसि करि कुसल सब.. ... लंकपति
६।८५।५ इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही।	... १, २, ३,४,५,७–अस्तुति ; ६–बिनती
६।८६ सोभा देखि हरषि सुर, बरषहिं सुमन अपार।	... १,२,३,४,५–सोभा देखि हरषि सुर ; ६, ७–हरषे देव बिलोकि छबि
६।८६ जय जय जय करुना निधि, छबि बल गुन आगार।	... १, २, ३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७–जय जय प्रभु गुन ग्यान बल धाम हरन महिभार।
६।८६।२ देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। घट्टा।	... १,२,३,४,५,७–भट्टा .. घट्टा ; ६–भटा...घटा
६।८६।३ जनु दह दिसि दामिनी दमंकहिं।	... १,२,३,४,५,६–दह ; ७ दस
६।८६।४ गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा।	... १, २, ३–गर्जहिं ; ४,५–गरजहिं; ६, ७–गर्जत
६।८६।१० सबहिं सैल जनु निर्झर भारी	... १, २, ३, ५–भारी ; ४, ६,७–बारी

६।८७ कादर भयंकर रुधिर सरिता, चली परम अपावनी।	... १,२,३,४,५—चली; ६,७-बढ़ी
६।८७ कादर देखि डरहिं तहँ, सुभटन्ह के मन चेन।	... १,२,३,४,५—देखि डरहिं तहँ; ६,७—देखत डरहिं तेहि
६।८७।१० कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोलहिं।	१,२,६—चल्लहिं;३,५—डोल्लहिं; ४,७—डोलहि
६।८८ खप्परिन्ह खग्ग अलुभिम जुझहिं,... सुभट भटन्ह ढहावहीं।	१, २,३,४,५—भटन्ह ढहावहीं; ६,७—सुरपुर पावहीं
६।८८ बानर निसाचर निकर मर्दहिं, राम बल दर्पित भए।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६, ७—निसिचर बरूथ बिमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भए
६।८८ रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संघार।	... १, २, ३, ४, ५—रावन हृदय बिचारा; ६, ७—हृदय बिचारेउ दसबदन
६।८८।४ हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा।	... १, २, ३, ४, ५—हरषि चढ़े; ६—बिहँसि चढ़े ; (हरषि चले)
६।८८।६ लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची।	१,२,३,४,५—लछिमन कपिन्ह सो मानी; ६,७—सब काहू मानी करि
६।८९ बहु राम लछिमन देखि मर्कट, भालु मन अति अपडरे।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६, ७—बहु बालि सुत लछिमन कपीस बिलोकि मरकट अपडरे
६।८९ माया हरी हरि निमिष महुँ, हरषी सकल मर्कट अनी।	... १, २, ३, ४, ५- मर्कट ; ६,७—बानर

६।८९।२ गर्जत तर्जत सन्मुख धावा।	... १, २, ३, ४—धावा ; ५, ६,७—आवा
६।८९।५ खरदूषन बिराध तुम्ह मारा।	... १, २, ३, ४,५,७—बिराध ; ६—कबंध
६।८९।६ बिहँसि बचन कह कृपा निधाना।	..१,२,३,४,५—बिहँसि बचन कह; ६—कहेउ बिहँसि तब; ७—बिहंसि कहे तब
६।९० राम बचन सुनि बिहँसा, मोहि सिखावत ज्ञान।	... १,२,३,४,५—बिहँसा; ७—बिहँसेउ ; ६—बिहँसि कह
बयरु करत नहिँ तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान।	... १,२,३,४,५,७—डरे; ६—डरेहु
६।९०।३ पावक सर छाँड़ेउ रघुबीरा।	.. १,२,३,४,५-पावक सर; ६,७—अनल बान
६।९०।४ बान संग प्रभु फेरि चलाई।	... १, २, ३, ४, ५—चलाई; ६,७—पठाई
६।९१ कोदंड धुनि अति चंड सुनि, मनुजाद सब मारुत ग्रसे।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७—सब ; (भय)
६।९१ तानेउ चाप स्रवन लगि, छाँड़े बिसिख कराल।	... १, २, ३, ४, ५—तानेउ चाप; ६,७—तानि सरासन
६।९१।११ पुनि पुनि प्रभु काटत भुज बीसा।	... १,२-बीसा ; ३, ४, ५, ६, ७—सीसा
६।९२।४ दंड एक रथ देखि न परेऊ। जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ।	... १,२,३,४,५,७—परेऊ····दिनकर दुरेऊ ; ६—परा···दिनमनि दुरा
६।९२।८ कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा।	... १, २, ३, ४, ५—सुग्रीव; ६,७—हनुमान
६।९३ सिर मालिका कर कालिका गहि, बृंद बृंदन्हि बहु मिलीँ।	... १, २, ३, ४, ५,७—कर कालिका गहि; ६—गहि कालिका कर

६।९१ पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ, छाड़ी सक्ति प्रचंड।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–पुनि रावन अति कोप करि छाड़िसि; (पुनि दसकंठ क्रुद्ध करि छाड़ी)
६।९३।१ आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारत भंजन पन मोरा।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७–सर धारा। प्रनतारति हर बिरद सँभारा
६।९४ रघुबीर बल दर्पित बिभीषनु, घालि नहिँ ता कहुँ गनै।	... १, २, ३, ४, ५–दर्पित; ६,७–गर्वित
६।९४ सो अब भिरत काल ज्यौं, श्री रघुबीर प्रभाउ।	... १,२,३,४,५,७–सो अब भिरत... ६–भिरत सो काल समान अब
६।९४।४ पुनि रावन कपि हतेउ पचारी। चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी।	... १,२,३, ४, ५–कपि......चलेउ गगन; ६,७–तेहि......चलेउ
६।९५ तब रघुबीर पचारे, धाए कीस प्रचंड। कपि बल प्रबल देखि तेहिँ, कीन्ह प्रगट पाखंड।	... १, २, ३, ४, ५–तब रघुबीर पचारे......देखि; ६, ७-राम प्रचारे बीर तब ...बिलोकि
६।९५।३ जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा।	... १,२,३,४,५–जहँ तहँ भजे...; ६,७–भागे भालु बिकल भट कीसा
६।९५।४ भागे बानर धरहिँ न धीरा।	... १,२,३, ४, ५–भागे बानर; ६, ७–चले बली मुख
६।९६ सजि सारंग सर एक सर, हते सकल दससीस।	... १, २, ३, ४, ५–सारंग; ६,७, बिसिखासन
६।९६।५ अस्तुति करत देवतन्हि देखे।	... १,२–अस्तुति करत...; ३,४,५–अस्तुति करत देव तेहि; ६–करत प्रसंसा सुर तेहि देखे; ७–करत प्रसंसा सब सुर देखे

६।६६।६ अस कहि कोप गगन पर धाएल। ...	१,२,७–पर; ३,४,५,६–पथ
६।६७ तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सरचाप। काटे बहुत बढ़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप। ...	१,२,३,४,५–रावन के...काटे बहुत बढ़े पुनि......; ६,७–लंकेस के......काटे भए बहोरि जिमि कर्म मूढ़ कर पाप
६।६७।३ बानर राज दुबिद बल सीला। ...	१,२,३,४,५,७–बानरराज दुबिद; ६–दुबिद कपीस पनस
६।६७।७ रुधिर देखि बिषाद उर भारी। ...	१,२,३,४,५–रुधिर देखि बिषाद उर भारी; ६,७–रुधिर बिलोकि सकोप मुरारी।
६।६८ गहे भालु बीसहु कर मनहुँ, कमलन्हि बसे निसि मधुकरा। ...	१,२,६–गहे; ३,४,५,७–गहि;
६।६८ मुरछा बिगत भालु कपि, सब आए प्रभु पास। ...	१, २, ३, ४, ५–मुरछा बिगत; ६,७–गै मुरछा तब
६।६८।११ बहु बिधि कर बिलाप जानकी। ...	१,२,३–कर; ५,६,७–करति; ४–करत
६।६६ तब रावनहि हृदय महुँ, मरिहहिँ रामु सुजान। ...	१,२,३,४,५,७–रावनहि; ६–रावन के
६।६६।३ जुग सम भई सिराति न राती। ...	१, २,७–सिराति; ६–बिहाति; ३,४,५–न राति सिराती
६।१०१ ताके गुन गन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास। जिमि निज बल अनुरूप ते, माछी उड़ै अकास। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७– कहे तासु गुन गन कछुक...निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास
६।१०१।५ नाभि कुंड पियूष बस याके। ...	१, २, ३, ४, ५–पियूष; ६, ७–सुधा

६।१०१।७ **असुभ होन लागे** तब नाना। **रोवहिँ खर सुकाल** बहु स्वाना।	... १, २, ३, ४, ५, ७–असुभ होन लागे…रोवहिँ खर…; ६–असगुन होन लगे…रोवहि बहु सुकाल खर स्वाना
६।१०२ प्रतिमा **स्रवहिँ** पविपात नभ, अति बात बह डोलति मही।	... १, २, ३, ४, ५–रुदहिँ; ६,७–स्रवहिँ
६।१०२ उतपात अमित बिलोकि **नभ सुर,** बिकल बोलहिँ जय जए।	... १, २,३,४,५–नभ सुर; ७–सुर-मुनि; ७–मुनि सुर
६।१०२ **खैँचि सरासन स्रवन लगि,** छाँडे सर एकतीस।	... १, २, ३, ४, ५–खैँचि सरासन स्रवन लगि; ६, ७–आकरषेउ धनु कान लगि
६।१०२।३ तब सर हति प्रभु कृत **दुइ** खंडा।	... १,२,३–दुइ; ४,५,६,७–जुग
६।१०२।६ **धरनि परेउ** द्वौ खंड बढ़ाई।	... १,२,३,४,५–धरनि परेउ; ६, ७–परेउ बीर
६।१०२।८ प्रबिसे सब निषंग महुँ **आई**।	... १,२,३,४–आई; ५,६,७–आई
६।१०३ **सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल,** बाज दुंदुभि गहगही।	१,२,३,४,५–सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल; ६, ७–सिद्ध मुनि गंधर्व हरषे
६।१०३ **भालु कीस सब हरषे,** जय सुख धाम मुकुंद।	... १, २, ३, ४, ५–भालु कीस सब हरषे; ६,७–हरषे बानर भालु सब
६।१०३।३ **छूटे कच नहिँ** बपुष सँभारा।	... १,२,३,४,५–छूटे कच नहिँ बपुष सँभारा; ६–छूटे चिकुर न सरीर सँभारा; ७–छूटे चिकुर न चीर सँभारा
६।१०४ **अहह** नाथ रघुनाथ सम, कृपा सिंधु **नहिँ** आन। **जोगि बृंद दुर्लभ गति,** तोहि दीन्हि भगवान।	... १, २, ३, ४, ५–नहिँ ६,७–को १,२,३,४,५,७–जोगि बृंद दुर्लभ, ६–मुनि दुर्लभ जो परम गति

६।१०४।४	रुदन करत देखी सब नारी।	... १, २, ३, ४, ५–देखी ; ६,७–बिलोकि
६।१०४।५	बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा। ... तब प्रभु अनुजहि आयेसु दीन्हा।	१,२,३, ४, ५,७–बिलोकि...तब प्रभु अनुजहिं ; ६,७–देखत ; ६–राम अनुज कहँ
६।१०४।६	लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो।	१,२,३,४,५,७–तेहि बहु बिधि समुझायो ; ६–आइ ताहि समुझाएउ
६।१०५	मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि। भवन गईं रघुपति गुन, गन बरनत मन माहिं।	... १, २, ३, ४, ५–मंदोदरी आदि सब...रघुपति ; ६, ७–मय ... तनयादिक नारि सब...रघुबीर
६।१०५।६	तिलक सारि अस्तुति अनुसारी।	... १,२,३,४,५,७–सारि ; ६–कीन्ह
६।१०६	प्रभु के बचन श्रवन सुनि, नहिं अघाहिं कपि पुंज। बार बार सिर नावहिं, गहहिं सकल पद कंज।	... १,२,३,४,५–प्रभु के बचन···बार ... बार सिर नावहिं ...;६,७–सुनत ... राम के बचन मृदु···बारहिं बार बिलोकि मुख
६।१०६।४	जनक सुता देखाइ पुनि दीन्ही।	१,२,३,४,५,७–पुनि ; ६–तिन्ह
६।१०७	सानुकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत।	... १,२,३,४,५–कोसलपति ; ६,७–रघुबंस मनि
६।१०७।३	मुनि संदेसु भानुकुल भूषन।	... १,२,३,४,५–संदेसु भानुकुल ; ६,७–बानी पतंगकुल
६।१०७।६	बेगि बिभीषन्ह तिन्हहि सिखायो।... तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो।	१, २, ३, ४, ५–सिखायो। तिन्ह बहु बिधि···; ६, ७–सिखावा। सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा
६।१०७।७	बहु प्रकार भूषन पहिराए।	... १,२,३,४,५,७–बहु प्रकार ; ६–दिब्य बसन

६।१०७।११ देखहु कपि जननी की नाईं।	... १, २, ३, ४, ५–देखहु ; ६,७–देखहिं
६।१०८ तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद।	... १,२,३,४,५–करुनानिधि; ६,७–करुनायतन
सुनत जातुधानी सब, लागीं करै बिषाद।	... १,२,३,४,५–सब ; ६,७–सकल
६।१०८।३ बिरह बिबेक धरम निति सानी।	... १,२–नीति ; ४–स्रुति ; ३,५,६–नुति ; ७–नय
६।१०८।५ पावक प्रगटि काठ बहु लाए।	... १,२,३,४,५,७–पावक प्रगटि ; ६–प्रगटि कृसानु
६।१०८।६ पावक प्रबल देखि बैदेही।	... १,२,३,४,५–पावक प्रबल; ६,७–प्रबल अनल बिलोकि बैदेही
६।१०९ धरि रूप पावक पानि गहि, श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–सब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री
६।१०९ बरषहिं सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान। गावहिं किन्नर सुर बधू, नाचहिं चढ़ीं बिमान।	... १,२,३,४,५–बरषहिं सुमन हरषि सुर...सुरबधू ; ६,७–हरषि सुमन बरषहिं बिबुध...अपछरा
६।१०९ जनक सुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार। देखि भालु कपि हरषे, जय रघुपति सुख सार॥	... १,२,३,४,५–जनक सुता समेत; ६,७–श्री जानकी समेत ; १,२,३,४,५–देखि भालु कपि हरषे; ६–देखत हरषे भालु कपि ; ७–हरषे देखत भालु कपि
६।१०९।६ यह खल मलिन सदा सुर द्रोही।	१,२,३,४,५,७–यह खल मलिन सदा ; ६–रावन पापमूल

६।१०९।१० अधम सिरोमनि तव पद पावा। ...	१,२,३,४,५,७ में भा० का पाठ है; ६-सोउ कृपाल तव धाम सिधावा
६।१०९।११ स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी। ...	१,२,३,४,५,७-प्रभु ; ६-तव
६।११० अति सप्रेम तन पुलकि बिधि,... अस्तुति करत बहोरि।	१,२,३,४,५-अति सप्रेम तनु पुलकित ; ६,७-अतिसय प्रेम सरोज भव
६।११०।१४ मद मार मुधा ममता समनं। ...	१, २, ३, ४, ५-मुधा ; ६,७-महा
६।११०।१५ सब रूप सदा सब होइ न गो। ...	१,२,३-गो ; ४,५,६,७-सो
६।११०।१७ निरखंति तवानन सादर ए। ...	१,२,३,४,५,७-ए ; ६-जे
६।१११ बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात। ...	१,२,३,४,५-चतुरानन ; ६,७-बिधि भाँति बहु
सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात। ...	१,२,३,४,५-सोभा सिंधु बिलोकत ; ६, ७-बदन बिलोकत राम कर
६।१११।२ अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७-सहित अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा
६।११२ सोभा देखि हरषि मन, अस्तुति कर सुरईस। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७-छबि बिलोकि मन हरषित
६।११३।३ सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी।	१, २, ३, ४, ५-खगेस ; ६,७-खगपति
६।११३।७ मुक्त भए छूटे भव बंधन। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६-गए ब्रह्म पद तजि सरोर रन; ७-गए परम पद तजि सरीर रन

६।११४	देखि सुअवसरु प्रभु पहिँ, आएउ संभु सुजान।	... १,२,३,४,५,७–प्रभु; ६–राम
६।११५	कृपा सिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार।	... १, २, ३, ४, ५,७–कृपा सिंधु मैं आउब; ६–तब मैं आउब सुनहु प्रभु
६।११५।७	पुनि मोहि सहित अवध पुर जाइअ।	...१,२,३,४,५,७–पुर; ६–प्रभु
६।११६	भरत दसा सुमिरत मोहि, निमिष कल्प सम जात।	... १,२,३,४,५–भरत दसा सुमिरत मोहि; ६,७–दसा भरत के सुमिरि मोहि
६।११६	तापस वेष गात कृस, जपत निरंतर मोहिं।	१, २,३,४,५–गात; ६,७–सरीर
६।११६	बीते अवधि जाउँ जौं, जिअत न पावौं बीर। सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर।	... १,२,३,४,५,७–बीते अवधि जाउँ जौ ... सुमिरत अनुज प्रीति; ६–जौ जैहौं बीते अवधि; ६,७–प्रीति भरत के समुझि
६।११६	पुनि मम धाम पाइहहु, जहाँ संत सब जाहि।	... १, २, ३, ४, ५–पाइहहु; ६,७–सिधाइहहु
६।११७	मुनि जेहि ध्यान न पावहिँ, नेति नेति कह बेद।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–ध्यान न पावहि जाहि मुनि;
६।११७।२	नाना जिनिस देखि सब कीसा।	... १,२,३,४,५–सब; ६,७–प्रभु
६।११७।५	सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू।	... १,५ डरपेहु; २,३–डरपहु; ४ डरेहु; ६,७–डरहु
६।११७।९	मसक कहूँ खगपति हित करहीँ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–कहूँ, ६–कतहुँ
६।११८	हरष बिषाद सहित चले, बिनय बिबिध बिधि भाखि।	... १, २, ३, ४, ५–सहित चले बिनय......; ६, ७–समेत तब चले बिनय बहु भाखि

६।११८ कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान।	...	१, २,३,४,५ में आ० का पाठ है; ६,७–आमवंत कपिराज नल अंगदादि हनुमान
६।११८।७ परम सुखद चलि त्रिविध बयारी।	...	१, २, ३, ४, ५, ६-चलि; ७–बह
६।११६ इहाँ सेतु बाँध्यो अरु, थापेउँ सिव सुख धाम। सीता सहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम।	...	१,२,३,४,५,७–इहाँ सेतु बाध्यों अरु...कृपानिधि; ६–यह देखि सुंदर सेतु अहँ...; ६, ७–कृपायतन
६।११६ जहँ जहँ कृपासिंधु बन, कीन्ह बास बिस्राम।	...	१,२,३,४,५–कृपासिंधु; ६–करुना सिंधु
६।११६।१ तुरत बिमान तहाँ चलि आवा।	...	१, २, ३, ४, ५–तुरत; ६, ७–सपदि
६।११६।७ निरखत जन्म कोटि अघ भागा।	...	१, २, ३, ४, ५-निरखत जन्म; ६,७–देखत जन्म
६।११६।९ पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि।	...	१, २, ३, ४, ५, ६–देखु; ७–देखेउ
६।१२० सीता सहित अवध कहुँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम। सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषित राम।	...	१,२,३,४,५ में आ० का पाठ है; ६, ७–तब रघुनायक श्री सहित अवधहि कीन्ह प्रनाम। सजल बिलोचन पुलक तन पुनि पुनि हरषत राम।
६।१२० कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ, दान बिबिध बिधि दीन्ह।	...	१,२,३,४,५–सहित बिप्रन्ह कहुँ; ६–समेत महि सुरन्ह कहँ; ७–सहित महि सुरन्ह कहँ
६।१२०।६ इहाँ निषाद सुना प्रभु आएउ।	...	१,२,३–सुना प्रभु; ४,५–सुन्यो प्रभु आए; ६–सुना हरि आए; २,७–सुना प्रभु आए

६।१२०।७	सुरसरि नाघि जान तब आयो।	... १, २, ४, ५,७–तब; ३,६–जब आया
६ १२१	समर विजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिं सुजान।	... १, २, ३, ४, ५–रघुबीर के चरित...; ६ ७–रघुपति चरित सुनिहिं जे सदा...
६।१२१	श्री रघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार।	... १,२,३,४,५–रघुनाथ नाम तजि नाहिन ...; ६, ७–रघुनायक नाम तजि नहिं कछु ..

उत्तर कांड

७।श्लो० १	सुरवर विलसद्विप्र पादाब्ज चिन्हं ...	१, २, ३, ४, ५, ७—सुरवर ; ६—उरवर
७।श्लो० २	कोमलावज महेश वंदितौ ...	१,२,३,५,६—कोमलावज, ४,७—कोमलाम्बुज
७।श्लो० ३	अंबिकापतिमभीष्ट सिद्धिदं ...	१,२,३,४,५,७—सिद्धिदम ; ६—मंदिरं
७।०	जानि सगुन मन हरष अति, लागे करन बिचार । ...	१,२,३,४,५,७—करन ; ६—करै
७।०।१	रहेउ एक दिन अवधि अधारा । ...	१,३,४,५,६—रहेउ; २,७—रहा
७।१।४	रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । ...	१,२,३,४,५,७—सुजन ; ६—सोजन
७।१।५	सीता सहित अनुज प्रभु आवत ।...	१,२,३,४—सहित अनुज प्रभु ; ५,७—अनुज सहित प्रभु ; ६—अनुज सहित पुर
७।१।६	तृषावंत जिमि पाइ पियूषा । ...	१,२,३,४,५—पाइ ; ६,७—पाव
७।१।११	यह संदेस सरिस जग माहीं । ...	१,३,४,५,७—यह ; २—एह ; ६—एहि
७।२	काहे न होइ बिनीत परम, पुनीत सदगुन सिंधु सो । ...	१,२,३,४,५,७—सिंधु ; ६—पाथ
७।२	कही कुसल सब जाइ हरषि, चलेउ प्रभु जान चढ़ि । ...	१,२,६—चलेउ ; ३,४,५,७—चले
७।२।६	गावत चली सिंधुर गामिनी । ...	२,५,६—चलि ; १,३,४—चली ; ७—चलि सब
७।२।१०	भइ सरजू अति निर्मल नीरा । ...	३,४,५—सरजू ; १,२,६—सरऊ ; ७—सरयू

७।३ चले भरत मन प्रेम अति, सन्मुख कृपा निकेत।	... १,२,३,४,५,७–मन प्रेम अति ; ६–अति प्रेम मन
७।३।१ कपिन्ह देखावत नगर मनोहर।	... ३,४,५,६ ७–मनोहर ; १, २–सुधाकर
७।३।४ अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।	... १,२,३,४,५–अवधपुरी सम…; ६,७–अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ
७।४।३ धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह।	... १,२,३,४,५,७–धरे ; ६–गहे
७।४।७ बर करि क्रिपासिंधु उर लाए।	... १,२,३,४,५,६,७–बर ; (बल)
७।५ जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि, मिले बर सुषमा लही।	... १, २, ४, ५–सुषमा ; ३,६,७–परमा
७।५ लछिमन भरत मिले तब, परम प्रेम दोउ भाइ।	... १,२,३,४,५,६–लछिमन भरत मिले तब ; ७–लछिमन भेंटे भरत पुनि
७।५।७ छन महिं सबहि मिले भगवाना।	... १,२,३, ७–महि ; ४,५–महँ ; ६–महु
७।६ कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले, मन कर छोभ न जाइ।	... १, २, ५, ७–कैकइ कहँ पुनि पुनि ; ३,४,६–कैकई कहुँ पुनि मिले; (कैकेई कहँ पुनि मिले)
७।६।२ होइ अचल तुम्हार अहिवाता।	... १,२–होइ ; ३–होहु ; ४,५,६, ७–होउ
७।७ लछिमन अरु सीता सहित, प्रभुहि बिलोकति मातु।…गातु।	... १, २, ३, ४, ५,७–मातु…गातु ; ६–मात…गात
७।७।५ मुनि पद लागहु सकल सिखाए।	... १,२,३,४,५–लागहु सकल ; ६, ७–लागन कुसल
७।८ चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि बर बृंद।	... १,२,३,६–बर ; ४,५,७–नर
७।८।६ तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं।	... १,२,३,४,५,७–यह ; ६–येह

७।६	होहिं सगुन सुभ बिबिध, बिधि बाजहिं गगन निसान।	... १,२,३,४,५–गगन ; ६,७–नाक
७।६।३	कृपासिंधु तब मंदिर गए।	... १,२,४,५–तब ; ३,६,७–अब··· गयऊ
७।६।४	आजु सुघरी सुदिन समुदाई।	... १,२,३–समुदाई ; ४,५,६,७–सुभदाई
७।१०	तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ हरषाइ।	... १,२,३,४,५–हरषाइ ; ६, ७–सिरनाइ
७।१०।१	देवन्ह सुमन बृष्टि झर लाई।	... १,२–झर ; ३,४,५,६,७–झरि
७।१०।८	अंग अनंग देखि सत लाजे।	... १,२,३–देखि सत लाजे ; ४,५,७–कोटि छबि लाजे ; ६–कोटि छबि छाजे
७।१२	नव अंबुधर बर गात, अंबर पीत सुर मन मोहई।	... १,२,३,४,५–सुर ; ६,७–मुनि
७।१२	भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गए सुर निज निज धाम।	... १,२,३,६–गए ; ७–गे ; ४,५–गये
७।१३	भव पंथ भ्रमत अमित दिवस, निसि काल कर्म गुननि भरे।	... १,२,३,५–अमित ; ४, ६, ७–अमित
७।१३	पल्लवत फूलत नवल नित, संसार बिटप नमामहे।	... १,२,३,५,७–नवल नित ; ४,६–नव ललित
७।१३।७	मनजात किरात निपात किए।	... १,२,३,५,६–मनजात ; ४,७–मनुजात
७।१३।१८	भव रोग महा गद मान अरी।	... १,२,३,६–गद ; ४,५,७–मद
७।१४।१	त्रिबिध ताप भव भय दावनी।	... १,२,३,४,५,६–भय ; ७–दाप
७।१४।५	लहहिं भगति गति संपति नई।	... १,२,३,४,५,६–नई ; ७–नितई
७।१५	जात न जाने देवस तिन्ह, गए मास षट बीति।	... १,२–देवस तिन्ह ; ३,४,५,६–दिवस तिन्ह ; ७-दिवस निसि

७।१५।१ जिमि पर द्रोह संत मन माही॑ । ... १,२,३—माहीँ; ४,५,७—माही॑; ६—माहिं

७।१७।६ राखहु सरन नाथ जन दीना । ... १,२,३,६—नाथ; ४,५,७—जानि

७।१६ करेहु दंडवत प्रभु सैँ, तुम्हहिँ कहौँ कर जोरि । ... १,२,३,४,५,६—सैँ; ७—सन

७।१६ चित्त खगेस राम कर, समुझि परै कहु काहि । ... १,२,३,,४,५,६—चित्त खगेस; ७—चित खगेस अस

७।२० चलहिँ सदा पावहिँ सुखहि, नहिँ भय सोक न रोग । ... १,२,७—सुखहि; ३,४,५,६—सुख

७।२०।२ चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती । ... १,२,३,४,५,७—नीती; ६—नीती

७।२०।७ सब निर्दंभ धर्म रत पुनी । ... २,६—पुनी; १,३,४,५,७—पुनी

७।२१।५ कहहिँ महा मुनिवर दमुसीला । ... १,३,५,६—वर दमसीला; २,४, ७—बरद सुशीला

७।२२ जीतहु मनहि सुनिअ अस, रामचंद्र के राज । ... १, २, ३, ४, ५, ७—सुनिअ अस; ६—अस सुनिअ जग

७।२२।५ लता विटप मागे मधु चवहीँ । ... १, ३, ४, ५, ६, ७—चवहीँ; २—बहहीँ

७।२३।६ उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । ... १,३,४,५,६—ब्रह्मादि;२,७- ब्रह्मानि

७।२५ ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया मन गुन पार । ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७—मन; (गुन गो)

७।२५।१ प्रातकाल सरजू करि मज्जन । ... १,२,६—सरऊ; ३,४,५—सरजू; ७—सरयू

७।२५।७ सबके गृह गृह होहिँ पुराना । ... १, २, ३, ४, ५, ७—गृह होहिँ; ६—होहिं बेद

७।२७ प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट, बनाइ बहु बज्रन्हि खचे । ... १,२,३,४,५,६—खचे; ७ पचे

७।२७ राम चरित जे निरखत मुनि, ते मन लेहिँ चोराइ । .. १,२,३,५—निरख; ४,६,७—निरखत

७।२७।६ जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं ।...	१, २, ३, ४, ५,७–देखहिं; ६–निरखहिं
७।२८ बाजार रुचिर न बनै बरनत, ... बस्तु बिनु गथ पाइए।	१,२,३,५,७–रुचिर ; ४,६–चारु
७।२८।४ चहुँ दिसि तिन्हके उपवन सुंदर ।...	१,३,४,५,७–तिन्ह के ; २–तिन्ह की ; ६–जिन्ह की
७।२८।५ बसहि ज्ञान रत मुनि सन्यासी । ...	१,२,३,४,५,७–बसहिँ; ६–सबहिँ
७।३० सानुकूल सब पर रहहिं, ... संतत कृपानिधान ।	१,२,३,४,५,७–रहहिं ; ६–रह
७।३०।२ बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ।	१,२,३–बहुतेन्ह सुख बहुतन ; ६–बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह ; ५,७–बहुतन्ह सुख बहुतन्ह; ४–बहुतेहु सुख बहुतन्ह
७।३१।८ राम कथा मुनिबर बहु बरनी । ...	१,२,३,४,५,७–मुनि बर बहु ; ६-मुनि बहु बिधि
७।३२।८ बड़े भाग पाइब सतसंगा । ...	१,२,३–पाइब ; ४,५,७–पाइय ; ६–पाइअ
७।३३ संत संग अपवर्ग कर, ... कामी भव कर पंथ । सद ग्रंथ ।	१, २, ३, ४, ५–संग ; ६,७–पंथ १, २, ३,४,५,७–सद ग्रंथ ; ६–सब ग्रंथ
७।३३।१ जय निर्गुन जय जय गुन सागर । ...	१,२,३,४,५,७–जय जय गुन-सागर ; ६–जय गुन निधि सागर
७।३३।४ अनुपम अज अनादि सोभाकर । ..	३,४,६,७–अनुपम अज; ५–अज अनुपम ; १,२,३–अति अनुपम
७।३४ परमानंद कृपायतन, ... मन परिपूरन काम ।	१,२,३,४,५,७–परिपूरन ; ६–पर पूरन
७।३४।२ प्रनत काम सुरधेनु कल्प तरु । ...	१,२,३,४,५,७–सुर ; ६–सुक
७।३४।३ सेवत सुलभ सकल सुखदायक । ...	१,२,३,४,५,६,७–सेवत; (सेवक)

७।३५।४ अंतरजामी प्रभु सभ जाना।	… १,२ सभ ; ३,४,५,६,७–सब
७।३६।२ बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई।	… १,२,३,४,५,७–पुरानन्ह ; ६–पुरानन्हि
७।३७ अनल दाहि पीटत घनहि, परसु बदनु यह दंड।	… १, २, ३, ४, ५,७–घनहि ; ६–घनन्हि
७।३७।४ भरत प्रान सम मम ते प्रानी।	… १,२,३,४,५,६,७–ते ; (तेइ)
७।३७।६ द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री।	… १, २, ६–जनयित्री ; ३, ४, ५–जनयत्री ; ७–जनजंत्री
७।३८।४ हरषहिँ मनहुँ परी निधि पाई।	… १, २, ३, ४, ५, ७–हरषहिँ ; ६–हरखैं
७।३८।५ निर्दय कपटी कुटिल मलायन।	… १,२,३,४,५,६,७–निर्दय;(निदय)
७।३९।८ बिप्र द्रोह परद्रोह बिसेखा।	… १,२,३,४,५–पर द्रोह ; ६,७–सुर द्रोह
४।४०।८ संत असंतन्ह के गुन भाखे। ते न परहिँ भव जिन्ह लखि राखे।	… १, २, ३, ४, ५,६,७–असंतन्ह ; (असंतेन्ह);१,२,३,४,५,७–परहिं; ६–परिहिं
४।४१।६ सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिँ।	१,२,३,४,५,७–अतिसय ; ६–सुर अति
७।४२।२ बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन। बोले बचन भगत भव भंजन।	… १, २, ३, ४, ५–गुरु मुनि अरु द्विज; ६,७–सदसि अनुज मुनि ; १,२,३,५–भगत भव ; ४,७–भक्त भय ; ६–भगत भय
७।४३।३ गुंजा ग्रहै परस मनि खोई।	… १,३,६–ग्रहै ; २–ग्रहैं ; ४,५,७–गहै
७।४४ सो कृत निंदक मंद मति, आत्माहन गति जाइ।	… १,२,३–आत्माहन ; ७–आतम हन; ४,५,६–आत्महन
७।४४।४ भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिँ सोऊ।	१,२,३,४,५,७–मोहि प्रिय नहिँ; ६–प्रिय मोहि न

७।४४।५ भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। ...	१, २, ३, ४, ५,७—सुतंत्र ; ६—स्वतंत्र
७।४६।८ निज निज गृह गए आइसु पाई।...	१,२,३,४,५,७—निज गृह गए आयसु ; ६- गृह गए सुआयसु
७।४७।२ पद पखारि पादोदक लीन्हा। ...	१,२,३,४,५,७—पादोदक ; ६—चरनोदक
७।४७।६ उपरोहित्य कर्म अति मंदा। ...	१, ३, ५—उपरोहित्य ; २—उप-रोहित ; ४,६,७—उपरोहिती
७।४८।५ घृत कि पाव कोइ बारि बिलोए। ...	१,३—कोइ ; २—कोई ; ४,५,६, ७-कोउ
७।४६।४ दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइँ चाहे।	१, २—तेइ ; ३,४,५,६,७—जेइ; (जोइ)
७।४६।८ हनूमान सम नहिँ बड़भागी। ···	१,२,३,४,५,७—सम नहिँ; ६—समान
७।५०।१ कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन। ···	१,२,३,४,५,७—सोच ; ६—सोक
७।५०।८ कारुनीक ब्यलीक मद खंडन। ...	१ २, ३, ४, ५—ब्यलीक ; ६—बालीक ; ७ बालि.क
७।५२ तुम्हरी क्रिपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह। ...	१, २, ४, ५—क्रिपा कृपायतन ; ३,७—कृपा कृपायतन ; ६—कृपाल मइ
७।५२।६ ते जड़ जीव निजात्मक घाती। ...	१,२,३—निजात्मक ; ४, ५, ७—निजातम ; ६—निजात्म
७।५२।७ हरि चरित्र मानस तुम्ह गावा। ...	१,२,३,४,५,६—हरि चरित्र ; ७—राम चरित
७।५३ बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़, राम चरन अति नेह। ...	१,२,३,४,५,७—राम चरन ; ६—राम चरित
७।५५ सो सब सादर कहिहौं, सुनहु उमा मन लाइ। ...	१, २, ३, ४, ५,६—कहिहौं ; ७—कहउँ मैं

७।५५।६	कौतुक देखत फिरौं बेरागा । ...	१,२ ३–बेरागा;४,५–बिरागा;७–बिमागा ; ६–फिरै बिरागा
७।५६।६	आँब छाँह कर मानस पूजा । ...	१, २, ३, ४, ६–आँब ; ५,७–आम
७।५६।८	आवहिँ सुनहिँ अनेक बिहंगा ।	१, २, ३, ४, ५, ७–सुनहि ; ६–सुनै
७।५८।८	सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा । ...	१,२,३,४,५–जेहि होइ ६,७–जो देहिं
७।५९।२	समुझि प्रताप प्रेम अति छावा । ...	१,२,३,४,५–अति ; ६,७–उर
७।५९।५	अग जग मय जग मम उपराजा । ...	१,२,३,४,५–जग ; ६,७–सब
७।६०।२	सुनि ता करि बिनती मृदुबानी । ...	६–बिनीत ; १,३,४,५,७–बिनती; २–ताकरी बिनती
७।६१।१	किए जोग तप ज्ञान बिरागा । ...	१,२,३–तप ; ४,५,६,७–जप
७।६२	सिव बिरंचि कहु मोहै, केहि बपुरा आन । ...	१,२,३,४,५,६–मोहै; ७–मोह है; (मोहइ)
७।६२।१	गयउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडा । ...	१,२,३,४–भुसुंडा; ५,७–भुसुंडी
७।६२।८	कथा अरंभ करइ सोइ चाहा । ...	१,२,३–करइ ; ४,५,६,७–करै
७।६३	जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुख कीन्हि महेस । ...	१,२,३,६–जेहि कै; ७–जेहि की; ४,५–जिन्ह कै
७।६३।१	सुनहु तात जेहि कारन आयउँ ।...	१,२,३,४,५–कारन ; ६- कारज
७।६३।३	सदा सुखद दुख पुंज नसावनि । ...	१,३,४,५,७–पुंज ; २,६–पूंग
७।६५	कहि बिराध बध जेहि बिधि, देह तजी सरभंग । बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्ति सन संग । ...	१,२,३,४,५,६–जेहि...सन संग ७–जाहि......सतसंग
७।६६	पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रान कर भंग । ...	१,२,३,४,५,६–मिताई ; ७–मिताइ कहि

७।६६ कपिहि तिलक करि प्रभु कृत, सैल प्रवरषन बास । बरनत बरषा सरद रितु, राम रोष कपि त्रास ।	... १,२–क्रित ; ३, ४, ५, ६–कृत ; ७–सुकृत । २,३,४,५–बरनन ; १,६–बरनत; ७–बरने । १, ७– त्रास, ३,४,५– अरु, ६–कर;
७।६७ निसिचर कीस लराई, बरनिसि बिबिधि प्रकार ।	... १, २, ३, ४, ५, ६–लराई ; ७– ... लराइ पुनि
७।६७।६ पुर बरनन नृप नीति अनेका ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–बरनन ; ६– बरनत
७।६८ चिदानंद संदोह, राम बिकल कारन कवन ।	... १, २, ३, ४, ५,७–संदोह ; ६– सो मोह
७।६८।२ सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना ।	... १,२,३,४,५,६–सोइ ; ७ सो भ्रम अब हित करि मैं जाना
७।६८।८ तव प्रसाद सब संशय गएऊ ।	... १,२,३,४,५–सब ; ६,७–मम
७।६९ सुनि बिहंगपति बानी, सहित बिनय अनुराग ।	१, २, ३, ४, ५, ६–बानी ; ७– ... बानि बर
७।६९ पाइ उमा अति गोप्यमपि, सज्जन करहिं प्रकाश ।	... १,२,३,४,५,६–मपि ; ७–मत
७।६९।८ त्रिष्ना केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ।	... १, ३, ४, ५, ७–बौराहा…दाहा; २,६–बौरहा…दहा
७।७० मृग लोचनी के नैन सर, को अस लाग न जाहि ।	... १,२–मृगलोचनी के नैन ; ३,४, ५,६–मृगलोचनि लोचन ; ७– मृगनयनी के नयन
७।७०।४ चिंता सापिनि को नहिँ खाया ।	१,२,३,४,५–को नहिँ; ७–केहि नहिं ; ६–काहि न; (केहि नहिं)
७।७०।६ सुत बित लोक ईषना तीनी ।	... १,२,३,६–लोक ; ४,७–नारि ; ५–सोक…ईषंना
७।७०।७ यह सब माया कर परिवारा ।	... १,२,३,४,५,७–परिवारा ; ६– परिवारा

७।७१।३	अज बिज्ञान रूप बल धामा।	... १,२,३,४,५–बल ; ६,७–गुन
७।७१।५	अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सबदरसी अनवद्य अजीता।	... १, ३, ४, ५–अदभ्र ; २,६,७–अदर्भ ; (अदंभ) ; १,२,३,४,५,६–सबदरसी ; ७–समदरसी
७।७१।६	निर्मम निराकार निरमोहा।	... १,२,३,४,५–निर्मम ; ६–निर्मल; ७–निरमम
७।७२	जथा अनेक बेष धरि, नृत्य करै नट कोइ। सोइ सोइ भाव देखावै, आपुन होइ न सोइ॥	... १, २, ३, ४, ५,६–अनेक…सोइ सोइ ; ७–अनेकन...जो जो
७।७२।४	जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगेसा।	... १,२,३,४,५,६–दिसिभ्रम ; ७–भ्रम दिसि
७।७३	निर्गुन रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोइ।	... १,२,७–जान नहिं ; ३,४,५,६–न जानहिं
७।७४	ब्याधि नास हित जननी, गनत न सो सिसु पीर।	... ३,४,५,६–गनत ; १,२ ७–गनइ
७।७४	तुलसिदास ऐसे प्रभुहि, कस न भजहु भ्रम त्यागि।	... १, २, ३, ४, ५,७–भजहु ; ६–भजसि
७।७५	लरिकाइ जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।	... ①,२–लरिकाइँ ; ३,४,५,६,७–लरिकाई
७।७५	एक बार अति सैसव, चरित किए रघुबीर।	... ①,२,३–अति सैसव ; ६–अतिसै सब ; ४,५–अतिसय सब ; ७–अतिशय सुखद
७।७५।१	राम चरित सेवक सुखदायक।	... १,२,३,४,५,७–सेवक ; ६–सेवत
७।७६	उर आयत भ्राजत बिबिधि, बाल बिभूषन चीर।	... १,२,३,४,५,७–चीर ; ६–बीर
७।७६।९	बरनत मोहि होति अति भीड़ा।	... १ २,३,४,५–मोहि होति; ६,७–चरित होत मोहिं

७।७८ राकापति षोडस उअहिँ, तारागन समुदाइ।	... १, २, ३, ४, ५, ६–उअहिँ; ७–उगहिँ
७।७८।१ अैसेहिँ हरि बिनु भजन खगेसा।	... ①,२,३,४–हरि बिनु; ५,६,७–बिनु हरि
७।७८।८ तहँ भुज हरि देखौं निज पासा।	१,२,३,४,५–भुज हरि; ६,७–हरि भुज
७।७९ ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं, चितएउँ पाछ उड़ात।	१,२,३,४,५,६–चितएउँ; ७–चितवत
७।७६ सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि।	... १,३,४,५,६–जहाँ लगे गति; ... २–जहाँ लागि; ७–जहँ लगि गति रहि
७।८० एक एक ब्रह्मांड महुँ, रहौं बरष सत एक।	... ३,५,६–रहौं; ४–रह्यौं; १,२–रहों; ७–रहे
७।८०।४ सब प्रपंच तहँ आनै आना।	. १,२,३–आनै; ४,५,७–आनइँ; ६–आनहि
७।८०।५ देखेउँ जिनस अनेक अनूपा।	... १, २, ३, ४, ५,६–जिनस; ७–जिनिस
७।८०।६ अवधपुरी प्रति भुवन निनारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी।	... १,२,३,६–निनारी··सरऊ; ४,५,७–निहारी...सरजू
७।८०।७ दसरथ कौसल्या सुनु ताता।	... १,२,३,४,५,६–सुनु ताता; ७–कौसल्यादिक माता; (सुनु माता)
७।८०।८ देखौं बाल बिनोद अपारा।	... १, २, ३, ४, ५, ७–अपारा; ६–उदारा
७।८१ भिन्न भिन्नु मैं दीख सबु, अति बिचित्र हरि जान।	... १,२,३,४,५,७–मैं दीख सब; ६–सब दीख मैं

७।८१ सोइ सिसुपन सोइ सोभा, सोइ क्रिपाल रघुबीर। भुवन भुवन देखत फिरौं, प्रेरित मोह समीर ॥ ...	१,२,३,४,५,६–सोइ ; ७–सो ; १, २, ३, ४, ५,७–समीर ; ६–सरीर
७।८१।४ देखौं जन्म महोत्सव जाई। ...	१,२,३,५–देखौं ; ४,७–देखउँ, ६–देखेउँ
७।८३ सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निज दास। ...	१,२,३,४,५,६–मम बानी ; ७–मम बैन बर
७।८३।२ आसु देउँ सब संसय नाहीं। ...	१,२,३,४,५,७–सब ; ६–तव
७।८३।६ भगति हीन गुन सब सुख ऐसे।...	१,२,३–सब सुख ऐसे ; ७–सुख सब कैसे ; ४,५,६–सब सुख कैसे
७।८४ जेहि खोजत जोगीस मुनि, प्रभु प्रसाद कोउ पाव। ...	१,२,३,४,५,६–जेहिं ; ७–जो
७।८५।३ मम माया संभव संसारा। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–संसारा ; ६–परिवारा
७।८५।६ तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी।	१,२,३,४,५,६–पुनि ; ७–अरु
७।८५।७ जेहिं गति मोरि न दूसरि आसा।	१,३,४,५,७–जेहि गति मोरि न; २,६–भगति मोरि नहिं
७।८५।८ सभ जीवहु सम प्रिय मोहि सोई।	१,२–सभ जीवहु ; ३,६,७–सब जीवहु ; ४,५–सब जीवन
७।८६।५ जद्यपि सो सब भाँति अयाना।	१,२,३,५–अयाना ; ७–अजाना; ६–सयाना
७।८६।७ अखिल बिस्व यह मोर उपाया। ...	१,२,३,४,५,७–उपाया ; ६–मम उपजाया
७।८६।८ भजहि मोहि मन बच अरु काया।	१,७–भजहि ; २,३,४,५–भजइ; ६–भजे
७।८७ पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ। सर्ब भाव ...	१, २, ३, ४, ५, ७–वा…सर्ब ; ६–नर…भक्ति

७।८७।१	सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोही ॥	... १,२–सुमिरेसु भजेसु ; ३,४,५–सुमिरेहु भजेहु ; ७–सुमिरसु भजसु ; ६–सुमिरि स्वरूप
७।८८	जेहि सुख लागि पुरारि, असुभ बेष कृत सिव सुखद ।	... १,२,३,४,५,६–जेहि ; ७–जो
७।८८	सोइ सुख लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ । ते नहिँ गनहिँ खगेस, ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति ।	... १,२,३,४,५,६–सोइ सुख ; ७–सो सुख कर ; १,२,३,४,५ ते नहिँ गनहिँ ; ६–ते नहिं गनैं ; ७–सो नहिं गनै
७।८८।५	बिनु हरि भजन न जाहिँ कलेसा ।	१,२,३,४,५–जाहिँ ; ७–जाहि ; ६–जाइ
७।८९	बिनु गुर होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिराग बिनु । गावहिँ बेद पुरान, सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ।	... १,२,३,४,५,७–कि ... लहिअ ; ६–न...लहहि
७।८९	चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिअ ।	... १,२,३ मरिअ ; ४,५,७–मरिय ; ८–मरै
७।८९।१	बिनु संतोष काम न नसाहीं ।	... १,२,३–काम न ; ४,५,६,७–न काम
७।९०	बिनु बिस्वास भगति नहिँ, तेहि बिनु द्रवहिँ न रामु । राम कृपा बिनु सपनेहु, जीव न लह बिश्रामु ।	... १,२,३,४,५,७–न रामु ; ६–कि राम ; १,२,३,४,५–जीव न लह ; ... ७–जिव कि लहै ; ६–मन न लहहि
७।९०	भजहु राम रघुबीर, करुनाकर सुंदर सुखद ।	... १, २, ३, ४, ५,७–रघुबीर ; ६–रघुधीर
७।९०।१	निज मति सरिस नाथ मैं गाई । ...खगराई ।	... १,२,३,४,५,७–गाई···खगराई ; ६–गाया···खगराया

७।९०।२	कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेखी। ...देखी।	१,२,३,४,५,७–बिसेखी...देखी; ६–बिसेखा...देखा
७।९१	ससि सत कोटि सुसीतल, समन सकल भव त्रास।	... १,२,३,४,५,७–सुसीतल; ६–सो सीतल
७।९१।२	तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघ पूग नसावन।	... १,२,३,४,५,६–सम; ७–सत; १,२–पूग; ३,४,५,६,७–पुंज
७।९१।६	बिस्नु कोटि सम पालन कर्ता।	... १,२,३,४,६–सम; ७–सत
७।९१।८	भार धरन सत कोटि अहीसा।	... ३,४,५,६,७–भार; १,२–धरा
७।९२	निरुपम न उपमा आन, राम समान रामु निगम कहै।	... १,२,३,४,५,७–राम निगम; ६–निगमागम
७।९२	प्रभु भाव गाहक अति कृपाल, सप्रेम सुनि सुख मानहीं।	१,२,३,४,५,७–सुनि; ६–ते
७।९२	संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहि सुनायउँ सोइ।	... १,२,३,४,५,७–सुनाएउँ; ६–सुनायो
७।९२	तजि ममता मदमान भजिअ, सदा सीता रवन।	... १,२,३–सीता रवन; ४,५,७–सीता रमन; ६–सीता पतिहि
७।९२।२	श्री रघुपति प्रतापु उर आना।	... १,२,३,७–रघुपति प्रताप; ६–रघुबर प्रताप; ४, ५–रघुपति प्रभाव
७।९२।३	ब्रह्म अनादि मनुज करि माना।	... १,२,३,४,५,६–माना; ७–जाना
७।९३	ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि, सीस नाइ कर जोरि।	... १,२,३,४,५–प्रसंसि; ७–प्रसंसे; ६–प्रसंसेउ
७।९३	प्रभु अपने अबिबेक ते, बूझौं स्वामी तोहि।	... १,२,३,४,५,७–बूझौं; ६–पूछौं
७।९३।१	मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई। सोउ मोरे मन संसय अहई।	... १,२,३,४,५–मुधा...सोउ; ६,७–मृषा ... सो
७।९४	प्रभु तव आश्रम आए, मोर मोह भ्रम भाग।	... १,२,३–आए; ५–आएँ; ४, ६–आएउँ; ७–आयउँ

७।६४।१ बोलेउ उमा परम अनुरागा। ... १,२,३–परम ; ४,५,६,७–सहित

७।६४।४ सब निज कथा कहौं मैं गाई। ... १,२,३, ४,५,६, ७–सब ... कहौं मैं ; (अब...सुनावौं)

७।६४।५ जप तप मख सम दम ब्रत दाना। . १,२,३,४,५,७–मख सम दम ब्रत ; ६–ब्रत मख सम दम

७।६५ पाट कीट तें होइ, तेहि तें पाटंबर रुचिर। ... १,२,३,४,५–तेहि तें;६,७–ता ते

७।६५।२ जो तनु पाइ भजै रघुबीरा। ... १,२,७–भजै ; ३–भजिअ ; ४,५,६–भजिय

७।६७ कलि मल ग्रसे धर्म सब, लुप्त भए सदग्रंथ। ... १,२,३,४,५,६–ग्रसे ; ७–ग्रासे ; १,२,३,४–लुप्त ; ७–लुपुत; ५–गुप्त

७।६७।१ श्रुति बिरोध रत सब नरनारी। ... १,२,३,४,५–सब ; ६,७–ब्रत

७।६७।२ द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। ... १, २, ३, ५, ६–बेचक ; ४,७–बंचक

७।६७।६ जो कह झूठ मसखरी जाना। .. १,२,३,४,५,७–कह ; ६–करि

७।६७।७ कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी।.. १, ३, ४, ५–ग्यानी सो बिरागी; २–ग्यान बैरागी ; ६, ७–ग्यानी बैरागी

७।६८ तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, पूजित कलिजुग माहिँ। ... १,२,३,४,५,७–जोगी ; ६–तापस १,२–पूजिति ; ३–पुज्य ते; ४,५,६–पूज्य ते ; ७–पूजित ;

७।६८ जे अपकारी चार, तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ। ... १,२,३,४,५–मान्य तेइ ; ६–मान्य बहु ; ७–मान्यता

७।६८।३ देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी। ... १,२,३,४,५–देव बिप्र श्रुति ; ७–देव बिप्र अब ; ६–बेद बिप्र गुरु

७।९८।६ गुरु सिष बधिर अंध का लेखा। ... १, ३, ४, ५, ७—का ; २—क ; ६—कर

७।९८।८ उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं। ... १, २, ३, ४, ५—धर्म ; ७—धरम ; ६-ज्ञान

७।९९ कौड़ी लागि मोह बस, करहिँ बिप्र गुर घात। ... १—मोह ; २,३,४,५,७—लोभ ; ६—कारन लोभ

७।९९।३ आपु गए अरु तिन्हहूँ घालहिँ, जे कहुँ सत मारग प्रतिपालहिँ। ... १, २, ३, ४, ५, ७—तिन्हहूँ ; ६—औरनि। १,२,३,४,५—जे कहुँ ; ६—जो कहुँ ; ७—जे कछु। १,२—सन्मारग ; ३, ४, ५, ६, ७—सत मारग

७।९९।६ नारि मुई गृह संपति नासी। ... १,२,३,४,५,७—गृह ; ६—घर

७।९९।९ सूद्र करहिँ जप तप ब्रत नाना। ... १,२,३,५—नाना ; ४,६,७—दाना

७।१०० भए बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग। १,२,३,४,५—कलि ; ७—कली ; ६—सकल ; (कलिहि)

७।१००।१ विषया हरि लीन्हि रही बिरती। ... १,३,४,७—हरि लीन्हि रही ; ६—हरि लीन रही ; २—हरि लीन्हि न रही

७।१००।३ कुलवंति निकारहिँ नारि सती। ... १,२,७—कुलवंति ; ३,४,५,६—कुलवंत

७।१००।४ सुत मानहिँ मातु पिता तब लौं। अबलानन दीख नहीँ जब लौं। ... १—मानहिँ ; २, ३, ४, ५, ६,७—मानहिँ ; १, २, ३,४, ५,७—अबलानन दीख नहीँ ; ६—अबला नहिं डीठ परी

७।१००।७ नहिं मान पुरान न बेदहि जो। ... १,२,३,४,५,७—पुरान न ; ६—पुराननि

७।१००।९ गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी। ... १,२,३,५,७—दूषक; ४,६—दूषन

७।१०१ देव न बरषहिं धरनि पर, बए न जामहिं धान।	... १, ७–बरषहिं; २, ३, ४, ५–बरखै धरनी। १,२,४,५,७–बए; ३–बये; ६–बोए
७।१०२ सुनु ब्यालारि काळकलि, मल अवगुन आगार। गुनौ बहुत कलिजुगकर, बिनु प्रयास निस्तार॥	... १,२,३,४,५–काल कलि; ६,७–कराल कलि; १,२,३,४,५,७–बहुत कलिजुग कर; ६–बड़ तो कलिकाल के
७।१०३ कृत जुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग। जो गति होइ सो कलि हरि, नाम तें पावहिं लोग।	... १, ३, ४, ५, ६–द्वापर; २,७–द्वापरहु; (द्वापर सभै)। १,२,३,४,५,७–हरि; ६–बिषे
७।१०२।८ कलि कर एक पुनीत प्रतापा।	... १,२,३,४,५,७,–कर; ६–जुग
७।१०३।१ नित जुग धर्म होहिं सब केरे।	... १, २, ४,५–नित; ३,६,७–कृत
७।१०३।५ कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा।	... १, १, ३, ४, ५,७-प्रभाव; ६–सुभाउ
७।१०३।७ काल धर्म नहिं ब्यापहि ताही। रघुपति चरन प्रीति अति जाही।	... १,२,३,४,५,७–धर्म ... ताही... अति जाही; ६–कर्म...तेही... रति जेही
७।१०५ गुर नित मोहि प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम।	... १, २, ३, ४, ५, ७–नित मोहि प्रबोध; ६–मोहि नित्य प्रबोध
७।१०५।५ हर कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ।	... १, ३, ५, ७–कहँ; २, ४–कहुँ; ६–को
७।१०५।११ सब कर पद प्रहार नित सहई।	... १,२,३,४,५,७–पद; ६–पग
७।१०५।१२ मारुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई।	... १, २, ३, ४,५,७–उड़ाव...पुनि नृप नयन किरीटन्हि; ६–उड़ाइ ... नृप किरीट पुनि नयनन्हि
७।१०५।१४ खल सन कलह न भल नहिं प्रीती।	१, २, ३, ४, ५,७–न भल नहिं; ६–संग...नहीं भल प्रीती।

७।१०६ एक बार हर मंदिर, ... १, २, ३, ४, ५, ६—मंदिर ; ७—
जपत रहेउँ शिव नाम। मंदिरहु; (मंदिरहि)

७।१०६ सो दयाल नहिँ कहेउ कछु, ... १,२,३,४,५,७—सो; ६—गुरु
उर न रोष लवलेस।

७।१०६।२ अति कृपाल चित सम्यक बोधा। ... १,२,३,४,५,७—चित ; ६—उर ;
(गुरु)

७।१०६।७ सर्प होहि खल मल मति व्यापी। ... १,२,३,४,५—होहि ; ७—होहिं ;
६—होहु

७।१०७ बिनय करत गदगद स्वर, .. १,२,३,४—स्वर ; ५,६,७—गिरा
समुझि घोर गति मोरि।

७।१०७।७ चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। .. १,२,३,४,५—भ्रू सुनेत्रं ; ७—भ्रू
त्रिनेत्रं ; ६—शुभ्र नेत्रं

७।१०८ जौं प्रसन्न प्रभु मो पर, ... १,२,३,४,५, ६—प्रभु मो पर ;
नाथ दीन पर नेहु। ७—अति मोहि पर; १,२,३,४,५—
निज पद भगति देइ प्रभु, ... भगति देइ प्रभु ; ६—पद्म भक्ति
पुनि दूसर बर देहु॥ दऊ ; ७—भगती देइ प्रभु

७ १०८ तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु, ... १,२,३,४,५,६—तेहि ; ७—ता ;
कृपा सिंधु भगवान। १, २, ३, ४, ५,७—करिय ; ६—
कीजिए

७।१०८ साप अनुग्रह होइ जेहि, ... १,२,३,४,५,७—जेहि ; ६—ज्यौं
नाथ थोरेही काल।

७।१०८।५ ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी। ... १, २, ३, ४, ५, ६—मोहि ;
७—मम

७।१०८।६ मोर साप द्विज व्यर्थ न जाइहि, ... १,२,३,४,५,७—जाइहि ; ६—
जन्म सहस अवस्य यह पाइहि। जाई ; १,२—अवस्य ; ३,४,५,
६,७—अवशि

७।१०८।८ सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना। .. १,२,३—प्रवाना; ४, ५, ६, ७—
प्रमाना

७।१०८।११	सुनु मम बचन सत्य अब भाई। हरि तोषन ब्रत द्विज सेवकाई।	... १, २, ३, ४,५,७–अब...तोषन ; ६–अति...तोषण
७।१०९	सुनि सिव बचन हरषि गुर, एवमस्तु इति भाषि।	... १,२,३,४,५,७–इति ; ६–तब
७।१०६	प्रेरित काल बिंधि गिरि, जाइ भएउ मैं ब्याल। पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गए कछु काल॥	... १,२,३,४,५–बिधि ; ७–सुबिंधि ; ६–सुबिंध्य ; १ २,३,४,५,६–सो; ७–सोउ
७।१०९	सिव राखी श्रुति नीति, अरु मैं नहिं पावा क्लेस।	... १, २, ३, ४, ५,७–सिव राखी ; ६–सिव असीस
७।१०६।३	चर्म देह द्विज कै मैं पाई।	... १, २, ३, ५–चर्म ; ७–चरम ; ४,६–चर्म
७।१०६।४	खेलौं तहूँ बालकन्ह लीला।	१,३,४,५–तहूँ ; २–तह ; ६,७–तहाँ
७।१०६।११	कहहिं सुनौ हरषित खगनाहा।	.. १, २, ३, ४, ५,७–हरषित; ६–हरषों
७।१०६।१३	छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी।	... १,२,३,७–ईषना ; ४,५–ईषंना ; ६–इषंना
७।११०	गुर के बचन सुरति करि, राम चरन मन लाग।	... १,२,३,४,५,७–चरन मन लाग ; ६–चरित अनुराग
७।११०	तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्बग्य सुजान। सगुन ब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान।	... १,२,३,४,५,६–कृपानिधि ; ७–कृपायतन ; १, २, ३, ४, ५–अवराधन ; ७–अवराधना ; ६–आराधना
७।११०।१	कहे कछुक सादर खगनाथा।	... १,२,३,४,५,७–कहे ; ६–कह्यो
७।११०।६	मैं तैं तोहि ताहि नहिं भेदा।	... १,२,३,४,५,७ तैं; ६–तइ
७।११०।७	निर्गुन मत मम हृदय न आवा।	... १,२,३,४,५,६–मम ; ७–मोहि
७।११०।१०	सोइ उपदेस कहहु करि दाया।	.... १,२,३,४,५,७–कहहु ; ६–करहु

७।११०।१२ लंडि सगुन मत अगुन निरूपा।	... १,२,३,४,५,७—अगुन निरूपा ; ६—निर्गुन रूपा
७।११०।१५ सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किए। उपज क्रोध ज्ञानिन्ह के हिए।	... १,६—किए ; ५—किये ; २,३,४—कीये...हीये ७—किबहु...हियहु ; १, २, ३, ४, ५,७—उपज; ६—उपजै; १,२,३—ज्ञानिन्ह ; ४,५, ६,७—ज्ञानिहुँ
७।११०।१६ अति संघरषन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन ते होई।	... १,२,३,४,५—जौं कर ; ७—ओ कर ; ६—ओ करै; १,२,३,४, ५, ७—चंदन ; ६—चंदनहु
७।१११ क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान।	... १,२,३,४,५,७—क्रोध कि द्वैत-बुद्धि बिनु ; ६—द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि
७।१११।२ परद्रोही की होहिं निसंका।	... १,२,३—को होहिं ; ४,५—की होइ ; ६,७—कि होइ
७।१११।५ भव कि परहि परमात्मा विंदक। सुखी की होहिं कबहुँ हरिनिंदक।	... १,२,३,४,५—परमात्मा ; ६, ७—परमातम; १,२—की...हरि ; ३, ४,५,७—कि ..हरि; ६—कि...पर
७।१११।१० अघ कि पिसुनता सम कछु आना।	१,३,४,५—पिसुनता सम ; २,६, ७—बिना तामस
७।११२ निज प्रभु मय देखहिं जगत, केहि सन करहिं बिरोध।	... १,२,३,४,५,६—केहि सन ; ७—का सन
७।११२।३ मन बच क्रम मोहिं निज जन जाना।	१,२,३,४,५,७—बच क्रम ; ६—क्रम बचन
७।११२।४ रिषि मम महत सीलता देखी।	... १,३,४,५—महत ; २,६,७—सहन
७।११२।६ हरषित राम मंत्र तब दीन्हा।	... १,२,३,४,५,७—तब ; ६—मोहि
७।११२।१६ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे।	... १,२,३,४,५,७—बसिहि ; ६—बसहु

७।११३ जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि,	... १,२,३,४,५,६–जेहि;७–जे;(जो)
सुमिरत श्री भगवंत ।	१,२,३,४,५–बसब पुनि ; ६–बसहु गे; ७–बसहु पुनि
७।११३।४ हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीँ ।	... १,२,३,४,५,६–हरि ; ७–प्रभु
७।११५ न तु कामी बिषया बस,	... १,२,३,४,५–बिषया बस ; ७–
बिमुख जो पद रघुबीर ।	... बिषया बिवस ; ६–जो विषय बस
७।११५ सोउ मुनि ज्ञान निधान,	... १,२,३,४,५,७–सोउ...बिबस ;
मृग नयनी बिधु मुख निरषि ।	६–सो...बिकल
बिबस होइ हरिजान,	
नारि बिस्व माया प्रगट ।	
७।११५।२ पन्नगारि यह रीति अनूपा ।	... १,२,३,४,५,६–रीति ; ७–नीति
७।११६ जो जानै रघुपति क्रिपा,	... १,२,३,४,५–जो जानै ; ६,७–
सपनेहु मोह न होइ ।	... जाने ते
७।११६ औरो ज्ञान भगति कर,	... १,२,३,४, ५–सुप्रबीन ; ६–सो
भेद सुनहु सुप्रबीन ।	प्रबीन; ७-परबीन; १,२,३,४,५–
जो सुनि होइ राम पद,	... अबिछीन ; ६,७–अवछीन
प्रीति सदा अबिछीन ।	
७।११६।१ सुनहु तात यह अकथ कहानी।	... १,२,३,४,५,६,७–तात ; (नाथ)
समुझत बनै न जाइ बखानी ।	१,२,३,४,५,६–जाइ ; ७–जात
७।११६।९ सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ।	... १,२,३,४,५,७–सुहाई; ६–लवाई
७।११६।११ भाव बछ सिसु पाइ पेन्हाई ।	... १,२,३,४,५,७–पाइ : ६–धेनु
७।११६।१५ दम अधार रजु सत्य सुबानी ।	... १, २, ३, ४, ५, ७ अधार ; ६–सुधार
७।११६।१६ बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ।	.. १,२,३,४,५,७–सुभग; ६–सुपरम
७।११७ तब बिज्ञान रूपिनी,	... १, २, ३, ४, ५–रूपिनी ; ६–स्वरूपणी ; ७–निरूपनी
बुद्धि बिसद घृत पाइ ।	
७।११७ जातहि जासु समीप,	... १,३,४,५,६–जासु ; २,७–तासु
जरहिँ मदादिक सलभ सब ।	

७।११७।२	तब भव मूल भेद भ्रम नासा। ...	१,२,३,४,५,७—भेद भ्रम ; ६—देह भ्रम
७।११७।४	तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा। ...	१, २, ३, ४, ५,६—उँजियारा··· निरुआरा ; ७—उजियारी··· निरुआरी
७।११७।५	छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। ...	१,२,३,४,५,७—सोई ; ६—कोई
७।११७।८	कल बल छल करि जाहिँ समीपा।	१,२,३—जाहिँ ; ४,५,६,७—जाइ
७।११७।९	होइ बुद्धि जौं परम सयानी। ... जानी। ...	१,२,३,४,५,७—सयानी···जानी; ६—सयाने जाने
७।११७।१०	जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिँ बाधी।...	१,२,३,४,५,७—बिघ्न बुद्धि ; ६—बुद्धि बिघ्न
७।११७।१२	ते हठि देहिँ कपाट उघारी। ...	१,२,३,४,५,७—ते ; ६—तेहि
७।११७।१६	तेहि बिधि दीप को बार बहोरी। ...	१,२,३,४,५,७—बार ; ६—करै
७।११८	तब फिरि जीव बिबिधि बिधि, पावै संसृतिक्लेस। ...	१,२,३,४,५,७—बिबिधि बिधि ; ... ६—सुबिबिध बिधि
७।११८	कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन अनेक। होइ घुनाच्छर न्याय जौँ, पुनि प्रत्यूह अनेक। ...	१,२,५—साधत ; ३, ४, ६, ७—साधन ; १, २, ३, ४,५,७—जौं ; ६—ज्यौं
७।११८।१	ग्यान पंथ कृपान कै धारा। ..	१,२,३,४,५,६—पंथ ; ७—क पंथ
७।११८।४	राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं।...	१, २, ४, ५, ६—भजन ; ३—भजन ; ७—भगति
७।११९।५	प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७—प्रबल ; ६—अचल
७।११९।१२	सुगम उपाय पाइबे केरे।···भट भेरे।	१,२,३,४,५,७—केरे···भेरे ; ६—केरो···भेरो
७।११९।१९	अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। ...	१,२,३,४,५,६—जोइ ; ७—जेइ ; (जो)

७।१२० कथा सुधा मथि काढ़हिं, भगति मधुरता जाहि।	... १, २, ३, ४, ५, ७—काढ़हिं ६—काढ़िये
७।१२०।६ कहहु कवन अघ परम कराला।	... १,२,३,४,५,७—कराला ; ६—कृपाला
७।१२०।१० ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी।	... १,२,५—सुभ ; ३,४,६,७—सुख
७।१२०।११ होहिं बिषय रत मंद मंद तर।	... १,२,३,४,५,७—होहिं ; ६—होइ
७।१२०।१२ कागु किरिच बदले ते लेही।	... १, ३, ४, ५, ७—ते ; २—जे ; ६—जिमि
७।१२०।१३ संत मिलन सम सुख जग नाहीं।	... १,२,३,४,५,६—जग ; ७—कछु
७।१२०।१६ भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला।	... १,२,३,४,५—भूर्ज तरू...निति ; ६,७—भूरज तरू ; ३,६—नित ; ७—निज
७।१२०।२० दुष्ट उदय जग आरत हेतू।	... १,२,३,५,७—उदय; ४,६—हृदय; १, २,७—अनरथ ; ६—आरत ; ३,४,५—आरति
७।१२०।२६ मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत।	... १,२,३,४,५,७—गत ; ६—मत
७।१२०।२८ जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।	.. १,२,३,४,५,७—जिन्ह ते ; ६—जेहि ते ; (जिहि ते)
७।१२०।२९ तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।	... १, २, ३, ४, ५—तिन्ह ते ; ६—तेहि ते ; ७—जेहि ते
७।१२०।३५ अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।	... १, २, ३, ४, ५—डमरुआ ; ७—डहरुआ; ६—डकरुआ; १,२,३—नेहरुआ ; ४,५,६,७—नहरुआ
७।१२१ नेम धर्म आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान। भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं, रोग जाहिं हरिजान।	.. १,२,३,४,५,६—ज्ञान ; ७—जोग; १, २, ३ ४, ५—कोटिन्ह ; ६—कोटिक ; ७—कोटिहु

७।१२१।१	एहि बिधि सकल जीव जग रोगी।...	१,२,३,४,५,७—जग ; ६—जड़
७।१२१।२	मानस रोग कछुक मैं गाए। हहिं सब के लखि बिरलेन्ह पाए।	१,२,३,४,५,६—गाए; ७-गाई··· पाई; १, २, ३, ४, ५-हहिं ; ६—होहिं; ७-है; (होहिं)
७।१२१।६	सद् गुर बैद बचन बिस्वासा। ...	१,२,३,४,५,६—बैद ; ७—बेद
७।१२१।७	अनूपान श्रद्धा मतिपूरी। ...	१,२,३,४,५,७—मतिपूरी ; ६—अति रूरी
७।१२१।८	एहि बिधि भलेहि सो रोग नसाहीं।	१,३—भलेहि सो रोग ; ४,५,६—भलेहीं रोग; ७—भलेहि कुरोग; २—भलेहिं रोग
७।१२१।१८	अंधकारु बरु रबिहि नसावै। ...	१, २, ३, ४, ५,७—रबिहि ; ६—ससिहि
७।१२२	बिनु हरि भजन न भव तरिअ, येह सिद्धांत अपेल। ...	१,२,३—तरिअ ; ४,५,७—तरिय ; ६—तरहिं
७।१२२।३	मोहि से सठ पर ममता जाही। ..	१,२,३,४,५,६—मोहि से ; ७—मोहिते ; (मोते)
७।१२३	चरित सिंधु रघुनायक, थाह कि पावै कोई ...	१, २, ३, ४, ५—रघुनायक ; ७—रघुनाथ कर ; ६—रघुबीर के
७।१२३।१	सुमिरि राम के गुन गन नाना। ...	१,२ ३,४,५,६—के ; ७—कर
७।१२४	जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल। सो कृपाल मोहि तो पर, सदा रहौ अनुकूल॥ ...	१,२,३,४,५, ७—घोर; ६—ताप; १,२—मोहि पर सदा रहो राम ; ३,४,५,६—मोहि तोहि पर सदा रहहु ; ७—मम तुम्ह पर सदा रहहु
७।१२४।३	मोह जलधि बोहित तुम्ह भए। ..दए	१,२,३,४,५-भए···दए ; ६,७—भयेऊ···दयेऊ
७।१२४।४	मो पहिं होइ न प्रति उपकारा। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७—पहिं ; (पर)

७।१२४।७ कहा कबिन्ह परि कहै न जाना। ... १,२,३-परि ; ४, ५, ७-पै ; ६-पइ

७।१२४।८ पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता। ... १,२,७-संत सुपुनीता ; ३,४,५, ६-सुसंत पुनीता

७।१२६।४ सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा। ... १,२,६-सोइ···सोइ ; ३,४,५, ७-सो···सो

७।१२६।५ धन्य देस सो जहँ सुरसरी। .. १,२,३,४,५-देस सो जहँ ; ६, ७-सो देस जहाँ, (सुदेस जहाँ)

७।१२६।७ धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी। .. १, २, ३, ४, ५, ७-सोइ ; २-जाकी ; ६-सो

७।१२७।४ यह न कहिय सठही हठ सीलहि।... १,२,३,४,५,७-कहिय सठही ; ६-कहीजे सठ

७।१२७।६ राम कथा के तेइ अधिकारी। ... १,२-तेइ ; ३,४,५,६,७-ते

७।१२८ राम चरन रति जो चह,
अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सो येहि कथा,
करौ श्रवन पुट पान। ... १,२,३,४-चह ; ६, ७-चहै ; ५-चहँ ; १,२,३,५-करौ, ४, ७-करै ; ६-करहि

७।१२८।१ कलि मल समनि मनोमल हरनी।... १, २, ३, ४, ५, ७-समनि ; ६-हरनि

७।१२८।३ रघुपति भगति केर पंथाना। ... १,२,३,४,५,६-पंथाना ; ७-पथ नाना

७।१२८।४ अति हरिकृपा जाहि पर होई। ... १, २, ३, ४, ५, ७-जाहि ; ६-जासु

७।१२८।५ मन कामना सिद्धि नर पावा। ······गावा ··· १,२,३,४,५,६-पावा····गावा ; ७-पावै··गावै

७।१२८।७ सुनि सब कथा हृदय अति भाई। ... १,२,३,४,५,७-सब ; ६-सुभ

७।१२९।८ ताहि भजिअ मन तजि कुटिलाई ।	...	१,२—भजिअ ; ३, ६—भजहि; ४,५,७—भजिय
७।१३० दारुन अविद्या पंच जनित, बिकार श्री रघुबर हरे ।	...	१,२,३,४,५—श्री रघुबर;६,७—श्री रघुपति
७।१३० तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ।	...	१,२,३,५,७—रघुनाथ निरंतर ६—रघुवंश निरंतरहिं

—

रामचरितमानस की कुछ अर्धालियाँ जो किन्हीं प्रामाणिक प्रतियों में नहीं मिलतीं उनका संकेत इस प्रकार है—

बाल कांड

१।७७।४ सुनत रिषिन के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२३६।६ चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जरठ नर नारी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२६१।७ रही भुअन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२६३।६ सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराय न जाई।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२८१।७ देव एक गुन धनुष हमारे। नव गुन परम पुनीत तुम्हारे।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।३२४।२ जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी।

राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

अयोध्या कांड

२।१।२ सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजस सुनि अतिहि उछाहू।

भा० २,३,४,५,६,७–में है ; ८–में नहीं है

२।४।३ प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू। रामहि राय देहु जुबराजू।

भा० २,३,४,५,६,७–में है ; ८–में नहीं है

२।७।६ बार बार गनपतिहि निहोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा।

के आगे ७–में है ; भा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।१६।४ कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। फिरि न नवइ जिमि उकठि कुकाठू।
मा० २,३,६–में है; ७–में नहीं है

२।२८।५ गयेउ सहमि नहिँ कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।
मा० २,३,४,५,८–में है; ६,७–में नहीं है

२।५६।६ बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी।
मा० २,३,४,५,७,८–में है; ६-में नहीं है

२।६३।७ अस कहि सिय रघुपति पद लागी। बोली बचन प्रेम रस पागी।
के आगे ७–में है; मा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।८७।४ सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई।
मा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।१७२।७ तीनि काल तिभुवन जगमाहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं।
के आगे ७–में है; २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।१८३।१ ... ... । राम सनेह सुधा जनु पागे।
लोग बियोग बिषम बिष दागे। ... ...
मा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।१८४।७ केहि न भाव सिय लछिमन रामू। सब कहँ प्रिय हिय सदा सकामू।
के आगे ७–में है; मा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।२०१।६ निंदहिँ आपु सराहि निषादहिं। को कहि सकइ बिमोह बिषादहिं।
मा० २,३,४,५,६,८–में है; ७–में नहीं है

२।२१७।२ कह गुर बादि छोभु छलु छाँड़ू। इहाँ कपट करि होइअ भाँड़ू।
मा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२२४।२ भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिँ राम मिटिहि दुख दाहू।
मा० ३,४,५,७,८–में है; २,६–में नहीं है

२।२५५।२ ... ... । अरघ तजहिं बुध सरबसु जाता।
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिय लषन सीय रघुराई।
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। ... ...।
मा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२७८।५ ... ... । जनु महि करति जनक पहुनाई।

तब सब लोग नहाइ नहाई। ... ...।

भा० १,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।२९०।६ ... ... । दिपि धरि धीर जनक पहिँ आए।

राम बचन गुर नृपहिं सुनाए। ... ...।

भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।२९५।१ गए जनकु रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रविकुल दीपा।

भा० ३,४,५,७,८-में है; २,६-में नहीं है

२।३२४।७ भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती।

भा० ३,४,५,७,८-में है; २,६-में नहीं है

आरण्य कांड

[इस कांड में काशिराज की प्रति में बहुत से ऐसे अंश हैं जो अन्य किसी प्रामाणिक प्रति में नहीं मिलते। उनके लिये देखिए नागरीप्रचारिणी पत्रिका सं० १९९८ अंक ३ पृ० २३३—२४०]

३।४० दीप सिखा सम जुवति तन मन जनि होसि पतंग।

भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग॥

भा० १, २, ३, ४,५,६-में है; ७-में नहीं है

किष्किंधा कांड

४।२५।१ सब मिलि कहहिँ परसपर बाता। बिनु सुधि लए करब का भ्राता।

भा० १,२,३,४,५,६-में है; ७-में नहीं है

४।२५।६ पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीँ। मरन भएउ कछु संसय नाहीँ।

अंगद बचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिँ नयन बह नीरा।

छन एक सोच मगन होइ रहे। पुनि अस बचन कहत सब भए।

हम सीता कै सुधि लीन्हे बिना। नहिँ जैहैँ जुबराज प्रबीना।

भा० १,२,३,४,५,६-में है; ७-में नहीं है

४।२६।३ आजु सबहि कहुँ भच्छन करऊँ। दिन बहु चलेउ अहार बिनु मरऊँ।
कबहुँ न मिलै भर उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिँ बारा।
भा० १,२,३,४,५,६–में है, ७–में नहीं है

४।२६।६ कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंत मन सोच बिसेखी।
भा० १,२,३,४,५,६–में है; ७–में नहीं है

लंका कांड

लव निमेष परवानु जुग बरष कलप सर चंड।
भजसि न मन तेहि रामकहुँ कालु जासु कोदंड।
भा० १,२,५,६–में यह दोहा श्लोक के पहले है ; ३,४,७–में श्लोक के बाद है

६।१५ अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।
भा० १,२,३,४,५,७–में है; ६–में नहीं है

६।३४ कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिँ टरै न कपि चरन पुनि बैठहिँ सिर नाइ।
भा० १,२,३,४,५,७–में है ; ६–में नहीं है

६।३८।७ हरषित राम चरन सिर नावहिँ। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिँ।
भा० १,२,३,४,५–में है ; ६,७–में नहीं है

६।७०।७ परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निसाचर।
भा० १,२,३,४,५–में है ; ६,७–में नहीं है

६।७४।६ मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई।
भा० १,२,३,४,५–में है ; ६,७–में नहीं है

६।७५।१ जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

६।८८।४ चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गति कारी।
भाग १,२,३,४,५–में है ; ६,७–में नहीं है

६।११९ जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम ।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम ।
भा० १,२,३,४,५,६–में है ; ७–में नहीं है

उत्तर कांड

७।२६।५ काल कराल ब्याल खग राजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ।
लोभ मोह मृग जूथ किरातहि । मनसिज करि हरिजन सुखदातहि ।
भा० १,२,३,४,५,७–में है ; ६–में नहीं है

७।१२५ गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिँ वेद पुरान ।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

रामचरितमानस के पाठभेद का मूल उद्गम या अंतिम स्वरूप, आधारभूत मानी गई इन्हीं दस पोथियों[1] को लेकर चला है। सातों कांडों के पाठ-भेद के संकेत इस प्रकार समाप्त होते हैं। पर इन कुछ निर्देश किए गए स्थलों से पाठ-भेद का अध्ययन समाप्त नहीं हो जाता, कारण कि जिन स्थलों में सभी (आधारभूत) पोथियों का पाठैक्य है वे इस सूची में नहीं आ सके हैं और वे मारके के पाठ हो सकते हैं। ये तो रामचरितमानस के परखने के कुछ चावल मात्र हैं। शुद्ध रामचरितमानस का नमूना तो एक यत्नपूर्वक—बिंदु विसर्ग तक—संशोधित प्रति ही हो सकती है। ऐसी संशोधित प्रतियों का निकलना अब अत्यंत आवश्यक है और इसके लिये संगठित प्रयत्न होना चाहिए। रामचरितमानस हिंदी पढ़ी लिखी जनता का नैतिक भोजन बन गया है। प्रति वर्ष—नई फसल की नाईं—इसके नवीन शुद्ध, उत्तम पर सुलभ संस्करणों का निकलना बढ़ती हुई जनता की माँग की पूर्ति के लिये नितांत आवश्यक है। जब तक यह नहीं होता हिंदी के हिमायतियों के लिये कलंक की, हिंदी प्रकाशकों के लिये निंदा की और हिंदी जनता के लिये दुर्भाग्य की बात समझनी चाहिए। तब तक श्रावण 'शुक्ला सप्तमी' या 'श्यामा तीज' के दिन चित्र पर माला फूल सजा कर कोई जलसा कर लेना, कुछ रो गा लेना अपनी हृदयहीनता तथा विचारशून्यता के विज्ञापन के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं रखता[2]।

१—देखिए, इस लेख का पृ० ८

२—लेखक ने रामचरितमानस का सर्वांगीण अध्ययन करते हुए चौपाइयों के प्रत्येक चरण और छंद, सोरठा, दोहा की प्रत्येक पंक्ति का एक वर्णानुक्रम-कोश तैयार किया है। हम आशा करते हैं कि अधिकारी प्रकाशक इसके लिये उत्साह दिखाएँगे।

—सं०।

रघुनाथरूपक गीताँ रो

(संपादक—श्री महताबचंद खारैड़, विशारद)

डिंगल-भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें रामचंद्रजी की कथा का बड़ा कवित्व-पूर्ण वर्णन है और यह डिंगल-भाषा का अत्यंत प्रामाणिक रीतिग्रंथ भी है। छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ भी दिया गया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण की लिखी हुई महत्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ-संख्या ३६०, सजिल्द, मूल्य २)।

मोहें जो दड़ो

मो … बहुत प्रसिद्ध
स्थान … के प्राचीन
इतिहास … इस पुस्तक
में है।

(… ० ए०)

हिं … रहस्य
यह पुस … रंभ में
विद्व … ज्ञान'
अध्य …

… लेख,
लिखे … बताये
वर्ष … माम
कर … ार से
नवी … ों का
मूल्य … ीच रह
गई … ष्या के
लिये …